सरस्वती-सिरीज़

स्थायी परामर्शदाता—डा० भगवानदास, पण्डित अमरनाथ झा, भाई परमानंद, डा० प्राणनाथ विद्यालङ्कार, श्री सत्यदेव विद्याल[illegible] द्वारिका-प्रसाद मिश्र, संत निहालसिंह, पं० लक्ष्मणनारायण गर्दे [illegible]र्णानन्द, श्री बाबूराव विष्णुपराड़कर, पण्डित केदारनाथ भट्ट [illegible], श्री पदुमलाल पुन्नालाल बख़्शी, श्री जैनेन्द्र कुमार, बाबू वृन्दावनलाल [illegible], सेठ गोविन्ददास, पण्डित चेत्रेश चटर्जी, डा० ईश्वरीप्रसाद, डा० रमाशंकर त्रिपाठी, डा० परमात्माशरण, डा० वेनीप्रसाद, डा० रामप्रसाद त्रिपाठी, पण्डित रामनारायण मिश्र, श्री संतराम, पण्डित रामचन्द्र शर्मा, श्री महेश-प्रसाद मौलवी फ़ाज़िल, श्री रायकृष्णदास, बाबू गोपालराम गहमरी, श्री उपेन्द्र-नाथ "अश्क", डा० ताराचंद, श्री चन्द्रगुप्त विद्यालङ्कार, डा० गोरखप्रसाद, डा० सत्यप्रकाश वर्मा, श्री अनुकूलचन्द्र मुकर्जी, रायसाहब पण्डित श्रीनारा-यण चतुर्वेदी, रायबहादुर बाबू श्यामसुन्दरदास, पण्डित सुमित्रानन्दन पंत, पं० सूर्यकान्त त्रिपाठी 'निराला', प० नन्ददुलारे वाजपेयी, पं० हज़ारीप्रसाद द्विवेदी, पण्डित मोहनलाल महतो, श्रीमती महादेवी वर्मा, पण्डित अयोध्या-सिंह उपाध्याय 'हरिऔध', डा० पीताम्बरदत्त बड़थ्वाल, डा० धीरेन्द्र वर्मा, पण्डित रामचन्द्र शुक्ल, बाबू रामचन्द्र टंडन, पण्डित केशवप्रसाद मिश्र, बाबू कालिदास कपूर, इत्यादि, इत्यादि।

विश्व-उपन्यास

अभिसारिका

मेडम बोवेरी की अमर लेखनी-द्वारा लिखित
यथार्थवादी साहित्य का एक उत्कृष्ट उदाहरण।

नरोत्तमप्रसाद नागर

यदि आप अभी तक इस सिरीज़ के ग्राहक नहीं बने हैं, तो ग्राहक बनने में शीघ्रता कीजिए; या पुस्तक के पृष्ठभाग पर दी हुई सूची में से अपनी पसंद की पुस्तकें चुनकर अपने स्थानीय पुस्तक-एजेंट से लीजिए।

सरस्वती-सिरीज़ नं० १३

अभिसारिका

नरोत्तमप्रसाद नागर
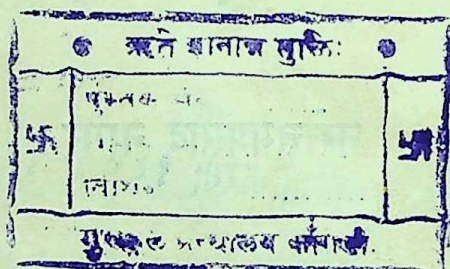
प्रकाशक
इंडियन प्रेस लिमिटेड
प्रयाग

अभिसारिका

(१)

क्लास लगा था। मास्टर साहब भी थे, पढ़ने की किताबें भी थीं और लड़कों की शैतानी भी। सिर उभारने का मौक़ा न पाकर सब कुछ जैसे क़ायदे में चल रहा था। मास्टर साहब की छड़ी शान्त थी, लड़के भी किताबों के पन्ने पलटते-पलटते जैसे ऊँघ चले थे।

इसी समय हेडमास्टर साहब ने क्लास में प्रवेश किया। उनके साथ में एक लड़का था। उसे आगे बढ़ाते हुए उन्होंने कहा—"देखिए मास्टर साहब, यह आपका नया शिष्य है।"

नये शिष्य को सौंपकर हेडमास्टर साहब चले गये। उसे सामने देखकर मास्टर साहब को अपनी मास्टरी का ख़याल आया, लड़कों को अपनी शैतानी का। मास्टर साहब ने उससे पूछा—"तुम्हारा नाम क्या है ?"

लड़का फुसफुसाकर रह गया। अपने नाम को उभारकर न रख सका।

इस बार मास्टर साहब की आवाज़ कुछ तेज़ हो चली थी। उन्होंने फिर पूछा—"क्या नाम है तुम्हारा ? मुँह खोलकर बोलो !"

लड़के का मुँह कुछ खुला, आवाज़ भी कुछ आई, मगर साफ़ सुनाई नहीं पड़ी। आवाज़ को स्पष्ट करने की पूरी कोशिश वह कर रहा था। इतने में मास्टर साहब की तीसरी पुकार सुन वह चौंक पड़ा। उसकी

टोपी सिर से खिसककर नीचे आ रही। क्लास के सभी लड़कों की खिल-खिलाहट में उसका अनुच्चारित नाम उछलने लगा।

वातावरण शान्त होने पर उसका नाम स्पष्ट होकर सामने आया—चार्ल्स बॉवेरी।

बात आई-गई हो गई। क्लास का काम फिर क़ायदे से चलने लगा। लेकिन बॉवेरी के दिल में जैसे एक खटका बैठ गया था। हर चीज़ को जैसे अपने में समेटकर वह रखना चाहता था। कुछ भी इधर-उधर होने से जैसे उसकी सारी पूँजी बिखरकर रह जायगी।

उसके पिता फ़ौज में डाक्टर थे। कुछ झगड़ों की वजह से उन्हें अपनी नौकरी से अलग हो जाना पड़ा। बदन उनका गठा हुआ था, देखने में सुन्दर। नौकरी से ही अब तक प्रेम करते रहे थे। नौकरी छोड़ने के बाद उन्हें मालूम हुआ, उनका गठा हुआ बदन और सुन्दर चेहरा काफ़ी मूल्य रखता है। इसी के सहारे पत्नी के साथ-साथ दहेज़ में भारी रक़म भी उनके हाथ लगी।

विवाह के बाद तीन-चार साल ख़ूब रास-रंग में बीते। दहेज़ की रक़म की बदौलत हर रात दीवाली बनकर आती थी। दहेज़ में सब कुछ देकर ससुर साहब पहले ही ख़ाली हो चुके थे। दीवाली की चमचमाती रातें अन्धकार में बदल चलीं। एक व्यवसाय में हाथ डाला, लेकिन भाग्य ने साथ न दिया। लक्ष्मी के अभाव में दीन-दुनिया को कोसते, झुँझलाहट और ईर्ष्या से भरा हृदय लिये, नगर के बाहर, एक आधे देहाती और आधे शहरी, सस्ते-से मकान में रहने लगे।

पत्नी का उल्लास भी अब तीखा हो चला था। शुरू-शुरू की सारी रंगीनी ग़ायब हो गई थी। स्वभाव में चिड़चिड़ापन आ गया था।

बात, बेबात, उसके ओठ फड़फड़ाने से कभी न रुकते थे। प्रेम शिकायत बनकर सामने आता था। जितना ही वह अपने पति को घेरना चाहती, उतना ही वे दूर भागते। रोज़ की चख़चख़ ने पति को आवारा बना दिया। न जाने कहाँ-कहाँ, किस-किस के साथ, घूमा करता। काफी रात गये लौटता—नशे में बुत, गिरती-पड़ती टाँगों को लिये।

सहने की भी एक हद होती है। अपने पति की पत्नी बनने का जब कोई चारा नहीं रहा, न आँसुओं ने काम दिया, न झुँझलाहट ने, तो उसने अकेले ही खड़ा होना शुरू किया। सुख-दुख की कल्पनाओं को जैसे झटककर उसने अपने से अलग कर दिया। आँसुओं को हमेशा के लिए पी गई, झुँझलाहट ने हृदय के अन्ततम प्रदेश में जाकर समाधि ले ली। मशीन की तरह उसने घर-बाहर का सब काम देखना शुरू किया। वकीलों से मिलती थी, बाज़ार का सारा काम करती थी, लेन-देन का पूरा हिसाब रखती थी। घर में होते हुए भी पति महोदय अब उसे दिखाई नहीं पड़ते थे।

चार्ल्स बॉवेरी ने इसी मा के पेट से जन्म लिया था। पति को खोकर उसने लड़के को पाया था। पति के अभाव को उसी से वह पूरा करती थी। हृदय का सारा स्नेह और दुलार उसी पर न्यौछावर होता था। नतीजा इसका जो होना था, वही हुआ। लड़का ज़िद्दी और हठी हो गया। वह अपने को किसी राजकुमार से कम नहीं समझता था। जो कसर रह गई थी, उसे पिता पूरी करने लगे। उनके अपने जीवन में जो अधूरापन रह गया था, उसे लड़के के द्वारा पूरा करने लगे। अपने साथ उसे खिलाते-पिलाते, यहाँ-वहाँ घुमाने ले जाते। मा उसे अपने

साँचे में ढालना चाहती थी, पिता अपने में। इसी खींचतान में चार्ल्स बॉवेरी बड़ा हो रहा था।

लड़के ने बारहवें वर्ष में पाँव रक्खा, तेरहवाँ भी बीत गया, चौदहवें के भी छः महीने गुज़र गये। उसके पढ़ने-लिखने का कोई ठीक प्रबन्ध न हो सका। खींचतान कर मा ने एकाध पादरी को उसे पढ़ाने के लिए नियुक्त किया, लेकिन पढ़ाई कुछ चल न सकी। पादरी साहब का सारा समय मृतकों के लिए मुक्ति के पथ को आलोकित करने में ही बीतता था। इससे छुट्टी मिलने पर वे चार्ल्स को अपने साथ लेते। पहले से थके दिमाग़ को उसकी किताबों के अक्षरों से न उलझाकर इधर-उधर की बातों में ही समय काट देते।

पति की तरह लड़के का आवारा होना मा नहीं देख सकती थी। आवारगी से बचाने के लिए चौदह साल तक उसे अपनी गोद से उभरने न दिया। चाहने पर भी अब उसे अपने आँगन का खिलौना बनाये ही नहीं रख सकती थी। उधर पति महोदय अलग लड़के को अपने ही रंग में रँगना चाहते थे। आख़िर मा की फिर विजय हुई—पिता के पञ्जे से छुड़ाकर लड़का मास्टर साहब की मास्टरी को सौंप दिया गया।

चक्की के दो पाटों के बीच उसका जीवन बीता था। मा को भी साथ लेकर चला था और पिता को भी। दोनों के बीच रह कर उसका विकास हुआ था। स्कूल में भी उसने अपना यही स्थान बनाये रक्खा—न बहुत नीचे, न बहुत ऊपर। बीच का स्थान ही उसे निरापद मालूम होता था। इधर-उधर के छोरों से अपने को समेटकर चलने की उसे आदत हो गई। उसकी सारी सतर्कता, सारी कोशिशें और सारी पढ़ाई इसी मध्यबिन्दु पर केन्द्रीभूत रह गईं।

दो साल इसी तरह बीत गये। तीसरे साल के शुरू होते न होते उसकी मा ने उसे इस स्कूल से उठा लिया। उसे अपने लड़के से बड़ी-बड़ी आशायें थीं। एकाएक आसमान में चमकता हुआ उसे वह देखना चाहती थी। उसे विश्वास था, उसके लड़के के लिए कुछ भी असम्भव नहीं है। अपनी असम्भव कल्पना को सम्भव करने के लिए एक डाक्टरी स्कूल में उसने अपने लड़के को भरती करा दिया।

चार्ल्स को लगा, जैसे उसके पाँव उखड़ गये हैं। डाक्टरी की मोटी-मोटी किताबें, बीमारियों के टेढ़े-मेढ़े नाम, मुर्दों की चीर-फाड़—मातृस्नेह की इस देन का बोझ वह न सँभाल सका। शरीर उसका पतला पड़ता गया, चेहरा पीला और उदास हो चला। पहले स्कूल में जो उसने अपने को थोड़ा-बहुत सँभाला था, वह कुछ न रहा। न हृदय में आशा थी, न इरादे। कुछ दिन मशीन की तरह क्लास में जाता रहा, लेकिन धीरे-धीरे क्रम टूट चला।

आवारगी के दौर ने फिर सिर उभारा। किताबों को अपने कमरे में पटक जुआख़ाने में चुपचाप पहुँच जाता, रात को दबे पाँव लौटता। मा, बाप, मास्टर और स्कूली किताबों से दूर, नये जीवन के इस नयेपन ने उसके हृदय को गुदगुदी से भर दिया।

जीवन की इस गुदगुदी में परीक्षा पीछे रह गई। उसके फ़ेल होने की बात सची होने पर भी मा को विश्वास नहीं हुआ। उसका लड़का फ़ेल नहीं हो सकता। ज़रूर मास्टरों ने कोई बदमाशी की होगी। बदमाशी सदा नहीं चल सकती। वह ज़रूर पास होगा। इस साल न सही, अगले साल सही।

पिता ने भी यह मानने से इनकार कर दिया, उनका लड़का

इतनी आसानी से फ़ेल हो सकता है! ज़रूर कोई ऐसी-वैसी बात हुई है!

चार्ल्स ने देखा, बिना पास किये छुटकारा नहीं मिलेगा। अगले साल जैसे-तैसे पुरानी किताबों को नये सिरे से सँभाल परीक्षा पास की। मा सुनकर बहुत ख़ुश हुई। ख़ुशी की सीमा नहीं थी। अच्छी-ख़ासी दावत का प्रबन्ध किया गया, इससे भी अधिक यह कि वह चार्ल्स बॉवेरी के लिए एक दुलहिन लाने की तैयारियाँ भी करने लगी।

(२)

चार्ल्स बॉवेरी की मा का विवाहित जीवन उलटी धारा में बह गया था। दहेज़ के बल पर वह कुछ दिन गृहलक्ष्मी बनी रही, पति भी गृहपति के सिंहासन को सुशोभित करते रहे। दहेज़ के धन के खिसकने के बाद वह गृहलक्ष्मी न रह सकी। घर का बंधन तोड़कर पति भी आवारगी पर उतर आये। पत्नी सिर पटककर रह गई, पति ने आँसू न बहाये। जितना ही वह पति को सँभालकर रखना चाहती, उतना ही वे दूर भागते। दहेज़ का धन लेकर जब वह आई थी, तब उसका पसीना भी गुलाब था। जैसे-जैसे धन चुकता गया, उसका गुलाब भी पसीना होता गया—वह पास जाती थी, पति नाक पर रूमाल धर दूर हट जाते थे।

अपने लड़के चार्ल्स बॉवेरी के विवाह को लेकर वह पहले ही से सतर्क थी। अनघड़ और बच्ची बहू के हाथों वह चार्ल्स को सौंपना नहीं चाहती थी। इसके लिए एक विधवा पर उसकी नज़र पड़ी। सुन्दर वह नहीं थी, चेहरे की चिकनाई को मुहाँसों ने ढक दिया था, लेकिन प्रेमियों

को अपने चारों ओर बनाये रखना वह जानती थी। चार्ल्स की मा ने उसे देखा, देखकर सन्तुष्ट हुई। चार्ल्स को हृदय में समाकर वह रक्खेगी। उसके साथ विवाह होने पर वह इधर-उधर न भटक सकेगा।

चार्ल्स का विवाह हो गया। गृहस्वामिनी बनकर बहू घर में आई। वह अनघड़ नहीं थी। कच्ची गोटों से एक बार खेलकर सतर्क हो चुकी थी। आते ही उसने चार्ल्स को सँभालना शुरू कर दिया। वह कहाँ जाये, कहाँ नहीं; किससे मिले, किससे नहीं—सब कुछ वह देखती-भालती थी। चार्ल्स के पत्रों को खोलकर तो वह पढ़ ही लेती थी, मरीज़ों को भी चार्ल्स के पास पहुँचने से पहले उसकी नज़रों के नीचे से गुज़रना पड़ता था। बीमार स्त्रियों के आ जाने पर उसकी कला का अच्छा विकास होता था। जब तक वे बाहर न निकलतीं, परदे के पास कान लगाकर खड़ी हो जाती। पति रोगियों की नब्ज़ परखते थे, वह पति की। वह मरीज़ों के डाक्टर थे, वह डाक्टर की डाक्टर थी।

डाक्टर पति से प्रेम कैसे करना चाहिए, यह वह अच्छी तरह जानती थी। उनके पाँव की आहट पाते ही दिल की धड़कन बढ़ जाती थी, माथे में दर्द होने लगता था, चक्कर आने लगते थे। डाक्टर पति की वह सबसे बड़ी मरीज़ थी। रोगियों से निबटने के बाद जब वे घर लौटते तो पत्नी के हृदय की धड़कन को मापते, दर्द को सँभालने के लिए सिर पर हाथ फेरते, चक्कर खाकर गिर न पड़े, इसलिए कभी-कभी गोदी में भी सँभालना पड़ता। औरों का रोग अच्छा ही हो जाता था, लेकिन पत्नी का रोग बराबर बढ़ता ही जाता था—जितना भी अधिक दवा करते, उतना ही वह बढ़ता जाता। अच्छा न होने पर अन्य रोगियों को डाक्टर छोड़ भी सकते थे, लेकिन यहाँ वह भी सम्भव न था।

डाक्टरी की परीक्षा उन्होंने पास की थी, डाक्टर वे बन गये; लेकिन इतने से ही काम न चला। उन्हें डाक्टर पति भी बनना था। इसकी पढ़ाई जारी करने के लिए ही जैसे उनकी मा ने पत्नी के रूप में एक मास्टर को उन्हें सौंप दिया था।

रात के ग्यारह बजे होंगे। बाहर के रोगियों की देख-भाल पहले ही ख़त्म हो चुकी थी, घर का रोगी भी बिस्तरे पर पहुँच गया था। अब डाक्टर सोने की तैयारी कर रहे थे। इतने में बाहर से किसी के खटखटाने की आवाज़ आई। नौकर ने नीचे जाकर देखा। एक आदमी डाक्टर को बुलाने आया था। पास के एक गाँव में किसी की टाँग टूट गई है, उसे देखने जाना होगा।

अँधेरी रात थी। चाँद के निकलने तक पत्नी डाक्टर को रोके रही। रात के अँधेरे से वह बहुत डरती थी। पास होते हुए भी उसे लगता था, जैसे पति अन्धकार में खो गये हैं। बत्ती जलाकर, हाथ से टटोलकर, जब तक अच्छी तरह से देख न लेती, उसे सन्तोष न होता था। खिड़की दरवाज़ों को बन्द करके वह सोती थी। अन्धकार में अगर पति कहीं खो भी जायें तो बत्ती जलाने पर घर के अन्दर ही मिल जायें। उनके खोने-भटकने की सम्भावना को घर की चहारदीवारी से बाहर जाते देख वह विचलित हो उठी। लेकिन मजबूरी थी। चाँदनी निकलने पर, टूटी टाँग को कोसते हुए, पति को बिदा करना पड़ा।

डाक्टर उस आदमी के साथ रवाना हुआ। टूटी टाँग ने डाक्टर की नींद को भी तोड़ दिया था। सब कुछ टूटा ही टूटा नज़र आता था। कभी पत्नी का चित्र सामने आता, कभी डाक्टरी का। आँखें बन्द-कर दोनों को स्पष्ट करना चाहता। ठण्डी हवा लगने से नींद का एकाध

झोंका भी आ जाता। फिर एकाएक, जैसे झटका खाकर, जाग उठता। टूटी टाँग अपशकुन बनकर जैसे उसके सामने आ-आ जाती थी।

एक मकान के सामने जाकर उसकी सवारी रुकी। बाहर एक लड़का बैठा था। उसने पूछा—"आप ही डाक्टर साहब हैं ?"

जवाब पाने पर लड़का आगे-आगे चला, डाक्टर पीछे-पीछे। गाँव के चौधरी के सामने दोनों पहुँचे। कल रात किसी दावत से लौट रहे थे। रास्ते में घोड़ा बिगड़ गया। चौधरी गिर पड़े। घर में और कोई नहीं है। दो साल हुए, पत्नी का देहान्त हो गया। बस, वे हैं, उनकी टूटी टाँग है और—उनकी एक लड़की, वही घर का सारा काम-काज देखती है।

डाक्टर ने मरीज़ को देखना शुरू किया। चोट जितनी बड़ी बनकर आई थी, वास्तव में उतनी थी नहीं। वह इतनी हलकी थी कि हाथों-ही-हाथों में डाक्टर ने उसे सँभाल लिया। लड़की पास ही खड़ी थी। उसके हाथ से पट्टी लेकर डाक्टर के हाथों ने मशीन की तरह काम करना शुरू किया। आँखों में चोट से अधिक लड़की की काली आँखों की पुतलियाँ समाई थीं, लेकिन इससे हाथों की गति में कोई अन्तर न पड़ा। आँखें अपना काम करती रहीं, हाथ अपना।

लड़की का नाम था एम्मा। शरीर का सारा सौंदर्य जैसे उसकी आँखों में ही समाया था। शरीर जितना ही पीछे हटता था, उतनी ही आँखें उभरकर सामने आती थीं। पिता की टूटी टाँग को लेकर उसने बातें शुरू कीं, आँखों ने बातों को और भी आगे बढ़ा दिया। तय हुआ, देर हो गई है। डाक्टर बिना खाना खाये यहाँ से न जायेंगे।

एम्मा डाक्टर को अपने कमरे में ले गई। कमरा खूब सजा हुआ

था। अपने जीवन के सूनेपन को भरने के लिए उसने बहुत-सी चीज़ें इकट्ठी की थीं। उसकी इस दुनिया में कमरे की ये चीज़ें थीं। इनसे उकताकर पिता के पास जाती थी, पिता से छुट्टी मिलने पर फिर यहीं आ जाती थी। डाक्टर ने इन चीज़ों को देखा। सहसा उसकी नज़र एम्मा के शरीर पर टिक गई। जैसे बदन में फुरहरी लगती हो। कँपकँपी-सी चढ़ती और वह अपने ओठ काटने लगती। आँखों की तरह ओठ भी सामने उभर आये। डाक्टर ने देखा, उनमें रस की कमी नहीं है।

हलकी-सी चोट को जितनी जल्दी आराम होना चाहिए था, उतनी जल्दी नहीं हो सका। टूटी टाँग के सहारे डाक्टर रोज़-रोज़ यहाँ आने-जाने लगे। पूरे छयालीस दिन तक पट्टियाँ बँधती और खुलती रहीं—हाथ अपना काम करते रहे और आँखें अपना। डाक्टर अब जैसे घर के ही आदमी हो गये थे। टूटी टाँग के अच्छे होने की ख़बर के साथ-साथ उनकी ख्याति भी फैल चली। पहले वे मरीज़ों की तलाश में रहते थे, अब मरीज़ उनकी तलाश में रहने लगे। एम्मा के हाथ के स्पर्श ने सफलता की पहली सीढ़ी पर उन्हें ला खड़ा किया था। क़दम पहला ही था, कितने दिनों तक पहला ही वह रहा। यहीं तक आकर एम्मा रुक जाती, डाक्टर से बिदा ले अपनी दुनिया में लौट जाती।

डाक्टर की पत्नी इस पहले क़दम को नहीं पकड़ पाई थी। टूटी टाँग ही उसके सामने थी। जब-तब वह डाक्टर से पूछती रहती थी—अब टाँग का क्या हाल है? कब तक अच्छी होगी? रोटी खाना वह भूल सकती थी, टूटी टाँग के बारे में पूछना नहीं। उलझन बढ़ चली उस समय टूटी टाँग के साथ, जब उसे एम्मा का हाल मालूम हुआ। सिरा मिलते ही वह आगे बढ़ी। डाक्टर का रास्ता छेंककर कहने लगी—

मैं भी तो कहूँ कि यह मरी टूटी टाँग अच्छी क्यों नहीं होती ! अब रहस्य खुला । इतने दिनों तक तुम मेरी आँखों में धूल भोंकते रहे ! मुझे क्या पता था कि......!"

इसके बाद वह एम्मा की वंशावली का बखान कर गई । घृणा का सारा वेग एम्मा के सिर ही पड़ा । वह आवारा है, जादूगरनी है, बिगड़ी हुई है । आगे बढ़ने पर गृहलक्ष्मियों का सुहाग लूटनेवाली डायन भी वह बन जाती थी । अपने पति पर भी उसे भुँभलाहट होती थी, भुँभलाहट से अधिक दया आती थी । वे इतने भोले हैं कि कुछ नहीं समझते । पता चलेगा, जब वह इन्हें कहीं का भी न छोड़ेगी !

डाक्टर की मा भी जब-तब आती रहती थी । मा ने पहले तो विश्वास नहीं किया, लेकिन धीरे-धीरे वह भी एम्मा के ख़िलाफ़ हो गई । सास-बहू, दोनों बैठतीं और डाक्टर के असंयम पर कतरनी चलाना शुरू करतीं । मा का मातृत्व आगे बढ़ता था, पत्नी का पत्नीत्व और डाक्टर इन दो कतरनियों का मध्यबिन्दु । विवाहित पत्नी का पति बनाने के लिए बराबर काट-छाँट चलती रहती थी ।

रोगी बनकर उसने अपने डाक्टर पति से प्रेम करना शुरू किया था । रोगी को प्रेम नहीं मिलता, मिलती है डाक्टरी, दवा-दारू । वही डाक्टरी उसे भी मिली । लेकिन उसका पत्नीत्व इससे सन्तुष्ट न हुआ—रोगी बनकर भी वह डाक्टर की डाक्टरी से द्वेष करने लगी । डाक्टरी भी उससे विमुख हो गई और डाक्टरी को अपनानेवाले डाक्टर पति भी । एक रोग था और वह थी । टूटी टाँग ने उसके रोग को राज-रोग में परिणत कर दिया । ढाँचा-मात्र रह गई । डाक्टर और उनकी डाक्टरी दोनों उससे निराश हो उठे । एक दिन खाँसी का ज़ोर हुआ, साथ में

खून भी गिरा और इससे पहले कि एम्मा उसके पति की ओर दूसरा क़दम आगे बढ़ाये, सदा के लिए उसने अपनी आँखें बन्द कर लीं।

(३)

डाक्टर बनने के बाद पति बनने की शिक्षा चार्ल्स बॉवेरी को मिल रही थी। पति तो वह नहीं बन सका, बन गया प्रेमी। इस दिशा में भी वह अभी तक एक ही क़दम आगे बढ़ा था। एम्मा घर से बाहर आती थी, लेकिन दरवाज़े पर ही ठिठककर रह जाती थी। पत्नी के मरने के बाद चार्ल्स ने कुछ हलकेपन का अनुभव किया, लेकिन साथ ही उसे ऐसा भी मालूम हुआ, मानो उसके सिर का साया हट गया है। पत्नी उसे बीच में ही छोड़कर चली गई—न वह पति ही रह गया था, न प्रेमी ही। मा की गोद में फिर से छोटा बनकर मुँह छिपाने लायक़ भी अब वह नहीं था।

पत्नी के मरने के बाद वह एम्मा के घर गया। एम्मा से अधिक उसके पिता की सहानुभूति उसे मिली। चार्ल्स के इस दुःख से उन्हें अपनी पत्नी की याद हो आई। चार्ल्स की कमर पर सान्त्वना का हाथ फेरते हुए वे कहने लगे—"मेरे लिए यह नई बात नहीं। मैं भी इसे भुगत चुका हूँ। पत्नी के मरने के बाद मुझसे घर में बैठा नहीं जाता था। बड़ी बुरी हालत थी। जब किसी नवदम्पति को जाते देखता तो हृदय पागल हो उठता था। जो कुछ सामने आता, तोड़-फोड़ डालने को जी चाहता। मिट्टी के ढेलों पर अनायास छड़ी का प्रहार करता चलता था। खिले-अधखिले फूल हाथ में आते ही चूर हो जाते थे। कितने ही दिनों तक ऐसा ही हाल रहा। फिर धीरे-धीरे सब कुछ मिट चला। मैं अपने

काम में लगा। अकेले में याद और भी सताती है। तुम अकेले मत रहा करो। यहाँ आ जाया करो। मैं हूँ, एम्मा है। जी लगा रहेगा।"

चार्ल्स ने आना-जाना शुरू कर दिया। एम्मा के पिता अब उसे हाथों-हाथ ही लेते थे। उसके दुःखित हृदय को ठेस न लगे, इसका बड़ा ध्यान रखते थे। एक दिन था जब चार्ल्स ने उनकी टूटी टाँग का इलाज किया था। आज वे चार्ल्स के टूटे हृदय को जोड़ने में लगे थे। उसे वे कहानियाँ सुनाते थे। आँसुओं के स्थान पर हँसी ही उनके होठों पर खेले, इसके लिए वे बात-बे-बात हँसते भी रहते थे। चार्ल्स भी उनकी हँसी का अनुकरण करता था, अपने दुःख से अधिक उनके हँसी के प्रयत्नों को इधर-उधर करने के लिए।

रीते गिलास से प्यास बुझाने के खेल में एम्मा अपने पिता से अधिक सफल होती थी। बातों ही बातों में चार्ल्स से कहती—-शरबत पिओगे?

चार्ल्स ना-नुकर करता, वह हठ करती। आख़िर दो गिलास वह उठाती। एक भरा हुआ, दूसरा प्रायः रीता। भरा हुआ चार्ल्स को देती, रीता आप लेती। भरा हुआ गिलास पाकर भी चार्ल्स की प्यास नहीं बुझ पाती और एम्मा रीते गिलास से शरबत पीने का अभिनय करने में इतना सफल होती कि चार्ल्स देखता रह जाता। इसके बाद वह दुनिया भर की बातें करती—समुद्र-तट पर घूमने, लहरों के साथ खेलने, गाने-बजाने, स्कूल-जीवन—बड़ी दूर-दूर की बातें करती। फिर पिता का ज़िक्र करती। मा की याद भी ताज़ी हो आती। बग़ीचे में ले जाकर वे पौधे दिखाती, जिनके फूलों की श्रद्धाञ्जलि वह अपनी मा की याद में चढ़ाया करती थी।

सब कुछ होते हुए भी चार्ल्स अकेला था। धीरे-धीरे अपने एकाकी

जीवन से वह अभ्यस्त हो गया। रस भी इसमें आने लगा। जब चाहता खाता, जब जी में आता सोता, न किसी को जवाब देना पड़ता, न किसी को सफ़ाई। मरीज़ों के बाद वह केवल अपने को ही देखता था। अपने से उसे मोह भी हो चला, आईने में अपने चेहरे पर ख़ुद ही मुग्ध होकर रह जाता था। इसके बाद निकलता था बाहर, दूसरों को मुग्ध करने के लिए।

एम्मा की काली आँखें और भरे हुए ओठ सदा उसके साथ रहते थे। बिस्तरे पर पड़कर घण्टों एम्मा के बारे में सोचा करता। रीते गिलास का खेल उसकी आँखों के सामने नाचा करता। उससे विवाह करने की बात भी जब-तब हृदय में उठती थी। कल्पना में सब कुछ हो भी जाता था। लेकिन पूरा इरादा कर लेने पर भी जब उसके सामने पहुँचता, मुँह से एक शब्द न निकलता। अपने को व्यक्त करनेवाले ठीक शब्दों को वह पकड़ नहीं पाता था। सूखे गले में शब्द जैसे अटककर रह जाते थे। तभी वह कहती—"शरबत पिओगे?"

विवाह-प्रसंग रीते गिलासों के खेल में उलझकर स्थगित हो जाता। रोज़ वह इरादा करता, इरादा करके रह जाता। पहला क़दम अभी तक पहला ही क़दम बना हुआ था।

पत्नी के मरने के बाद एम्मा के पिता को जीवन सूना दिखाई देता था। जैसे-जैसे समय बीतता गया, इस सूनेपन को ही वे अपनाते गये। ज़मीन उनके पास थी, लेकिन वह भी सूनी ही थी। सोना उगलना वह भूल गई थी। न केवल इतना ही, बल्कि एम्मा के पिता के सोने को भी उसने मिट्टी में मिला दिया था। बञ्जर भूमि के वे चौधरी थे। वे थे और बञ्जर दुनिया। एम्मा भी उनके सूनेपन को भर नहीं पाती थी।

उसे वे इस लायक़ समझते भी न थे। एम्मा के प्रति उनका स्नेह उपेक्षा के सहारे आगे बढ़ता था।

चार्ल्स और एम्मा को मिलते, बातें करते, वे देखते थे। शुरू-शुरू में विशेष ध्यान इस पर नहीं दिया। एक दिन उन्होंने, अनायास, चार्ल्स के गालों पर लाली की आभा का प्रसार देखा। बात कुछ-कुछ समझ में आई। चार्ल्स अच्छा नहीं तो बुरा भी नहीं है। पैसा भी उसके पास कुछ न कुछ होगा ही। मन-ही-मन जोड़-तोड़ लगाने लगे। सोचा—एम्मा के साथ इसका विवाह बुरा न होगा। चार्ल्स के प्रस्ताव करने पर वे ना नहीं करेंगे।

एक दिन इसका अवसर आ भी गया। चार्ल्स को बिदा करने के लिए एम्मा के पिता कुछ दूर तक साथ-साथ चले आये। साहस बटोरकर चार्ल्स ने कहना शुरू किया—"मुझे आपसे कुछ कहना है।"

इस 'कुछ' को पकड़कर ही एम्मा के पिता ने रज़ामन्दी दे दी। हृदय खोलकर दिखाने की उसे ज़रूरत नहीं पड़ी। जो कसर रह गई थी, उसे एम्मा ने पूरा कर दिया। इतने उत्साह से वह आगे आई मानो अपने नहीं, किसी दूसरे के ब्याह में शामिल होने का निमंत्रण उसे मिला हो। चार्ल्स अपने हृदय को घूँघट में समाये सिकुड़ा जाता था। दुलहा होते हुए भी वह दुलहिन को मात कर रहा था!

विवाह की सारी तैयारियों में एम्मा जितना उभर कर आई, उतना चार्ल्स नहीं। ढोल-ताशों की आवाज़ में वह जैसे खो गया था। विवाह के बाद, दूसरे दिन, उसने अपने को उभारना शुरू किया। जहाँ कहीं भी जाता, एम्मा को साथ लिये। जिस किसी से मिलता, उसका परिचय कराता। अपना परिचय भी वह उसी के द्वारा देता था। विवाह उसी

का हुआ है और किसी का नहीं, यह प्रत्यक्ष करने के लिए एम्मा ने जै प्रमाण-पत्र का स्थान ले लिया था।

एम्मा को यह प्रदर्शन अच्छा लगता था। पहली बार उस अपने अस्तित्व का इतना प्रत्यक्ष अनुभव किया। अपने पति की वह सब कुछ है, उसके सहारे ही पति का अस्तित्व सम्भव हुआ है, य जानकर उसका सिर ऊँचा उठ जाता था। चार्ल्स के साथ घूमना उ अच्छा लगता था। जी भारी हो उठता था—घर लौटने पर। अप चारों ओर वह नज़र डालती, मृत पत्नी की याद ताज़ी हो आती सुहाग-शय्या को देखकर उसके हृदय में गुदगुदी उठती, लेकिन दूस ही क्षण सुहाग-शय्या के सारे फूल मुरझा जाते। मृत पत्नी की कल्पन सामने आ खड़ी होती। वह सोचने लगती—यह सुहाग-शय्या मेरे लि है। और यदि मेरी मृत्यु हो गई तो......?

एक अस्पष्ट छाया एम्मा को पीछा करती मालूम होती। घर आते ही उसका जी भारी होने लगता। पुराने चिह्नों को मिटा डाल के लिए उसने घर की काया पलटनी शुरू कर दी। नई सफ़ेदी करा खिड़की-दरवाज़ों के परदे बदले, मेज़-कुर्सियों को भी नया बना दिया बड़ी तत्परता से वह अपने काम में जुट गई। वह काम करती, चार्ल मुग्धभाव से देखा करता। घूमने-फिरने की ओर एम्मा की रुचिविशे को पूरा करने के लिए एक घोड़ा-गाड़ी भी उसने ख़रीद ली। गाड़ पुरानी थी, लेकिन एम्मा ने उसे भी नया बनाने में कोई कस न रक्खी।

एम्मा को पाकर चार्ल्स स्वर्ग में पहुँच गया था। उसकी काल पुतलियों में प्रतिबिम्बित अपनी छाया के साथ ख़ुद भी छाया बन जात

चाहता। छाया-आलोक का यह खेल जीवन में पहली बार उसने देखा और सब कुछ भूल गई—मा को, डॉक्टरी की पढ़ाई को, मृत पत्नी को। काली पुतलियों में पड़ी छाया के अतिरिक्त भी एम्मा में कुछ है, कभी-कभी तो यह भी वह भूल जाता था। उसकी दुनिया एम्मा की पुतलियों में समा कर रह गई थी।

छाया को छोड़कर चार्ल्स प्रकाश में आया था। सम्पूर्ण रूप में उसने इसे अपनाया। एक क्षण के लिए भी इसे छोड़ना नहीं चाहता था। बाहर से जब कभी घर लौटता, उसके क़दमों की गति अपने आप तेज़ हो जाती। कई-कई सीढ़ियों को एक साथ लाँघकर एम्मा के कमरे में पहुँचता। अपना अथवा कमरे की किसी पुरानी स्मृति का कायाकल्प करने में एम्मा व्यस्त मिलती। प्रेमी पति के अप्रत्याशित चुम्बन की चोट खाकर वह चौंक उठती, मुंह से एक हलकी चीख़ निकलकर रह जाती। प्रेम का प्रत्येक स्पर्श मृत पत्नी की छाया को सामने ला खड़ा करता था। खिले हुए फूल को जैसे पाला मार जाता था। चुम्बनों से जितना ही चार्ल्स उसे हरा करना चाहता, उतना ही वह मुरझा जाती। रीते गिलास का अभिनय यथार्थ बनकर सामने आने लगा। चार्ल्स को भरा गिलास मिल गया था; लेकिन एम्मा का गिलास रीता था, रीता ही रहा।

(४)

एम्मा के पिता पुरुष थे। वे अपने पुरुषार्थ को सार्थक करना चाहते थे। कोशिश भी इसकी उन्होंने की; लेकिन उनका पुरुषार्थ एक कन्या को जन्म देने से आगे न बढ़ सका। वे चाहते थे

पुत्र, मिली कन्या। जब कभी वह सामने आती, वे छोटे बनकर रह जाते। पिता की उपेक्षा से टकराकर मा की गोद का सहारा वह लेती थी। मा के मरने पर उसका वह सहारा भी जाता रहा। सूने घर की चहारदीवारी में मँडराकर वह रह जाती थी। दो हाथ की दूरी पर रहकर ही पिता का जीवित स्पर्श उसे मिलता था। और निकट पहुँच पाती थी उस समय, जब कभी वे बीमार पड़ते थे। खुद के बीमार होने पर भी उनके संसर्ग-स्पर्श की सम्भावना निकट आ जाती थी। पहली बार इसका अनुभव उसे हुआ था मा के मरने पर। पछाड़ खाकर वह गिर पड़ी थी। कुछ देर बाद होश आने पर उसने देखा—पिता की गोद में उसका सिर टिका है, व्यथित नेत्रों से वे उसकी ओर देख रहे हैं। उनकी इस मूर्ति को अपनी पुतलियों में समाकर उसने आँखें बन्द कर लीं, उसी तरह उनकी गोद में पड़ी रही—यदि उसी समय, उसी अवस्था में, उसकी मृत्यु हो जाती......।

लेकिन उसे जीना था, घर के सूने आँगन में बैठकर, जीने के सपने देखने थे, कल्पना के सहारे दूर-दूर के देशों की सैर करनी थी, समुद्र की लहरों से खेलना था। पिता के जीवन के शून्य को तो वह नहीं भर सकी; पर अपने शून्य को कल्पित राजकुमारों से अवश्य भर लिया। पिता की टाँग टूटने पर कल्पना कुछ यथार्थ हो चली। उन्हीं राजकुमारों में से एक, जैसे चार्ल्स बॉवेरी का रूप धर उसके सामने आ गया था। उसे पाकर उसके हृदय में कुछ कुड़कुड़ हुई, इसको ही उसने जीवन समझा। राजकुमारों की बस्ती में प्रवेश करने के लिए चार्ल्स के साथ हो ली। चार्ल्स के घर आकर देखा—

राजकुमार की बस्ती पर मृत पत्नी की छाया मँडरा रही है। उसके सपने बिखरकर रह गये। डॉक्टर की डॉक्टरी और रोगियों की कराहट के साथ चलनेवाले चुम्बनों से वह तंग आ गई। उसकी उदासी को दूर करने के लिए चार्ल्स का प्रेम दूना होता जाता था, और वह उतनी ही मात्रा में उससे बचना चाहती थी। जितना ही वह बचना चाहती थी, उतना ही चार्ल्स के प्रेम का आकर्षण बढ़ता जाता था। चार्ल्स के लिए जैसे यह आँखमिचौनी का खेल था, एम्मा के लिए जी का जञ्जाल। झिड़कने पर भी वह पीछे नहीं हटता है। एम्मा ने जितना ही झिड़का, हठी बालक की तरह उतना ही वह उससे लिपटता गया। एम्मा झुँझला-झुँझलाकर रह गई, दाँतों से अपने ओठों को उसने काट-काट डाला; लेकिन व्यर्थ !

चार्ल्स का लड़कपन एम्मा की समझ में नहीं आता था। 'हाँ' को वह 'नहीं' समझता था और 'नहीं' को 'हाँ'। कोष को ख़ाली कर डालने पर भी उसे समझाने लायक़ शब्द एम्मा नहीं पा सकी। अन्दर ही अन्दर उसका मन घुमड़कर रह जाता था। उसकी दीर्घ निश्वासें घर की चहारदीवारी से टकराकर शून्य में खो जाती थीं।

घर के काम-काज में उसने अपने को भुला देना चाहा, डॉक्टर के मरीज़ों में भी वह दिलचस्पी लेने लगी। दवाइयों के बिल बनाती, जब-तब नुस्ख़े भी तैयार कर देती। उसकी तत्परता को देख चार्ल्स मुग्ध होकर रह जाता—बड़े भाग्य से ऐसी पत्नी मिलती है। चार्ल्स ही नहीं, उसके मित्र भी उसके इस भाग पर रश्क करते। एम्मा सुनती और कुढ़कर रह जाती। अपने को व्यक्त करने के लिए चार्ल्स का प्रेम मचल उठता, ढकेलकर एम्मा उसे मरीज़ों के पास भेज देती।

चार्ल्स की मा अभी जीवित थी। उसके स्नेह में भी कोई कमी नहीं पड़ी थी। लेकिन एम्मा के बीच में आ जाने से चार्ल्स कुछ ओट में आ गया था। इस ओट को दूर करने के लिए वह जब-तब आती रहती थी। बातें वह चार्ल्स से करती थी, सतर्क और सन्देहयुक्त कनखियों से एम्मा को भी एक किनारे लगाती जाती थी। जब तक वह रहती, चार्ल्स को उभरने का अवसर नहीं मिलता। वह और भी सिकुड़कर रह जाता। एम्मा उसे देखकर मुस्करा उठती—मुस्कराने के बाद झुँझलाहट उठती, चार्ल्स पर भी, उसकी मा पर भी।

एम्मा जीवन चाहती थी, मिला उसे लड़कपन। लड़कपन मचलना जानता था, रूठना भी जानता था, आँखें फाड़कर भी कभी-कभी देखने लगता था। 'जीवन' बनना उसे नहीं आता था। लड़कपन को खिला पिलाकर वह दवाख़ाने में भेज देती—मरीज़ों से उलझने के लिए ख़ुद घर के काम-काज में लग जाती। काम-काज में भी कोई नयापन नहीं रह गया था। ख़त्म भी वह जल्दी हो जाता था। खोई-सी सुदूर आकाश में एकटक देखा करती, देखती रहती।

जीवन में नयापन लाने के प्रयत्न वह करने लगी। इधर की चीज़ उधर उलट-पलटकर रखने लगी। चार्ल्स के पुराने नौकर को भी छुट्टी दे दी। चौदह वर्ष की नई लड़की को नौकर रक्खा। कुछ दिन उसे सिखाने-पढ़ाने में बीते। खाना बनाने की शिक्षा भी उसे देनी शुरू की। साग-तरकारियों के रोज़ नये-नये नाम धरे जाने लगे। चार्ल्स नये नामों को सुन-सुनकर दंग रह जाता था। न जाने कौन-सी चीज़ उसके सामने आनेवाली है। कुछ देर के लिए एम्मा के हृदय में भी कौतुक उभरता फिर शून्य में खोकर रह जाता।

एम्मा को विश्वास था, एक दिन कुछ न कुछ होगा ज़रूर। यह विवाह कुछ नहीं है, चार्ल्स कुछ नहीं है, घर का काम-काज और चीज़-वस्तु सब यों ही हैं। संयोगवश उसके जीवन से ये सब हिलगकर रह गये हैं। संयोगवश ही वह इनसे मुक्त भी हो जायगी। उस संयोग की आशा को उसने नहीं छोड़ा था। सतर्क होकर उसकी प्रतीक्षा करती थी। इसी आशा को लेकर सोती थी, इसी की आशा में उठती थी। अप्रत्याशित आहट पर उसके कान बराबर लगे रहते थे। कभी-कभी अपने आप ही, अनायास, चौंक उठती थी। घूमकर एकाएक देखने लगती; लेकिन कुछ दिखाई नहीं पड़ता था।

एक दिन वह बाज़ार गई। चिट्ठी लिखने के बहुत-से काग़ज़ और लिफ़ाफ़े ख़रीद लाई। सजाकर उन्हें अपनी मेज़ पर रक्खा। बहुत-से पत्र उसे लिखने हैं, कुछ दिन तक इसी धुन में रमी रही। पत्रों को छोड़कर पेरिस के एक नक़शे पर उसकी दृष्टि जमी। दिन भर उसी को देखा करती। घर बैठे-बैठे उसने पेरिस का पूरा चित्र अपने मस्तिष्क में जमा लिया। कहीं भी जैसे कोई रोक-टोक नहीं थी। पेन्सिल को रेखाओं पर चलाने से ही वह कहीं-का-कहीं पहुँच जाती थी। उसी समय आता चार्ल्स। पेरिस को छोड़ उसकी पेन्सिल से उलझना शुरू करता। वह मन मसोसकर रह जाती।

घर के काम-काज में अब उसका जी नहीं लगता था। स्वभाव भी उसका विचित्र हो गया था। क्या चाहती है, यह वह ख़ुद भी समझ नहीं पाती थी। नौकर को खाना लाने के लिए कहती। थाली जैसी आती, वैसी ही धरी रहती। किसी दिन दूध-ही-दूध पीती, किसी दिन चाय पर उतरती तो ज़रा-ज़रा-सी देर बाद प्यालों की माँग पेश करती।

बेबात नौकर को धमकाना शुरू करती। नौकर चुपचाप सुना करता। फिर एकाएक उसे इनाम दे डालती। कभी मौन साधती तो ऐसा कि मुँह से एक शब्द भी न निकल सके। बोलना शुरू करती तो इस तरह कि सब दंग रह जाते। जो जी में आया, कह दिया। किसी को अच्छा लगे, या बुरा। फिर, एकाएक तकिए में मुँह छिपा, सुबक-सुबककर रोना शुरू करती।

उसकी क्षीण आशा अन्धकार में अस्पष्ट होकर रह गई थी। उसे विश्वास नहीं होता था कि वह कभी प्रकाश का मुँह देख सकेगी। बस यहीं पर नहीं हुई। उसकी असहायावस्था और भी स्पष्ट रूप में उसके सामने आ उपस्थित हुई—वह मा बनने जा रही थी।

(५)

उन्मुक्त और प्रकाशयुक्त वातावरण में एम्मा पहुँच गई; लेकिन उस समय, जब कि उसका चेहरा पीला पड़ गया था और शरीर पतला। अपने बोझिल जीवन के साथ-साथ एक और जीव का बोझ उसकी अधकचरी कल्पनाओं को झुकाये दे रहा था। जी मचलता था, चक्कर आते थे, पेट में जलन होती थी। जब-तब उसकी चेतना अन्धकार-प्रकाश को पहचान नहीं पाती थी। चार्ल्स ने दवाइयाँ दीं; मगर कोई लाभ न हुआ। एम्मा बराबर गिरती जा रही थी। आख़िर तय हुआ—वायु-परिवर्तन के लिए किसी स्वास्थ्यप्रद स्थान पर चलकर रहा जाय। एम्मा उन्मुक्त वातावरण में, प्रकाश और हवा की गोद में, पहुँच गई।

मा के मरने पर वह पछाड़ खाकर गिर पड़ी थी। पिता की उपेक्षाहीन सहृदयता और स्नेह का स्पर्श उसे मिला। इसकी पुनरावृत्ति

हुई पिता की टाँग टूटने पर। चार्ल्स की पत्नी के मरने पर अपने पिता के संवेदन को भी उसने देखा था। उसके पिता और चार्ल्स जैसे एक सूत्र में बँध गये थे। उसने भी अनुभव किया था, चार्ल्स और वह, दोनों, एक-दूसरे से अधिक घनिष्ठ हो उठे हैं। विवाह हो जाने पर चार्ल्स के लड़कपन को लेकर वह परेशान हो उठती थी; लेकिन यह परेशानी सुखद हो उठती उस समय, जब वह चार्ल्स को खाना खिलाती थी, सोने, उठने-बैठने में जब कभी वे लापरवाही करते थे अथवा जब कभी उनकी तबीअत ख़राब हो जाती थी। ऐसे ही क्षणों में उसे जीवन मिला है, जीवन की वास्तविक अनुभूति से उसका संसर्ग स्थापित हुआ है। ख़ुद बीमार पड़ने पर भी जब वह उन्मुक्त वातावरण में पहुँची, तब उसने सन्तोष की गहरी साँस ली—मालूम होता था, वातावरण की सम्पूर्ण स्वच्छन्दता को वह पी जाना चाहती है।

पहाड़ियों की चहारदीवारी से घिरा हुआ देहाती प्रदेश; कठोर चट्टानों से घिरी हुई हरियाली, झरनों का छलछलाता पानी; मृत्यु की छाया में जैसे जीवन खेल रहा था। इसी जीवन से एम्मा का संसर्ग स्थापित हुआ। वह थी, साथ में एक नर्स थी, चार्ल्स भी था। घर का पालतू कुत्ता भी आया था; मगर रास्ते में ही अपना बन्धन छुड़ाकर वह भाग गया। चार्ल्स ने बहुतेरा पुचकारा-चुमकारा, सीटियाँ भी दीं; मगर उसने फिरकर नहीं देखा। एम्मा उसे बहुत चाहती थी, जीवन की झुँझलाहट उसके साथ प्रेम में बदल जाती थी। चार्ल्स उसे भी सँभालकर न रख सका। शेष मार्ग उदासी और झुँझलाहट में पूर्ण हुआ।

एक होटल में आकर तीनों ठहरे। होटल न कहकर छोटी-मोटी

सराय उसे कहना चाहिए। एक बार हैज़े का प्रकोप फैला था। नगर छोड़कर आये हुए कुछ लोगों को टिकाने के लिए कच्चा-पक्का प्रबन्ध कर दिया गया था। होटल कहिए चाहे सराय, पहले-पहल इसकी नींव इसी तरह पड़ी थी और तब से अब तक कोई न कोई इसमें बना ही रहता है। कभी कोई शिकारी आ जाता, कभी कोई रोगी। घुमक्कड़ तबीअत के लोग भी उसे अपने चरणों से पवित्र करते रहते थे। इसके साथ ही एक छोटी-सी दूकान भी है। दूकान और सराय, दोनों, साथ-साथ चलते हैं। दूकान के मालिक फक्कड़ तबीअत के बीबी-बच्चोंवाले आदमी हैं। उनके आचार और विचारों के बीच शिष्ट-सभ्यता रेखा खींचने में सफल नहीं हो सकी है। धर्म और सदाचार का रंग उनसे दूर रहता है। अपने ही रंग के कपड़े वे पहनते हैं, अपने ही रंग में वे मस्त रहते हैं। सराय की विधवा मालकिन से छींटे-बाज़ी चलती रहती है। सराय और दूकान की तरह ये दोनों भी साथ-ही-साथ चलते हैं। हृदय की धड़कन के साथ दोनों की व्यावसायिक प्रतिद्वन्द्विता भी चलती है, और जीवन भी।

इन दोनों के अलावा एक व्यक्ति और था। दूकान-मालिक के साथ वह रहता था। संगीत से उसे प्रेम था, कभी-कभी गुनगुना भी लेता था; लेकिन उसका जीवन-संगीत दूकान और सराय की सीमाओं में बँधकर रह गया था। उसकी अपनी बात दूकान-मालिक और सराय की विधवा के रग में डूबकर रह जाती थी। अपने को वह उभारता था—आशाओं के सहारे, ऐसी आशायें जो सुदूर भविष्य में स्थित थीं, जिनका आकार-प्रकार अस्पष्ट हो चला था। संगीत के द्वारा वह इन आशाओं के स्पर्श का अनुभव करना चाहता था। उपन्यास-कहानियों के चरित्रों में भी, कभी-कभी, उनकी प्रतिध्वनि सुनाई पड़ जाती थी।

एम्मा उसी की ओर सबसे अधिक आकर्षित हुई। दोनों का व्यक्तित्व उभार चाहता था। ज़मीन भी दोनों की एक थी और इस ज़मीन से उत्पन्न असन्तोष भी। यह सब होते हुए भी दोनों में अन्तर था—विरोधी दिशा का अन्तर। एम्मा गद्य चाहती थी, वह पद्य। वह पद्य को उभारकर रखता था और एम्मा गद्य को। एम्मा उसके पद्य को गद्य बनाना चाहती थी, वह उसके गद्य को पद्य। संगीत और साहित्य को लेकर दोनों घण्टों बातें करते। अन्त में वह अपने पद्य को लेकर चला जाता, एम्मा अपने गद्य को।

एम्मा को पद्य से, कोमलता से, चिढ़-सी थी। अपने कोमल नारी-शरीर से भी वह समझौता नहीं कर पाई थी। उसे कठोर बनाने के लिए, जान-बूझकर, अनेक कष्ट उसने अपने शरीर को दिये हैं। इसके लिए अपने को भी कोसा है, माता-पिता को भी। पति का व्यक्तित्व भी आर्द्र बनकर उसके सामने आया था। जीवन के ताल-संगीत से वह ऊब चुकी थी। उसे वह पुरुष बनाना चाहती थी।

वायु-परिवर्तन चार्ल्स के लिए काफ़ी महँगा पड़ा था। हाथ तंग हो जाने से परेशान था। एम्मा का पीला चेहरा और क्षीण शरीर देखकर चिन्ता की रेखा उसके चेहरे पर दौड़ जाती थी। होनेवाले बच्चे का ख़याल फिर आता था। इस परेशानी में कुछ मिठास भी थी। उसे विश्वास था, लड़का ही होगा। हृदय गुदगुदा उठता था। जेबों का टटोलना छोड़ पहुँचता एम्मा के पास। जो कुछ भी हाथ आता, उसी को पकड़ भूल जाना चाहता। कभी-कभी, कातर दृष्टि से, दूर खड़ा, उसे देखा करता—मानो कोई बालक, मिठाई पाने की आशा में, मा के इशारे की प्रतीक्षा कर रहा हो।

एम्मा के लिए यह एक ऐसा बोझ था, जिसे वह स्पष्ट नहीं कर सकी थी। तरल जीवन का जैसे यह एक अभिशाप था। निरे कौतुक को सन्तान में परिणत होने की सम्भावना को लेकर, शुरू-शुरू में, उसे कुछ आश्चर्य हुआ था। हृदय में गुदगुदी-सी भी होती थी। दर्द था, पर मीठा-मीठा। लेकिन अब वह मिठास निरी आशङ्का बनकर रह गया था। एक ऐसा बोझ जिसे वह उतार फेंकना चाहती थी।

खाना खाते समय चार्ल्स रोज़ एम्मा से बातें करता था। अपने विश्वास को साकार और ठोस सम्भावना के रूप में सामने रखता था। बचपन अठखेलियाँ करता हुआ सामने आ जाता था। बचपन ही नहीं; लड़के का पूरा जीवन सजीव हो उठता था। मालूम होता था, धूल में लोट-पोटकर वह बड़ा हो गया है—सामने बैठा भोजन कर रहा है। उसी के मुँह से मा उसके जीवन की कहानी सुन रही है।

चार्ल्स की बातें एम्मा के हृदय में प्रवेश नहीं कर पाती थीं। हृदय के निकट आते-आते वे तरल होकर जैसे बह जाती थीं। बिखरे कणों में से कुछ को उसके मस्तिष्क ने पकड़ लिया। सन्तान के बारे में एक क्रमविशेष उसके मस्तिष्क में बँध चला। वह ख़ुद जो कुछ नहीं बन सकी, वही उसकी सन्तान बनेगी। लड़का ही उसके होगा, वायु के हलके झकोरों से काँप उठनेवाली लता नहीं।

और एक दिन, सूरज की लाली के साथ-साथ, उसका बोझ हलका हुआ। चार्ल्स ने देखा—वह लड़की थी। एम्मा देखने तक का साहस न कर सकी।

लालन-पालन के लिए बच्ची एक दाई को सौंप दी गई।

(६)

चार्ल्स की सम्पूर्ण आशाओं ने, उत्साह और उछाह ने, इतनी कठिनाइयों और उलझनों के बाद, एम्मा के गर्भ से जन्म लिया—स्त्री-रूप में। इसके लिए वह तैयार नहीं था, एम्मा उससे भी कम तैयार थी। उसके जीवन की असमर्थता, उसकी स्थिति का सम्पूर्ण व्यङ्ग, साकार रूप में प्रत्यक्ष होकर जैसे सामने आ गया था। वह उसे देख तक न सकी। उसके जन्म लेने की असह्य वेदना ने उसकी चेतना पर अंधकार का परदा डाल दिया।

लेकिन इससे औरों के उत्साह में कमी नहीं पड़ी। दूकान-मालिक बहुत प्रसन्न था। संगीत-प्रेमी युवक को भी जैसे साकार कविता मिल गई थी। कई दिन तक लड़की के नामकरण को लेकर बहस होती रही। सगीत-प्रेमी युवक की वीणा की झङ्कार दूकान-मालिक के ढोल ताशों में गुम हो जाती थी। वह लड़की का बड़ा-सा नाम रखना चाहता था। उसकी अपनी दूकान का साइनबोर्ड भी कोई कम बड़ा न था। उसके लड़कों में भी एक का नाम नेपोलियन था, दूसरे का रूसो। बातें उसकी भले ही छोटी हों; लेकिन उसके कहने का ढंग छोटा नहीं होता था। कोई क्या कहता है, इससे उसे कोई मतलब नहीं; कैसे कहता है, यही वह देखता था। उपन्यास-कहानी वह पढ़ता था। चरित्र उसे याद नहीं रहते थे, उनकी ओर वह ध्यान भी नहीं देता था, उनके कथोपकथन अवश्य उसे अच्छे लगते थे। उनकी बातों को लेकर ही वह आगे बढ़ता था।

नामों की दृष्टि से दूकान-मालिक नेपोलियन से नीचे नहीं उतरता था, संगीत-प्रेमी दीर्घ निश्वासों से आगे नहीं बढ़ता था, चार्ल्स लड़की के

नाम के द्वारा अपनी मा की स्मृति को अमर करना चाहता था। एम्मा उसका विरोध करती थी। नामों का शौक़ उसे था, साधारण तरकारियों के असाधारण नाम उसने एक दिन रक्खे थे; लेकिन उसकी लड़की के नाम को लेकर जो मकड़ी का जाला बुना जा रहा था, वह उसे अच्छा नहीं लगता था। नाम वह चाहती थी, सबके उत्साह से उत्साहित होकर, उसकी यह चाह आगे भी बढ़ी थी; लेकिन वह ऐसा नाम चाहती थी जो इस मकड़ी के जाले को तोड़ दे या जिसके सामने यह जाला टिक न सके। इस जञ्जाल से ऊपर उठ स्वतत्र रहने की जिसमें सामर्थ हो। एकाएक, एक दिन सोचते-सोचते, उसे याद आया—वर्था। कहाँ, किस जगह और किसके मुँह से उसने यह नाम सुना था, ठीक याद नहीं पड़ा। नाम जितने अप्रत्याशित रूप में उसके सामने आया था, उतना ही उसे बड़ा मालूम होता था। जितना ही सोचती थी उतना ही इस नाम पर आश्चर्य होता था। इससे अधिक उपयुक्त नाम और न होगा।

लड़की दाई के पास थी, उसका नाम एम्मा के पास। नाम के मोहक आकर्षण ने लड़की की याद को उभार दिया। इस उभार को अनिच्छापूर्वक एकाध बार उसने टालना चाहा; लेकिन सफल न हो सकी। न किसी से कुछ कहा, न सुना, न अपने गिरे हुए शरीर की ओर ही देखा। लड़की को देखने के लिए चल दी। कच्ची-पक्की देहाती बस्ती के दूसरे छोर पर दाई रहती थी।

दोपहर का समय था। धूप भी तेज़ थी और हवा भी। दोनों का सामना करती एम्मा घर से निकली। कुछ ही दूर आगे बढ़ी थी कि सगीत-प्रेमी युवक मिल गया। बग़ल में काग़ज़ों का एक पुलिन्दा दबाये था। मुस्कराहट से एम्मा का उसने अभिवादन किया। साथ भी

उसने एम्मा का दिया। दोनों लड़की को देखने चले। उसके सहारे एम्मा के रोगी शरीर ने कच्चे-पक्के और ऊबड़-खाबड़ रास्ते को पार किया।

कुछ उड़ती हुई दृष्टियों ने दोनों को जाते देखा और आँखें बन्द कर लीं। दबे ओठों से फुसफुसाहट शुरू हुई—अभिसार करने जा रहे हैं!

एम्मा के लिए यह अभिसार ही था। एक गंदे-से मकान के सामने जाकर वह खड़ी हो गई। एक स्त्री दरवाज़े के पास खड़ी थी। कई बच्चे उससे जूझ रहे थे। पूछने पर पता चला, एम्मा का बच्चा अन्दर है।—

एम्मा ने घर में प्रवेश किया। बच्चा झूले में पड़ा सो रहा था। एम्मा ने उसे उठा लिया। गोदी में लेकर झुलाने लगी। संगीत-प्रेमी युवक भी वहीं खड़ा था। उसने एम्मा को देखा। उजड़े घर की लक्ष्मी वह दिखाई पड़ी—कहाँ यह टूटा-फूटा घर, कहाँ एम्मा! असम्भव सम्भव होकर सामने आ गया था। एम्मा की गोदी में उसका बच्चा नहीं, जैसे वह स्वयं झूल रहा था। मुग्धभाव से एम्मा को देखने लगा। बच्चे को झुलाते-झुलाते एम्मा की दृष्टि उसकी ओर फिरी। ठिठककर रह गई। अपनापन जैसे उसे याद आ गया। बच्चे को अपने से दूर कर दिया। साफ़-सुथरे कपड़ों पर लगी मिट्टी को झाड़कर जैसे अलग कर रही हो।

दाई जैसे इसी क्षण की प्रतीक्षा में थी। आगे बढ़ी और बच्चे को अपनी गोद में ले लिया। उसकी गोद में पहुँच जाने पर एम्मा ने देखा—लड़की के गरदन के पास कुछ घाव-सा हो गया है।

दाई ने उस घाव को अपने हाथ से ढककर आँखों की ओट करने का प्रयत्न किया। फिर बोली—"कुछ नहीं। पसीना आने से ऐसा हो

गया है। दिन में कई बार इसे नहलाती हूँ; लेकिन साबुन न होने से......"

साबुन के लिए एम्मा ने बटुवे में हाथ डाला। जितने पैसे पकड़ में आये, दे दिये। एम्मा ने पैसे दिये, दाई ने धन्यवाद। तेज़ क़दमों से एम्मा बाहर निकली, अपने घर की ओर चल पड़ी। संगीत-प्रेमी युवक भी एम्मा की पद-ध्वनि पहचानता उसका साथ दे रहा था। यही उसके जीवन का सूत्र था, इसी को पकड़कर वह आगे बढ़ रहा था—कहाँ, किधर, इसे न उसने स्पष्ट किया था, न स्पष्ट करना चाहता था। सब कुछ उसके लिए दूर चला गया था—वह था और उसकी पदध्वनि। तरल गति से उसका अनुसरण कर रहा था। उसे पता ही नहीं चला कि कब एम्मा का घर आ गया और अपनी पदध्वनि के साथ कब वह विलीन हो गई। चार्ल्स की आवाज़ ने उसके स्वप्न को भङ्ग कर दिया, आँखें खोलकर उसने देखा और काग़ज़ के पुलिन्दे को सावधानी से सँभालते हुए वह अपनी दूकान की ओर लौट गया।

पदध्वनि के संगीत ने पहली बार उसके जीवन में प्रवेश किया था। इससे पहले संगीत का प्रेम तो उसके पास था, संगीत न था। जो कुछ थोड़ा-बहुत था भी, वह उभर नहीं पाता था। भीतर-ही-भीतर घुमड़कर वह रह जाता था। उसे व्यक्त वह कभी न कर सका। इसी तरह उसका जीवन बीत रहा था। जीवन का यह अस्फुट रूप दूकान-मालिक के लिए एक असाधारण विशेषण बन गया था। बड़े ढंग से कही गई उनकी छोटी बातों के आगे उसका स्वर सविनय अवज्ञा भी नहीं कर पाता था। वह उनका एक-मात्र श्रोता था—बिनीत, सुशिक्षित और सुसभ्य!

इन तीनों विशेषणों की ताल पर उसका मूक जीवन-संगीत चल रहा

था—कहें, चलना चाहता था; पर घूम-घूमकर रह जाता था। ऐसी अवस्था में एम्मा की पदध्वनि ने उसके जीवन में प्रवेश किया।

(७)

विनय, सुशिक्षा और शिष्टता—संगीत-प्रेमी युवक सभी कुछ चाहता था। जीवन के बोझिल अलङ्कार के रूप में वह इन्हें नहीं लेता था। उसे कुछ दुःख था भी तो इस बात का कि दूकान-मालिक ने सहज ही इन दुर्लभ विशेषताओं से उसे विभूषित कर दिया था। न केवल इतना ही, वरन् दूकान-मालिक जब-तब इन विशेषताओं को घोषित-प्रचारित भी करते रहते थे। चार्ल्स बॉवेरी, एम्मा आदि के सामने जब वे उसके इन गुणों का बखान करना शुरू करते, उसके गालों पर लाली दौड़ जाती थी। अविनीत, अशिष्ट और कुपढ़ बन-कर यदि वह उस समय कहीं भागकर जान बचा पाता, तो अच्छा होता!

दूकान-मालिक की उपस्थिति में ही ऐसा होता था। उसके न रहने पर वह विनम्र भी बनना चाहता था, शिष्ट और सुशिक्षित भी। एम्मा के प्रति उसके हृदय में जो आकर्षण पैदा हो गया था, उसकी पदध्वनि ने जिस मनोरम संगीत की सृष्टि की थी, उसे वह अपने हृदय में ही छिपाये रखना चाहता था। हृदय की उमङ्ग को व्यक्त करते उसे सङ्कोच मालूम होता था। उसे डर था, कहीं एम्मा उसे अविनीत और असभ्य न समझ बैठे। एम्मा के सामने अपने को उसकी परछाईं से आगे नहीं बढ़ने देता था। अपने को व्यक्त करने के लिए अप्रत्यक्ष साधनों को वह काम में लाता था। एम्मा के सामने वह नहीं आता

था, आता भी था तो बहुत कम। उसके अछूते सौन्दर्य को, अछूती आभा को, अछूता ही रखने में वह विशेष सतर्कता से काम लेता था। एम्मा का स्पर्श वह नहीं करता था, उसके स्पर्श पाई हुई चीज़ों को हृदय से लगाता था। एम्मा के आने का आभास पाकर वह छिप जाता था, चले जाने पर उसके पद-चिह्नों में लोटकर अपने को कृतार्थ करना चाहता था। यहाँ तक कि एम्मा की ध्वनि को वह सुनी-अनसुनी-कर टाल दे सकता था; लेकिन चार्ल्स बॉवेरी की नहीं। एम्मा का पति होने का सौभाग्य चार्ल्स को प्राप्त हुआ है, इतना ही उसके लिए पर्याप्त था। एम्मा देखती रह जाती थी और वह चार्ल्स के साथ चल देता था।

जाड़े के दिन आ चले थे। वातावरण की गर्मी को शीत ने ढक लिया था। शीत के प्रभाव को दूर करने के लिए एम्मा अँगीठी का सहारा लेती थी। पास रक्खी अँगीठी में कोयले धधकते रहते, शीत की कल्पना को अपने से दूर रखने में वे सहायता देते। बायें हाथ की हथेली पर ठोड़ी टेके एम्मा खिड़की के पास बैठ जाती। आँखें अपना काम कानों को सौंप बन्द हो जातीं और एम्मा किसी की पदध्वनि की प्रतीक्षा में बैठी रहती। अस्पष्ट आहट धीरे-धीरे स्पष्ट हो चलती, हृदय भी उसकी गति का साथ देता। आँखें खुलती थीं उस समय, जब पदध्वनि स्पष्ट हो उठने के बाद विलीन होने लगती थी—झुटपुटे-से में वह देखती, एक छाया है जो चली जा रही है। झुँझलाकर एका-एक उठती, अपनी दासी को पुकारती—खाना जल्दी तैयार करो।

खाना खाने के समय दूकान-मालिक आ जाते थे। साथ में संगीत-प्रेमी युवक को लाना न भूलते थे। उसके बिना जैसे वे अधूरे रहते

थे। खाना खाने के समय दुनिया भर की मिठाइयों और चटनियों के नुस्ख़े वे दुहरा जाते थे। मालूम होता था—एम्मा उनकी दूकान पर मिठाई और चटनियों का सौदा करने आई है। मेज़ पर लगे खाने की प्रत्येक चीज़ मानो एम्मा के रसोईघर से नहीं, दूकान-मालिक की दूकान से निकलकर सामने आई है। ग्राहक को तैयार करने के लिए वे उसका बखान कर रहे हैं।

संगीत-प्रेमी युवक को यह देखकर बड़ा आश्चर्य होता था। आश्चर्य से अधिक झुँझलाहट होती थी। बातें करने के लिए उसके सामने बड़े-बड़े विषय भी छोटे पड़ जाते थे और दूकान-मालिक थे कि छोटे-छोटे विषयों को भी बड़ा बनाये दे रहे थे। वह उत्साह और सङ्कोच के बीच झूलता रह जाता था और दूकान-मालिक के प्रगतिशील शब्द कहीं रुकने, ठिठकने का नाम न लेते थे। एम्मा के मुँह की ओर सीधे देखने का भी उसे साहस नहीं होता था। नीची दृष्टि एम्मा के कपड़ों की कोरों का साथ देती थी। एकाएक उसने देखा, एम्मा के कपड़े के छोर पर उसका पाँव पड़ गया है। दूसरे ही क्षण उसने अपना पाँव हटा लिया—जीवहत्या के भय से मानो वह काँप उठा हो!

आठ बजे के क़रीब दूकान-मालिक का नौकर आ उपस्थित होता। दूकान बन्द करने की याद दिलाने के लिए वह आता था। दूकान-मालिक को उसका चेहरा अच्छा नहीं लगता था। उन्हें शिकायत थी कि उसके पर निकलने लगे हैं। एम्मा से वे बोले—"आपको नहीं मालूम, हज़रत बहुत ऊँचे उड़ने लगे हैं। काम-धाम कुछ होता नहीं, जब देखो तब आपकी दासी के साथ गप्पें लड़ाया करते हैं। मालूम होता है...!"

फा० ३

इसके बाद वह संगीत-प्रेमी युवक की शिष्टता और सुशिक्षा
उभारकर रखते। वह कटकर रह जाता। एम्मा को भी यह अच्छा
नहीं लगता था। किसी तरह सम्भव होता तो अपने अञ्चल में छिपाकर
दूकान-मालिक की नज़रों से उसे दूर कर देती। लेकिन ऐसा हो नहीं
पाता था। दूकान-मालिक के चले जाने पर दोनों सन्तोष की साँस
लेते थे। एम्मा को उसे अपने अञ्चल में छिपाने की ज़रूरत नहीं रहती
थी, युवक को भी वास्तविक शिष्टता-नम्रता का परिचय देने का अवसर
मिलता था।

दूकान-मालिक के चले जाने पर दोनों को अपने बीच शून्य का
अनुभव होता। दूकान-मालिक से अधिक प्रिय अवलम्ब की उन्हें ज़रूरत
होती थी। ताश का खेल कुछ देर काम चला देता था, फिर वह भी
एकरस हो चलता। ताश के पत्ते फेंक एम्मा उठ खड़ी होती। स्थान
परिवर्तन के द्वारा कुछ नवीनता लाने का प्रयत्न करती। मेज़ पर पड़े
अख़बार के पन्नों को उलटना शुरू करती। युवक भी पास खिसक
आता। अख़बार के किसी चित्र को देखना शुरू करते। चित्र जितना
ही रंगीन होता, उतना ही उन्हें अपना जीवन कलापूर्ण मालूम होता।
कभी-कभी एम्मा उसके हाथ में अख़बार दे देती, कहानी-कविताओं को
पढ़ने के लिए कहती। घंटे इसी तरह बीत जाते। ऐसे समय में चार्ल्स
या तो बाहर चला जाता था अथवा कुछ देर पठन-पाठन के बन्द होने
की प्रतीक्षा करता, फिर धीरे-धीरे ऊँघने लगता। अँगीठी की आग भी
ठण्ढी पड़ चलती थी, चाय का दौर भी समाप्त हो जाता था—गरम
चाय किसी के ओठों का इन्तज़ार करते-करते कड़ुवी हो चलती थी।
एकाएक युवक सतर्क हो उठता। उसे ख़याल आता, एम्मा के पति

सो रहे हैं। पढ़ने से उनकी नींद में बाधा पड़ सकती है। धीमा पड़ते-पड़ते उसका स्वर अस्पष्ट हो चलता या किसी ज़रूरी काम की याद आ जाने से उठ खड़ा होता। एम्मा की आँखें उसके विलीन होते हुए आकार को देखती रहतीं।

इस ज़मीन पर दोनों मिलते थे। मिलते-मिलते इस तरह मिलने के कुछ अभ्यस्त भी हो गये थे। न मिलने पर 'अभाव' का अभाव अखरता था, मिलने पर 'अभाव' का आकार सामने आ जाता था। 'अभाव' का यह रूप, अभाव की सम्पूर्ण वेदना को लिये हुए भी, आकर्षक हो उठा था। इसी आकर्षण के सूत्र को पकड़कर जीवन चल रहा था—अभावों की गोद में झुँझलाता हुआ।

जन्मदिन के उपलक्ष्य में एम्मा ने संगीत-प्रेमी युवक को एक उपहार दिया। मौन-स्वीकृति के साथ युवक ने उसे ग्रहण किया। यह उपहार उसके लिए कला की एक वस्तु बन गई थी। जिस किसी से मिलता, उसे दिखाता। इस बारीकी से उसकी विशेषताओं का वर्णन करता कि लोग दंग रह जाते, कभी-कभी उससे उकता भी उठते। कुछ ने धीमे स्वर में शङ्का भी प्रकट की—निश्चय ही वह एम्मा से प्रेम करने लगा है!

इस शङ्का को भी उसने हृदय से लगाया। भीतर-ही-भीतर वह चाहता था, इस शङ्का को किसी तरह सत्य में परिणत कर सके तो अच्छा हो। घोषित-प्रचारित भी उसे वह करना चाहता था; लेकिन हिर-फिरकर रह जाता था। कितनी ही बार उसने कितने ही इरादे किये; दरजनों पत्र लिखे, लिखकर फाड़ भी डाले; लेकिन वह दुर्लभ क्षण स्थगित ही होता गया। स्थगित होने का कारण उस दुर्लभ क्षण

में इतना नहीं था, जितना कि ख़ुद उसमें। सामने आने पर अपने को ही वह उसके उपयुक्त नहीं पाता था। जितना ही वह अपने को उसके उपयुक्त बनाने का प्रयत्न करता था, उतना ही वह ऊपर चढ़ जाता था। एम्मा उसके लिए इस लोक की नहीं, दूसरे लोक की चीज़ बन गई थी।

एम्मा उसकी छाया को और अधिक स्पष्ट करके देखना चाहती थी। छाया न होकर वह एक ठोस पदार्थ है, स्पर्श के साथ इसका अनुभव वह करना चाहती थी। लेकिन अनुभूति के इस रूप को वह प्रेम समझकर हृदय से नहीं लगा सकी। जितनी शान्त और मन्थर गति से वह आता था, वह और कुछ भले ही हो, प्रेम का आगमन नहीं हो सकता। अभिसार में नूपुर की झङ्कार बाधा दे सकती है; लेकिन अँधेरी रात, घनघोर घटा और विद्युत्शिखा का आँखों को झपकाकर छिप जाना—यह सब भी तो वहाँ नहीं है। वहाँ तो केवल एक छाया है, एक पत्ते को हिलाने में भी जो समर्थ नहीं। उसकी मूक निस्तब्धता, कभी-कभी, मालूम होता, प्रेम के आगमन की पूर्व सूचना दे रही है। घनघोर घटा आया ही चाहती है। दूसरे ही क्षण जान पड़ता—नहीं, यह उजड़े हुए उत्सव की रात की उदासी है। उत्साह और निराशा—किस नाम से इसे पुकारे, कुछ समझ नहीं पाती थी। उत्साहित होने पर निराशा उसे आ घेरती थी, निराशा को फिर वह उत्साह से सँभालना चाहती थी। न इसे छोड़ते बनता था, न उसे। आशा की ज़मीन पर उसकी निराशा खड़ी होती थी, निराशा की ज़मीन पर आशा और इन दोनों के सहारे, कच्चे सूत का छोर पकड़े, दिखाई पड़ती एक क्षीण आशा—प्रेम की, उस प्रेम की जो उत्ताल तरङ्गों से

खेलता है ! जीवन की स्तब्धता को भङ्गकर अभिसार की जो सृष्टि करता है !

(८)

फ़रवरी का महीना था । बरफ़ पड़ रही थी। चारों ओर की हरियाली को सफ़ेदी ने ढँक लिया था। चेहरों की लाली भी इस शीत के आगे पीली पड़कर रह गई थी। आम थे, लेकिन पाल के दबे हुए—मिठास डाल के आमों से भी अधिक। ओठों पर चिपककर रह जाती थी।

मिठास के साथ-साथ कौतुक ने भी जीवन में प्रवेश किया। पास ही, एकाध मील की दूरी पर, कोई उत्साही सज्जन पनचक्की लगवा रहे थे। ज़मीन वहाँ की ऊबड़-खाबड़ थी, पथरीली तो थी ही, खेती वहाँ हो नहीं सकती थी, इसी लिए पनचक्की का आयोजन हो रहा था। दूकान-मालिक उसे लेकर बहुत उत्साहित हो उठे थे। पनचक्की के उज्ज्वल भविष्य का पूरा चित्र उनके सामने था। अपने को ही नहीं, उन्होंने चार्ल्स बॉवेरी और एम्मा में भी इसके सहारे उत्साह का सञ्चार कर दिया था। इस उत्साह से और घनिष्ठ परिचय प्राप्त करने के लिए यह तय हुआ कि पनचक्की को देखने चला जाय।

दिन भर तैयारियाँ चलीं। व्यस्तता सजीव होकर जैसे वहाँ उतर आई थी। उत्साह ने घर से बाहर भी क़दम रक्खे, कुछ दूर तक सब लोग चले भी; लेकिन और आगे न बढ़ सके। कुहरा इतना अधिक था कि सामने कुछ दिखाई न पड़ता था। वापस लौट आये। घर की चहारदीवारी के अन्दर जमनेवाली बैठक भी जैसे कुहरे में खोकर रह

गई। एम्मा अपने कमरे के अन्दर पड़ रही। चार्ल्स किसी मरीज़ को देखने चला गया था।

कमरे का सूनापन एम्मा को अखर रहा था। दो कल्पना-चित्र उसके सामने थे—एक चार्ल्स का, दूसरा सङ्गीत-प्रेमी युवक का। चार्ल्स ने उसके जीवन में पथप्रदर्शन का जैसे काम किया था। उसीं के संसर्ग-स्पर्श के सहारे उसने पहला क़दम उठाया था। जीवन की आंशिक झाँकी उसने पाई थी। उसे पूरा करने के लिए ही उसने चार्ल्स का साथ दिया था। लेकिन वह झाँकी पूरी न हो सकी, चार्ल्स तक ही सिमट-कर वह रह गई। चार्ल्स ही उसकी दुनिया बन गई। इस दुनिया में कोई नई चीज़ आई भी तो वह थी बर्था, उसकी लड़की!

वीणा के सारे तार झनझना उठे। संगीत जैसे कराहकर बैठ गया। उसके घुटने टूट गये थे। खण्डित वीणा फिर खींचकर लाई सङ्गीत-प्रेमी युवक को! उसकी छाया उभरकर सामने आई। चार्ल्स ने वीणा को खण्डित किया था, सङ्गीत-प्रेमी युवक उसकी टूटी झङ्कार पर मुग्ध हो उठा था। इस मुग्धता को हृदय से लगाये, अलस भाव से, वह पड़ी रही।

आधी रात गये चार्ल्स मरीज़ को देखकर लौटा। एम्मा के साथ न आकर एम्मा के पति के साथ ही वह युवक रह गया था। चार्ल्स के आने की आहट सुन, एम्मा ने आँखें बन्द कर लीं। गहरी नींद में जैसे सो रही हो। आहट के और अधिक निकट आने पर उसने आँखें खोलीं—जैसे गहरी नींद आहट से उचट गई हो। सिर भारी होने की भूमिका के बाद अनमनेपन से उसने पूछा—"साथी तुम्हें ख़ूब मिला है। रोगी का रोग चाहे दूर न हुआ हो; लेकिन तुम्हारा रास्ता अच्छी तरह कट गया होगा!"

"साथी मिला तो था", चार्ल्स ने उत्तर दिया; "लेकिन उसने साथ न दिया। कुहरे ने उसका भी जी भारी कर दिया था। वह अपने घर चला गया।"

एम्मा के ओठों पर मुस्कराहट खेल गई। सिर की पीड़ा विलीन हो गई। गहरी नींद का अभिनय सच्ची नींद की रचनाकर चला गया।

दूसरे दिन अँधेरे-मुँह एम्मा अँगड़ाई लेकर उठ बैठी। आँखें खुले अभी देर नहीं हुई थी। दरवाज़े पर किसी के थपथपाने की आवाज़ सुनाई पड़ी। दरवाज़ा खोला गया। सूर्य की प्रथम किरणों की तरह एक मोटे थलथल व्यक्ति ने प्रवेश किया। वह बिसाती था। यह उसका आज का रूप था। कल वह क्या था, यह कोई नहीं जानता। अनेक रूपों में अनेक लोगों ने उसे देखा है। अनेक रूपों में एक बात उसके बारे में निश्चित थी। वह यह कि वह बड़ा हिसाबी है—बे-हिसाबी चीज़ों का भी वह ऐसा हिसाब रखता है कि देखनेवाले दंग रह जाते हैं। विनम्र भी वह है। गरदन झुकाते-झुकाते उसकी कमर भी झुक गई है—देखने में विनम्रता की साकार प्रतिमा मालूम होता है!

अभिवादन के बाद उसने कहना शुरू किया—"मेरा दुर्भाग्य है जो आज से पहले आपके दर्शन नहीं कर सका। मैं और मेरी छोटी-सी दूकान, दोनों ही आपकी कृपा से वञ्चित रहे", विनम्र भूमिका के सहारे वह आगे बढ़ा—"एक कोने में मैं पड़ा हूँ। लोगों का ध्यान उधर नहीं जाता। आप भी उधर न आ सकीं। जो भी आप चाहें, वही आपको लाकर दे सकता हूँ। महीने में कम-से-कम चार फेरे शहर के होते रहते हैं।"

कितनी ही चीज़ें एम्मा को उसने दिखाईं। एम्मा ने एक-एक

करके उन्हें देखा। काम की कोई चीज़ न निकली। बोली—"अभी मुझे किसी चीज़ की ज़रूरत नहीं है। होने पर कहूँगी।"

"अच्छी बात है," बिसाती ने कहा, "आपसे परिचय हो गया यही बहुत है। उम्मीद है, आप मुझे भूलेंगी नहीं।"

अपनी चीज़ों को उसने सँभालना शुरू किया। मुँह से उसके शब्द अब भी निकलते जा रहे थे। अपनी चीज़ों को छोड़ चार्ल्स बॉवेरी के एक मरीज़ को लेकर वह कह रहा था—"डॉक्टर साहब को अच्छा मरीज़ मिला है। खाँसी उसे क्या आती है मानो भूकम्प आ जाता है जब खाँसी नहीं थी, तब ख़ुद भूकम्प बना हुआ था। इतनी शराब पीता था कि हद नहीं। सभी उससे परेशान थे!"

परेशानी का हिसाब आगे बढ़ा। वह कह रहा था—"क्या बतायें आजकल का मौसम बड़ा ख़राब है। हवा ऐसी बिगड़ी है कि..."

उसकी बिगड़ी हवा को सुनी-अनसुनी करते हुए एम्मा ने अपनी नौकरानी को पुकारा—चाय लाने को उससे कहा। यथावसर योग्य सेवा पाने के आश्वासन का हिसाब लगाता बिसाती चला गया!

चाय पीने के बाद एम्मा और भी स्वस्थ हो गई। वह इतनी मगन थी कि उसे अपने पर आश्चर्य होता था। व्यर्थ ही वह अब तक अपने को कोसती रही, जब-तब इस शरीर को उपेक्षा की दृष्टि से देखती रही।

आईने के सामने वह पहुँची। काफ़ी देर तक अपने अङ्ग-प्रत्यङ्ग को देख-देखकर मुग्ध होती रही। एकाएक किसी के आने की आहट सुन वह चौंकी। घूमकर देखा—सङ्गीत-प्रेमी युवक सामने खड़ा था।

एम्मा ने उसे देखकर भी नहीं देखा। आईने का धुँधलापन मिटाने के काम में उसने अपने को व्यस्त कर दिया। युवक कुछ देर खड़ा

रहा। फिर एक कुरसी पर बैठ गया। वह अपनी उँगलियों को चटका-कर सीधा कर रहा था, एम्मा आईने की गर्द झाड़ रही थी। इसके बाद उसने सीने-पिरोने का काम उठा लिया।

युवक चुपचाप एम्मा को देख रहा था। एम्मा की मौन-व्यस्तता उसके लिए आकर्षक हो उठी थी। वाणी के अभाव में माधुर्य की कमी नहीं आई थी। दयनीय दृष्टि से एम्मा ने एकाध बार उसे देखा और अपने काम में लगी रही।

कुछ देर बाद युवक ने कहा—"मेरी नौकरी लग गई है। मुझे अब यहाँ से चला जाना होगा।"

एम्मा कुछ न बोली। वह चुप रही। युवक ने फिर कहा—"ग्रामो-फ़ोन के कुछ नये रिकॉर्ड आये हैं। यदि आप चाहें तो......"

"नहीं"—छोटा-सा उत्तर देकर एम्मा चुप हो गई। सुई का धागा ख़त्म हो चुका था। उसी को डालने में लग गई। पहला प्रयत्न असफल होते देख युवक से न रहा गया। इच्छा हुई, एम्मा की सहायता करे। लेकिन कुछ कहने-करने का साहस नहीं हुआ। अपनी उँगलियों को सीधा करता रह गया—इस बार उसके चटख़ने की भी आवाज़ नहीं आई।

एम्मा अपने घर के काम में लगी रही। बातें भी उसने घर के काम को लेकर ही कीं। अपने पति की भी उसे याद आई। कहने लगी—"न समय देखते हैं, न कुसमय, जब देखो तब मरीज़ों के साथ ही बीतता है। न खाने का ठीक समय है, न सोने का। इस तरह तो वे बीमार पड़ जायेंगे।"

बीमारी की आशङ्का सङ्गीत-प्रेमी युवक के लिए भी उतनी ही अप्रिय थी। वह भी व्यथित हुआ। एम्मा की तरह चार्ल्स का व्यक्तित्व

भी उसके लिए उतना ही आकर्षक था। उसके मुँह से निकला—"वे इतने अच्छे हैं..."

'इतने' की कोई सीमा नहीं थी। एम्मा भी उसमें डूबकर रह गई। सिर उभारने पर घर के काम-काज को उसने फिर देखना शुरू किया। पिछले दिनों की उपेक्षा से बहुत कुछ था। जो अस्त-व्यस्त हो गया था। नौकर को बुलाकर उसने सावधान कर दिया। अपनी लड़की बर्था को भी उसने दाई के पास से बुला लिया। उसका जीवन जीती-जागती गुड़िया बनकर उसकी गोद में जैसे आगया था। अधिकांश समय उसकी देख-भाल में बीतने लगा। जो कोई भी आता, उसके सामने गुड़िया सबसे अधिक उभरकर आती थी।

चार्ल्स को भी अब सब चीज़ें ठीक-ठिकाने और वक्त पर मिल जाती थीं। कोट के टूटे बटन पहले से ही टँके मिल जाते थे, जूते-टोपियों के लिए उसे इधर-उधर भटकना नहीं पड़ता था। अदृश्य हाथ उसका सारा काम कर देते थे। चार्ल्स को आश्चर्य भी होता था। मन-ही-मन उन अदृश्य हाथों के काम को देखना भी चाहता था। लेकिन ऐसा अवसर आ नहीं पाता था। कई बार ऐसा हुआ कि काम के बहाने ही उसने एम्मा को बुला लिया है। फिर कुछ नहीं अथवा याद नहीं रहा—कहकर उस कामविशेष को उड़ा देना पड़ा। अब इसकी भी सम्भावना नहीं रही थी। उसके ही काम में व्यस्त इन अदृश्य हाथों के साथ फिर से इस खेल को दोहराने का चार्ल्स को साहस नहीं होता था। जब-तब एम्मा के हाथ दिखाई भी पड़ते थे तो बर्था के लिए। उसके सामने एक क्षण को आते थे, बर्था को उसकी गोदी में छोड़ फिर विलीन हो जाते थे!

पास होते हुए भी इतनी दूर। एम्मा उसकी पहुँच से बाहर होती जा रही थी। चार्ल्स ने भी इसी दृष्टि से उसे देखना शुरू किया। साधारण स्त्रियों की तरह छोटी-मोटी बातों में उलझकर रह जानेवाली एम्मा नहीं है। वह संसार के लिए नहीं, संसार उसके लिए बना है। उससे इस तरह की आशायें करना व्यर्थ होगा। चार्ल्स एम्मा की उलझनों के बोझ को घटाना ही चाहता था, बढ़ाना नहीं।

एम्मा का शरीर भी चार्ल्स की इस दृष्टि का साथ दे रहा था। दिन-दिन वह सूक्ष्म होता जा रहा था। उसके काले बाल, बड़ी-बड़ी आँखें, सफ़ेद कमल की तरह मुख—उसका सम्पूर्ण अस्तित्व मूक साधना की प्रतिमूर्ति मालूम देता था। उसका नैसर्गिक आकर्षण हृदय को अपनी ओर आकृष्ट करता था, हृदय उसकी ओर आकृष्ट होता भी था; लेकिन पास जाने का साहस नहीं होता था। उसे धूलि-धूसरित करने की कल्पना चार्ल्स का हाथ खींच लेती थी।

चार्ल्स पर ही नहीं, उसके इस आकर्षण का प्रभाव औरों पर भी पड़ता था। भय-मिश्रित श्रद्धा से एम्मा को सब देखते थे। घर के काम-काज में उसकी व्यस्तता गृहिणियों के लिए एक आदर्श बन गई थी। चार्ल्स के कतिपय रोगी भी उसकी सहृदयता की प्रशंसा करते थे। दुःखी हृदय उसके कोमल व्यक्तित्व के सहारे अपने दुखों को भूल जाते थे। इसका सबसे अधिक प्रभाव पड़ा था संगीत-प्रेमी युवक पर। अपने प्रभावपूर्ण अस्तित्व का अनुभव इस रूप में एम्मा ने पहले कभी नहीं किया था।

प्रभावों की छाया, अकेले पड़ने पर, एम्मा का साथ छोड़ देती थी। आह होती थी और एक दीर्घ विश्वास। झुँझलाहट के रूप में इसकी

प्रतिक्रिया सामने आती थी। प्रभावपूर्ण व्यक्तित्व उसे अ लगता था, कुछ देर वह अपने को भूल भी जाती थी; लेकिन वह नहीं चाहती थी कि इस प्रभाव के कारण सब उससे दूर-ही-दूर रहें उसका अस्तित्व दिन-दिन एक छायामात्र बनता जा रहा था। वह अखरता था। मन-ही-मन चाहती थी, वह ज़मीन पर लोटे, धू धूसरित होकर सबके सामने जाये, मालूम हो कि वह इसी मि की बनी है। चार्ल्स उसे जितना ही अछूता समझता था, उतना वह मटमैली बनना चाहती थी—इस हद तक कि मिट्टी का ढेर समझकर वह उसे ठुकरा दे!

सगीत-प्रेमी युवक की उसे याद आई। उसकी नौकरी लग गई है वह भी अब चला जायगा। जाये—वह भी जाय। उसे कुछ न चाहिए।

एम्मा ने एक क्षण कुछ स्फूर्ति का अनुभव किया। फिर अप पलँग पर जाकर पड़ रही।

(९)

अप्रेल का महीना, वसन्त का प्रारम्भ। कुहरा विलीन हो गया थ बरफ़ ओस का मोती बनकर फूल-पत्तों के गले का हार बन चली थी सम्पूर्ण जीवन अभिसार के लिए जैसे तैयार हो रहा था। अपने हृद को सँवारे एम्मा भी खिड़की पर बैठी थी। गिरजे की घण्टियों विलीन होती हुई ध्वनि के साथ उसका अभिसार चल रहा था।

बचपन का चित्र सामने था—उसके अपने बचपन का भी, खिड़ से बाहर, कुछ दूर पर, दूसरे लड़कों का भी। आँख-मिचौनी का खेल

खेल रहे थे। उन्हें देखकर एम्मा को अपने बचपन की भी याद हो आई। छोटी छोड़कर उसकी मा चली गई थी। पिता उसके बचपन को बड़प्पन में परिवर्तित देखना चाहते थे। खेल-कूद में बीतनेवाले दिन घर को सँभालने में बीते। और आज—घर को सँभालने के दिन खेलकूद के दिनों की ओर भाग जाना चाहते हैं। बड़ी न होकर इन लड़कों की तरह वह भी छोटी ही होती तो कितना अच्छा होता!

लड़कों का खेल चल रहा था; खेल के साथ शैतानी बढ़ रही थी। वे दुनिया को गेंद बनाकर उछालना चाहते थे। पीछे रहना कोई न चाहता था। एम्मा का हृदय रह-रहकर मसोस उठता था। लड़कों के चञ्चल पाँव धरती को नहीं, जैसे उसके हृदय को रौंद रहे थे। आँखें बन्दकर एम्मा दूसरे लोक में पहुँच गई। एकाएक कुछ खटका पा उसकी आँखें खुलीं। देखा, लड़कों का खेल बिगड़ गया है। बड़े आदमी की छड़ी ने उन्हें तितर-बितर कर दिया है। उनकी शैतानी को दूर भगाने के लिए उसकी छड़ी घूम रही है, मुँह से काँटेदार फूलों की वर्षा हो रही है। एम्मा से न रहा गया। उठ खड़ी हुई। घर से बाहर निकल लड़कों के बीच पहुँच गई।

छड़ीवाले सज्जन इस देहाती बस्ती के बुज़ुर्ग थे। छड़ी के साथ-साथ उनके सफ़ेद बाल भी फहरा रहे थे। बस्ती को निर्मल करने का भार उनके कन्धों पर आ पड़ा था। बोझ अधिक था। कन्धों के साथ कमर भी कुछ-कुछ झुक चली थी। एम्मा को देखते ही वे ठिठक गये। बोले—"ओह, आप हैं! बड़े शैतान हो गये हैं ये सब...लेकिन आप बहुत सुस्त दीखती हैं। कहिए, तबीअत तो ठीक है न?"

"नहीं, मेरी तबीअत ठीक नहीं रहती," एम्मा ने कहा।

"आप—और तबीअत ठीक नहीं रहती। घर में डाक्टर..."

अपनी बात पूरी कर भी न पाये थे कि किसी साहसी लड़के चुपके-से आकर उनकी छड़ी को झटक दिया। एम्मा को छोड़ वे उस ओर लपके—"ठहर तो सही......बदमाश कहीं का!"

एम्मा मन-ही-मन मुस्कराई। लड़का पहुँच से बाहर हो चुका था उसे छोड़ एम्मा की ओर आये। कहने लगे—"बड़ा बदमाश है। के बढ़ई का लड़का है। बच्चे पैदा करना तो लोग जानते हैं, उ सँभालना नहीं। दिन भर आवारागर्दी करता रहता है!"

एम्मा चुप थी। उसे चुप देख वे भी चुप हो गये। बात बदल फिर कहने लगे—"बड़े बुरे दिन हैं। कोई कुछ नहीं समझता। ये देहाती—इनकी कुछ न पूछो। एक गाय बीमार पड़ी। समझे, कि की नज़र लगी है। आये मुझे बुलाने। मैं क्या करता। धीरे-धीरे गाँ के सभी ढोर-डंगर बीमार पड़ने लगे। ऐसे बुरे दिन हैं। लेकिन देहाती......!"

"देहातियों का ही नहीं, औरों का भी यही हाल है"—एम्मा कहना शुरू किया। उसके मुँह की बात पकड़कर वे आगे बढ़े बोले--"हाँ, बिलकुल ठीक है। यहाँ की औरतों को लीजिए। गरद उठाकर कभी इधर-उधर नहीं देखतीं। लेकिन उनके पति हैं लात-घूँसों से ही बात करते हैं। जिनके पति हैं, वे पति के नाम रोती हैं। विवाहित से फिर कुमारी बनने को कलपती हैं। जो कुमा हैं, वे पति की याद में दिन-रात एक कर डालती हैं!"

"लेकिन मैं दूसरी बात कहना चाहती थी", एम्मा के मुँह निकला और उन्होंने फिर पकड़ लिया—"यही तो मैं भी कहता हूँ

जिन्होंने सिवा बदमाशियों के इस दुनिया में कुछ जाना नहीं, वे महलों में रहते हैं। जो मेहनत करते हैं, ईमानदारी से अपना खून पसीना एक कर डालते हैं, उनके पास खाने को है तो पहनने को नहीं, पहनने को है तो खाने को नहीं!"

इस बार एम्मा कुछ नहीं बोली। अपना ध्यान उसने उधर से हटा लिया था। वे ताड़ गये। बोले—"बहुत देर हो गई है आपको। अब आप जाइए। एक प्याला गरम चाय लेने से सारी सुस्ती दूर हो जायगी। फिर डॉक्टर साहब तो हैं ही......"

उसके वाक्य को अधूरा छोड़ एम्मा अपने घर चली आई। झुटपुटे में घर का आकार-प्रकार विचित्र दिखाई पड़ता था। अँगीठी की आग ठण्डी पड़ गई थी। सभी कुछ निस्तब्ध और चेतनाहीन मालूम पड़ता था। घड़ी की टिकटिक भी हृदय का साथ नहीं दे रही थी। अपने आपे में जैसे कोई नहीं था। पत्थर की मूर्ति की तरह एम्मा खड़ी थी। वैसे ही खड़ी रही। एकाएक उसे लगा, कोई उसके अञ्चल का छोर पकड़ कर खींच रहा है। उसकी दृष्टि झुकी। देखा, उसकी लड़की बर्था एकटक आँखों से उसकी ओर देख रही है।

बर्था की छोटी-छोटी आँखों की गहराई देखकर एम्मा विचलित हो उठी। मालूम हुआ, किसी अतल गहराई में वह डूबी जा रही है। एक झटका देकर उसने अपने अञ्चल को छुड़ा लिया। एक झटके के साथ अलग हट गई। कमरे में फिर टहलने लगी। प्रत्येक क़दम जैसे नापकर धर रही थी। वह जैसे निश्चयकर जान लेना चाहती थी कि उसके पाँव ज़मीन को ही छू रहे हैं।

इसी समय चार्ल्स ने कमरे में प्रवेश किया। एम्मा का झटका

खाकर बर्था गिर पड़ी थी। माथे पर उसके हलकी-सी खरोंच आगई थी। चार्ल्स ने उसे गोदी में उठाया, पुचकारा, माथे टिंचर लगा एम्मा को देते हुए बोला—'कुछ नहीं। अभी ठीक जायगा।"

बर्था के रोने से एम्मा चौंक उठी थी। गोदी में लेते ही वह हो गई। एम्मा ने उसे बिस्तरे पर सुला दिया। फिर दूर खड़ी होक देखने लगी—बर्था की सुबकियाँ बन्द हो गई थीं। बन्द आँखों कोरों के पास आँसू की दो बूंदें अभी ठहरी थीं। एम्मा से देखा न गया उसने अपनी आँखें बन्द कर लीं।

चार्ल्स उसके पास खिसक आया। कन्धे पर हाथ धरकर कह लगा—"कुछ नहीं। चोट मामूली है। अभी ठीक हो जायगी।"

दूकान-मालिक ने सुना तो दौड़ा हुआ आया। एम्मा को ढाढ़ बँधाने के साथ-साथ छोटे बच्चों के लालन-पालन के अनेक उदाहर उसने दे डाले। उसकी बातों का कोई अन्त न होता देख एम्मा उठक चली गई। चार्ल्स बैठा हुआ सुनता रहा।

संगीत-प्रेमी युवक की नौकरी लग गई थी। पर अभी तक वह ज नहीं सका था। अपनी मा की अनुमति उसे नहीं मिल पाई थी। परदेश में लड़का कैसे और किसके साथ रहेगा, यह उसकी समझ में नहीं आत था। सब कुछ समझाने के लिए उसने अपनी मा को कई पत्र लिखे पहले छोटे-छोटे, फिर बड़े-बड़े। बड़ी मुश्किल से मा राज़ी हुई। इस बाद वह सफ़र की तैयारियों में लगा। बहुत-सा सामान उसने जम कर लिया। मालूम होता था, वह नौकरी पर नहीं, संसार-यात्रा के लि जा रहा है।

नौकरी जिसे कहते हैं, वह उसे अभी नहीं मिली थी ! काम सीखने का एक अवसर उसे मिला था। ख़र्च चलाने के लिए आये महीने कुछ-न-कुछ मिलता रहेगा। काम सीख जाने पर ठीक से नौकरी मिलेगी। एम्मा के संसर्ग-स्पर्श ने भी उसमें आशाओं का सञ्चार कर दिया था। मन-ही-मन वह उसके लिए कृतज्ञ था। उसके आने से पहले अपनी मा के सामने वह सिर तक न उठा सकता था। एम्मा की टेक ने उसके झुके हुए सिर को कुछ सहारा दिया। काम मिलने की सूचना पाने पर उसे लगा, वह मा से भी दूर जा रहा है, एम्मा से भी। एम्मा ने उसके जीवन में प्रवेश किया था, लेकिन इस हद तक नहीं कि मा का अभाव पूरा हो जाय। वह अचकचा गया। एकाएक उसका साहस नहीं होता था कि मा की अनुमति के बिना कुछ करे। कितने दिन यही सोचने में बीत गये, मा को सूचना दे या न दे। अनुमति ले भी तो किस रूप में और कैसे। इन्हीं सब बातों में एम्मा के पास भी वह न जा सका था। सब कुछ सँभल जाने पर एम्मा की याद उसे आई। मा की अनुमति से उत्साहित एम्मा से मिलने के लिए वह चल पड़ा।

एम्मा दरवाज़े की ओर पीठ किये खड़ी थी। पाँव की आहट को और अधिक स्पष्ट करते हुए वह कुछ कहना ही चाहता था कि एम्मा ने घूमकर देखा। अपने को सँभालकर फिर वह बोला—"मैं अब जा रहा हूँ। सोचा, बर्था को देखता चलूँ।"

बर्था को लाकर एम्मा ने उसकी गोदी में डाल दिया। उसने उसे खूब प्यार किया। बर्था को अपने जीवन में इतना प्यार कभी नहीं मिला था। एम्मा ने कहा—"इसे भी अपने साथ लेते जाइए।"

इसके बाद उसने अपनी दासी को पुकारा। वह आई। बर्था को उसे देते हुए कहा—"ले जाओ इसे!"

दोनों अकेले रह गये। एम्मा का मुँह दूसरी ओर था—दासी की गोदी में चढ़ी बर्था को जाते हुए वह देख रही थी। युवक अपनी उँगली पर टोपी को टिकाकर उसे घुमा रहा था। कुछ देर दोनों चुप रहे। फिर एम्मा ने कहा—"मालूम होता है, आज बारिश होगी। बादल घिर आये हैं।"

युवक को अपने ओवर-कोट की याद आई। बोला—"मालूम तो ऐसा ही होता है। लेकिन मेरे पास ओवर-कोट है। कुछ हर्ज नहीं होगा। सब कुछ मैंने ठीक कर लिया है।"

उससे विदा लेकर एम्मा अपनी खिड़की पर आ बैठी। घिरे हुए बादलों को देखने लगी। छिपते सूर्य की लाली ने सुनहरी कोरों से उन्हें रँग दिया था। एकटक एम्मा मुग्ध भाव से देखती रही। बादल बराबर घिरते जा रहे थे। कुछ देर बाद तीर की तरह पानी की तेज़ बौछार पड़ने लगी। एम्मा भीग चली, पर वहाँ से उठी नहीं। रह-रह-कर वह सोच रही थी कभी उस युवक के बारे में, कभी उसके ओवर-कोट के!

(१०)

वर्षा के बाद आकाश निर्मल हो गया, लेकिन एम्मा का हृदय नहीं। बौछारों से भीगकर वह और भारी हो गया था। निर्मल आकाश अब जैसे उसे हलका करने में लगा था, सूर्य्य की किरणें उसके साथ खेल करना चाहती थीं। संगीत-प्रेमी युवक का स्मृति-चित्र भी पहले से

कहीं अधिक वास्तविक, स्पष्ट और आकर्षक बनकर सामने आ खड़ा हुआ था। वर्था भी पास ही खेल रही थी। विदा के समय संगीत-प्रेमी युवक का जो दुलार उसने पाया था, वह जैसे उसके रोम-रोम में बस गया था। अनायास एम्मा उठी, वर्था को उठाकर हृदय से चिपका लिया। अप्रत्याशित स्नेह के आवेग को वर्था न समझ सकी। विचित्र भाव से वह एम्मा को देख रही थी। आँधी का एक झोंका था जो आया और चला गया, उतने ही अप्रत्याशित रूप में एम्मा ने वर्था को नीचे पटक दिया। चीख़ मारकर वह रह गई।

एम्मा के जीवन का बोझ एक आकार ग्रहण कर चला था। असन्तोष को एक केन्द्रबिन्दु मिल गया था। संगीत-प्रेमी युवक के आस-पास यह असन्तोष जमा होता जा रहा था। पहले वह अस्तव्यस्त था, सारे घर में बिखरा पड़ा था। जिस चीज़ को छूती थी, उसकी स्मृति उभर आती थी। अब ऐसा नहीं था। चार्ल्स को भी तटस्थ दृष्टि से वह देखने लगी थी। असन्तोष के अतिरिक्त और भी बहुत कुछ था जो वह चार्ल्स को दे सकती थी—देने भी लगी थी। चार्ल्स अब घर में आता था, मालूम होता, फूलों के फ़र्श पर चल रहा हो। अदृश्य हाथ अत्यधिक कोमल हो उठे थे।

सब कुछ हुआ, लेकिन एम्मा का अपना अन्धकार दूर न हुआ। जीवन की अँधियारी रात का कोई अन्त दिखाई नहीं पड़ता था। फूलों से उसका प्रेम बढ़ा। घर के कोने-कगारों से मकड़ी के जाले साफ़ हुए, गुलदस्तों ने उनका स्थान ले लिया। बीमार हाथों की नब्ज़ टटोलने के बाद चार्ल्स जब घर लौटता, वसन्त का पूरा संसर्ग उसे मिलता। बाहर घूमते-घूमते अँधेरा हो आता था, ठोकर भी उसने कई बार खाई, लेकिन

घर आने पर उसे उजाला ही दिखाई पड़ता था। एम्मा का इतना उजागर रूप उसने पहले कभी नहीं देखा था।

अपने उजागर अस्तित्व को लिये एम्मा आगे बढ़ती गई—अन्धकार को आलोकित करने के लिए। आधुनिक उपन्यास-कहानियाँ पढ़ना उसने छोड़ दिया था। इतिहास और दर्शन की पुस्तकें उसने पढ़नी शुरू कीं। उन्हें समझने के लिए उसने कोष मँगाया, व्याकरण की भी एक पुस्तक ले आई, नोट लेने के लिए कोरे काग़ज़ों का भी एक बण्डल आगया। सोते-सोते रात को चार्ल्स कभी जाग उठता। मालूम होता, कोई पुकार रहा है। आँखें खोलकर देखता, ध्वनि किसी के बुलाने की नहीं, एम्मा के पढ़ने की है। इतिहास के पन्ने उसके हाथों का स्पर्श पाकर मुखर हो उठे हैं। चारों ओर अन्धकार से घिरे रहने पर भी उसके कमरे में प्रकाश है, इतिहास और दर्शन के सहारे एम्मा उसके जीवन की गुत्थियाँ सुलझा रही है।

चार्ल्स को यह अच्छा नहीं लगता था। इस तरह एम्मा बीमार पड़ जायगी। वह न खाने की सुध रखती है, न पीने की। एम्मा को समझाने के प्रयत्न उसने किये—पहले दबे स्वर से, फिर और ज़ोर देकर। प्रेम और झिड़कियों के प्रयोग भी सामने आये। एम्मा सुनती थी, सुनकर टाल जाती थी। कभी-कभी उलझ भी जाती थी। एक दिन चार्ल्स ने कहा—"तुम्हें हो क्या गया है। न कुछ खाती हो, न पीती हो। बदन दिन-दिन पतला पड़ता जा रहा है!"

एम्मा ने चार्ल्स की बात को अस्वीकार किया। कहने लगी—"नहीं, मैं ख़ूब खाती हूँ। तुमसे तो ज़्यादा ही खाती हूँ।"

इसके बाद खाने-पीने को लेकर दोनों में बहस हुई, बहस ने हठ का

रूप पकड़ा, प्रत्यक्ष प्रमाण देने के लिए एम्मा ने इतना खाया कि बीमार पड़ गई।

चार्ल्स की समझ में न आता था कि एम्मा का क्या करे। दवाइयाँ देना चाहता था, लेकिन उसने इनकार कर दिया। आख़िर हारकर उसने अपनी मा को पत्र लिखा। पत्र भेजने के तीन दिन बाद मा आ गई। एम्मा को लेकर मा-बेटे में बातें हुईं। सब कुछ सुनने के बाद मा कहने लगी—"तुम नहीं जानते, वह क्या चाहती है। मैं जानती हूँ। मेरी हालत भी एक दिन ऐसी हो गई थी। न जाने कैसी-कैसी बातें सोचकर जी घबरा उठता था। अकेले में दीवार से सिर टकराती थी। जब मैंने घर की सारी बागडोर सँभाली, घर-बाहर का सारा काम करने लगी, तब कहीं चैन पड़ा। बिना अपने हाथ पर भरोसा हुए..."

"लेकिन एम्मा तो एक घड़ी भी ख़ाली नहीं बैठती। कुछ न कुछ करती ही रहती है," चार्ल्स ने कहा।

"सो कुछ नहीं," मा बोली, "पढ़ने-लिखने से कुछ नहीं होता। मन और भी बौरा जाता है।"

तय हुआ, सबसे पहले एम्मा का किसी तरह पढ़ना छुड़ाना चाहिए। चार्ल्स के आगे न बढ़ सकने पर मा ने यह काम अपने ऊपर ले लिया। एम्मा के कमरे में जाकर सब पुस्तकें उठा लाई। एम्मा ने कुछ न कहा। वह न अब मा से बोलती थी, न चार्ल्स से। खिड़की पर बैठकर वह निर्मल आकाश और दूर उड़ते पक्षियों को देखा करती।

मा का काम बहुत जल्दी चुक गया। एम्मा के खिड़की को घेर लेने से घर में प्रकाश और हवा का प्रवेश खुलकर नहीं होता था। मा का जी भारी रहने लगा। अधिक दिनों तक वह नहीं रही। एम्मा

के बारे में चार्ल्स को बहुसी-सां ऊँच-नीच समझा-बुझाकर वह चली गई।

मा को गये कई दिन हो गये। चार्ल्स अपने मरीज़ों में व्यस्त था, एम्मा अपनी खिड़की से संसार का दृश्य देखने में। अधिकांश समय वहीं बैठे बीतता था। एक दिन उसने देखा, कोई सामने टहल रहा है। नपे-तुले क़दमों से वह इधर-उधर आता-जाता है। अपने कपड़ों का भी उसे विशेष रूप से ध्यान है। रह-रह कर गर्द-सी झाड़ता रहता है। एम्मा उसे देखती रही—पहले दिन देखा, दूसरे दिन भी वह दिखाई पड़ा और तीसरे दिन भी। वह खिड़की पर होती थी, तब भी टहलता था; नहीं होती थी, तब भी दिखाई पड़ता था। नपे-तुले क़दमों के इस बँधे क्रम में एक दिन अन्तर पड़ा। पास आकर वह बोला—"डाक्टर साहब हैं?"

चार्ल्स उस समय घर में मौजूद था। नये रोगी की उसने परीक्षा की। मालूम हुआ, हृदय की गति नपे-तुले क़दमों का साथ नहीं दे रही है, खून का दौरा भी कुछ बढ़ा हुआ है। देखने के बाद चार्ल्स ने दवाई लिख दी। दूसरे दिन उससे फिर आने को कहा। दवाई का परचा लेकर वह चला गया।

नया रोगी दूसरे दिन फिर आया। चार्ल्स ने उसके हृदय की परीक्षा लेनी शुरू की। कानों में नलकी लगाये चार्ल्स उसके हृदय की धड़कन गिन रहा था और वह सोच रहा था एम्मा के बारे में। हृदय के ज़रा से उभार-दबाव को समझने के लिए जिसे कानों में नलकी लगानी पड़ती है, उससे कोई स्त्री सन्तुष्ट नहीं हो सकती। मेरे हृदय की गति का तो यह हाथ में घड़ी लेकर हिसाब लगा रहा है, एम्मा के हृदय की

इस वक्त क्या हालत होगी, यह इसे ज़रा भी पता नहीं। अच्छे जंगली के हाथों पड़ी है। उसकी कुछ सुध नहीं रखता। जब मरने पड़ेगी, तब थर्मामीटर लेकर दौड़ेगा!

चार्ल्स ने देखा—हृदय की धड़कन आज कल से ज़्यादा ज़ोर पकड़ गई है। बोला—"ठीक हो जायेगा। ज़रा जमकर इलाज करना होगा।"

धड़कते हृदय को लिये रोगी रोज़ आने लगा। चार्ल्स उसके हृदय को सँभालना चाहता था और वह एम्मा के। चार्ल्स को अपनी डाक्टरी पर विश्वास था, उसको अपने पुरुषार्थ पर। एम्मा का पीला चेहरा और काली आँखें उसकी परुष कल्पना में समा गई थीं।

(११)

नये रोगी का नाम बुलनर था। विवाह उसने नहीं किया था, करना चाहता भी नहीं था। विवाह के बारे में सैद्धान्तिक मतभेद उसका था। विवाह, विवाह न होकर, एक जञ्जाल उसके लिए हो गया था। विवाह होता है इसलिए नहीं कि दो युवक-हृदय एक सूत्र में बँध जायँ, बल्कि इसलिए कि मित्रों को दावत खाने को मिलती है, पण्डित-पुरोहितों और बीचबिचोलियों की जेब गरम होती है। दो भोले हृदयों के ख़ून से यह खेल खेला जाता है। अपना ख़ून बहाकर भी वह इस अत्याचार को दूर करना चाहता था। इसी लिए उसने विवाह नहीं किया था।

विवाह को ही नहीं, संसार को भी वह इसी रूप में देखता था। जिसे देखो, वह एक जाल लिये फिरता है। जो भी मिल जाय, उसे ही फँसाकर अपना मतलब सिद्ध करना चाहता है। खुलकर साँस लेने

की जगह भी इस संसार में नहीं रही है। बड़ी उम्मीदों और उमङ्गों के साथ उसने ससार में प्रवेश किया था, लेकिन खड़े होने तक की जगह उसे नहीं मिली। भले आदमियों की तरह वह नगर में बसना चाहता था, लेकिन बस न सका। सभी उसे रौंदकर चलना चाहते थे। सब कुछ छोड़कर आख़िर उसे इस सूनी बस्ती का सहारा लेना पड़ा। देहाती बनकर सीधा-सादा जीवन वह बिताना चाहता था। लेकिन यहाँ भी वही हाल है। खेती करने के लिए ज़मीन भी मिली तो बञ्जर। उससे सिर टकराते-टकराते उसके हृदय की धड़कन बढ़ गई, डाक्टर के घर के आस-पास उसे चक्कर लगाने पड़े। चैन फिर भी न मिला। एम्मा को देखकर उसका हृदय तिलमिला उठा। विवाह की बलिवेदी पर तिल-तिल करके उसकी जान जा रही है। रक्षक न होकर पति उसका भक्षक हो गया है। एम्मा को इस जञ्जाल से निकालना ही होगा।

चलते-चलते उसके पाँव में ठोकर लग जाती, वह भन्ना उठता। दुनिया भर के ईंट-रोड़े सब हमारे लिए ही हैं। सफ़ाई के दारोग़ा सड़क की देख-भाल करते हैं घोड़े पर चढ़कर। पैदल चलें तो पता चले, कहाँ क्या हो रहा है। घोड़े के नाल लगवाने की तो उन्हें चिन्ता है, ईंट-रोड़ों का तुरंत ख़याल हो आता है, लेकिन ज़मीन पर चलनेवालों के पाँव में जो आबले पड़ जाते हैं, उनकी ओर कोई नहीं देखता!

भिखारियों के रीते हाथ और निराश आँखें देखकर भी उसका यही हाल होता था। किसी स्त्री का पीला चेहरा, धँसी हुई आँखें, अस्त-व्यस्त अस्तित्व दिखाई पड़ने पर संसार के क्रूर हाथों का चित्र उसके सामने खड़ा हो जाता था। किसी स्वस्थ, सुन्दर और अल्हड़ युवती को देखकर उसका हृदय मसोस उठता—इसे ज़रा भी पता नहीं कि कैसी

दुनिया में रह रही है। दो दिन बाद उसका विवाह हो जायगा। घर की चक्की में पिसकर यह रूप-रंग कुछ भी नहीं रहेगा। ऐसा जाल बिछा है कि निस्तार का कोई मार्ग नहीं। सभी सर्वनाश की ओर दौड़े जा रहे हैं।

सर्वनाश के इस जाल से अपनी तथा दूसरों की रक्षा करने की ओर वह आगे बढ़ता। आगे बढ़ने से पहले उसे बहुत कुछ सोचना पड़ता—ऐसा न हो कि वह ख़ुद ही इस जाल में फँस जाय। बाहरी जाल से रक्षा करने के लिए भीतरी जाल बुनना वह शुरू करता। सतर्कता का पल्ला पकड़े बिना उसे साँस तक लेते डर लगता था। कौन जाने कैसी हवा बह रही है। ससार में जो दिन-दिन इतने रोग बढ़ते जा रहे हैं, वे इसी लिए। इनसे बचने के लिए क्या करना होगा, किन-किन उपायों का सहारा लेना होगा, यह उसने बहुत कुछ सोचा था। एक लम्बी-चौड़ी योजना उसने तैयार कर ली थी। वह कल्पना करता था, एक दिन आयेगा, इस योजना के सहारे जब सारा संसार रोगमुक्त हो जायगा। प्रत्येक जीव खुलकर साँस ले सकेगा।

योजनायें बनाने में उसने विशेष दक्षता प्राप्त कर ली थी। कोई काम ऐसा न था, जो बिना योजना के आगे बढ़ सकता हो। खिड़की पर बैठी एम्मा का पीला चेहरा और खोई-सी आँखें देखकर उसका हृदय आन्दोलित हो उठा था। खिड़की के सामने नपे-तुले क़दमों से उसने जो चक्कर लगाने शुरू किये थे, वे उसकी योजना के ही एक अंश थे। डाक्टर से अपने हृदय की परीक्षा कराना भी इसी सिलसिले की एक कड़ी था। प्रत्येक क़दम फूँक-फूँककर वह धर रहा था।

एम्मा से वह मिलना चाहता था, बातें भी करना चाहता था, लेकिन

उसे डर था कि कहीं और लोग बात का बतंगड़ न बना दें। उपयु अवसर की प्रतीक्षा में वह था। एक दिन एम्मा को अधिक सुस्त दे उसने चार्ल्स से पूछा—"ये आज बहुत सुस्त दिखाई पड़ती हैं। माल होता है, इनकी तबीअत कुछ ठीक नहीं रहती।"

एम्मा उस समय वहीं खड़ी थी। सुनकर उसकी भौंहों में बल पड़ फिर तुरंत वहाँ से खिसक गई। चार्ल्स ने कहा—"हाँ, इनकी तबीअ ठीक नहीं रहती।"

"दवाई तो आप देते ही होंगे?" उसने पूछा।

"देता तो हूँ, लेकिन दवाइयों से इन्हें परहेज़ है। कहती हैं, दवाइ से कुछ नहीं होने-जाने का।"

यह तो वह पहले ही से जानता था। दवाइयों से रोग दूर न होते। रोग कम होने नहीं आते, डाक्टर बराबर बढ़ते जा रहे हैं—य बताना मुश्किल है कि रोगों की संख्या अधिक है अथवा डाक्टरों की एक बार जी में आया, अपनी योजना को सामने रख दें, लेकिन व निश्चय नहीं कर सका कि उसके लिए यह अवसर ठीक होगा या नहीं बहुत कुछ सोचने-समझने के बाद उसने कहा—"इनसे कहिए, रो थोड़ा-बहुत घूम लिया करें।"

शाम को चार्ल्स खाना खाने बैठा। इधर-उधर की बातें करने बाद उसने कहा—"घर में पड़े-पड़े भी जी भारी हो जाता है। अच्छ हो, कुछ देर बाहर घूम आया करो।"

हलकी-सी ऊँह के साथ एम्मा ने इस योजना को टाल दिया। लेकि चार्ल्स के कर्त्तव्य की इतिश्री इतनी सहज नहीं हो सकी। जब-ज बुलनर आता था, एम्मा की तबीअत का हाल पूछना न भूलता था

घूमने जाना शुरू हुआ है या नहीं, यह जानना भी उसके लिए ज़रूरी था। एक-दो दिन तक तो चार्ल्स सुनकर इधर-उधर करता रहा, लेकिन बुलनर का उत्साह इससे सन्तुष्ट न हो सका। आख़िर उसने कहा—"मुझे तो फ़ुरसत मिलती नहीं है। घूमने के लिए एम्मा को तुम तैयार कर सको तो अच्छा हो।"

यह कहकर चार्ल्स अन्दर गया। थोड़ी देर बाद वह एम्मा के साथ लौटा। कहने लगा—"देखिए, दवाइयों के साथ-साथ इन्हें घूमने से भी परहेज़ है। ज़रा इन्हें समझाइए तो।"

फिर जैसे कोई चीज़ कहीं भूल आया हो, उसे कुछ याद आया। तुरत लौटने की बात कह वह घर से बाहर चला गया। एम्मा और बुलनर अकेले रह गये।

इतनी जल्दी यह सब कुछ हो गया कि बुलनर को कुछ भी सोचने का अवसर नहीं मिला। इस तरह कोई भी योजना सफल नहीं हो सकती। एम्मा सामने ही थी, उसका पीला चेहरा और काली आँखें भी वहीं थीं, लेकिन कितनी देर तक सिवा धुँधलेपन के उसे कुछ और दिखाई न पड़ा। पलकों की जाली बना, अधमुँदी आँखों से, इस धुँधलेपन को स्पष्ट करने का प्रयत्न वह करने लगा।

एम्मा खड़ी थी। उसे बड़ा अटपटा लगा। बोली—"कहिए, क्या कहना चाहते हैं आप?"

एम्मा की आवाज़ सुनकर वह चौंका। आँखों की जाली को खोल-कर उसने कहा—"साथी न मिलने की वजह से ही शायद आप घूमने नहीं जाती हैं। अगर आप चाहें तो·····"

वाक्य को उसने जान-बूझकर अधूरा छोड़ दिया। उसे पूरा करने

से पहले वह जान लेना चाहता था, पानी कितना गहरा है। वाक्य अधूरा छोड़ अधूरी दृष्टि से वह एम्मा के मुँह की ओर देखने लगा।

अधूरे वाक्य को एम्मा ने पूरा कर दिया। वह घूमने चलेगी। चार्ल्स भी आ गया था। यह सुनकर बहुत ख़ुश हुआ। पीठ ठोंकते हुए उसने बुलनर को बिदा दी। जीवन में पहली बार एम्मा को उसने गुदगुदाया। झुँझलाकर एम्मा अलग हट गई।

झुँझलाहट उच्च शिखर पर पहुँची दूसरे दिन। तैयार होना न चाहने पर भी एम्मा घूमने के लिए तैयार हो गई थी। तैयार होने पर घड़ी की ओर उसकी आँखें लगी थीं—इसलिए नहीं कि घूमने का समय जल्दी आये, बल्कि इसलिए कि घूमने की वह घड़ी किसी तरह टल जाये। धीरे-धीरे वह घड़ी आई भी और टल भी गई। टलने की प्रतीक्षा के टल जाने पर एम्मा का हृदय झुँझला उठा। पहने कपड़ों को उतारकर फेंक दिया। पलङ्ग पर जाकर पड़ रही—आधी नीचे आधी ऊपर। झुँझलाहट फिर भी पीछा नहीं छोड़ रही थी—अब इसलिए कि रोना चाहने पर भी आँसू क्यों नहीं आ रहे हैं?

(१२)

डेढ़ महीना गुज़र गया। बुलनर दिखाई नहीं पड़ा। उसने सोचा—जल्दी करना ठीक नहीं। तैयार तो वह हो ही गई है। अब उसे कुछ समय देना चाहिए। नहीं तो वह समझेगी, घूमना उसके अपने लिए नहीं, मेरे लिए हो रहा है।

यह सोचकर वह टाल गया। उसे विश्वास था, अभाव में अनुभूतियाँ और भी गहरी हो उठती हैं। एम्मा उन लोगों में नहीं है,

आँखों का लिहाज़ रखने के लिए ही किसी बात पर राज़ी हो जाते हैं। मुँह पर हाँ कहेंगे, पीठ-पीछे सारे करे-धरे पर पानी फेर देंगे।

डेढ़ महीने बाद, एक दिन, एकाएक, वह एम्मा के यहाँ पहुँच गया। उसे देखकर एम्मा का चेहरा पीला पड़ गया। बुलनर मन-ही-मन आश्वस्त हुआ—ठीक ही मैंने सोचा था। डाक्टरी ने एम्मा का सारा ख़ून चूस लिया है। ख़ून होता तो चेहरा इस समय लाल पड़ जाता!

एम्मा उस समय अकेली थी। दिन छिप चला था। छाया-मिश्रित प्रकाश ने वातावरण में कुछ अस्पष्टता ला दी थी। एम्मा बुलनर को देखकर चुप हो रही। कुछ देर बाद बुलनर ने कहा—"मैं बीमार पड़ गया था, इसी से नहीं आ सका।"

"क्यों—क्या तबीअत अधिक ख़राब हो गई थी?" एम्मा ने पूछा।

"हाँ," पास बैठते हुए बुलनर ने कहा, "लेकिन नहीं। कहना चाहिए, मैं आना ही नहीं चाहता था।"

वाक्य के प्रत्येक शब्द को प्रभावपूर्ण बनाते हुए उसने उच्चारित किया। फिर एम्मा के मुँह की ओर देखने लगा। चेहरे पर एम्मा के खोया हुआ-सा भाव था। जैसे वह कुछ भी समझ नहीं पा रही हो। अपने वाक्य के प्रभाव से वह प्रभावित हुआ। और कुछ कहना चाहता था। उसके मुँह से निकला—"एम्मा!"

"जी," जैसे अटककर एम्मा ने कहा।

बुलनर एम्मा को बताना चाहता था, उसका अस्तित्व किसी पति की पत्नी बनकर खो जाने के लिए नहीं है। तिल-तिल करके गलने के लिए उसने जन्म नहीं लिया है। वह कह रहा था—"एम्मा, तुम

नहीं जानतीं। कैसे बताऊँ कि तुम क्या हो। हर घड़ी यही सोचता रह हूँ। यह सब मुझसे नहीं देखा जाता। मैं यहाँ आना चाहता था, लेकि आ नहीं पाता था। पाँव में जैसे कोई बेड़ियाँ डाल देता हो। रात सोते-सोते मालूम होता, जैसे तुम पुकार रही हो। आँखें खुलने जीवन का यह निमंत्रण अन्धकार में खो जाता था।"

आँखें बन्द किये एम्मा मुग्ध भाव से सुन रही थी। मधुर चि उसके सामने था—बुलनर का नहीं, उस संगीत-प्रेमी युवक का। बु नर के शब्दों का सूत्र पकड़कर जैसे वही सामने आ खड़ा हुआ था।

एम्मा बुलनर के साथ घूमने जाने लगी। क़दम-क़दम पर अत्या -चार-पीड़ित जीवन के चित्रों से उसका परिचय होने लगा। प्रत्ये देहाती अपने चेहरे पर शोषण की छाप लिये आता था। जीवन में क आशा नहीं, उत्साह नहीं, उद्देश्य नहीं। इस हँड़िया का धान उ हँड़िया में करने को ही सब जीवन समझते हैं। कुछ ऐसे भी हैं जिन पास एक ही हँड़िया है। उसी को कभी भरते हैं, कभी ख़ाली कर हैं। कुछ ऐसे भी हैं, जिनके पास न हँड़िया है, न धान। इक होकर केवल बातें करते हैं। एक बोलता है, बाक़ी हँड़िया-सा मुँ फाड़े सुना करते हैं। बातों से ही जैसे पेट भर जायगा!

एक वृद्धा का रूप धारणकर जीवन सामने आता था। फटे चिथ में सिमटी-सिमटाई रङ्गमञ्च पर वह खड़ी है। कमर उसकी झुक गई चेहरे पर उसके झुर्रियाँ पड़ी हैं। मूक पशुओं के बीच रहते-रहते व भी जैसे पशु हो गई है। जीवन चलता है मशीन की तरह—कूक भ कर जैसे टीन के खिलौने को छोड़ दिया गया हो।

बुलनर इस जीवन को उभारकर रखना चाहता था। जीवन

इस रूप के सहारे चलनेवाले धर्म, राज और इसी तरह की भली-भली बातों के जाल को वह छिन्न-भिन्न करना चाहता था। मुरझाकर झरे हुए फूल की ओर संकेतकर वह कहता—"देख रही हो एम्मा, जीवन में रस का नाम नहीं। जीवन को चलाने के लिए माली ने इसे तोड़ा। बन्द कमरे में रस का सञ्चार करने के लिए डाल से अलग होकर गुलदस्ते की शोभा यह बढ़ाने लगा। और आज यह धूल में लोट रहा है। कोई इसकी ओर आँख उठाकर देखनेवाला तक नहीं। सभी पाँव से रौंदते हुए चले जा रहे हैं!"

व्यथित नेत्रों से एम्मा उसकी ओर देख रही थी। कुछ ठहरकर उसने फिर कहना शुरू किया—"पौदे को सींचना छोड़कर सब गुलदस्ते सजाने में लगे हैं। गुलदस्ते न होते तो शायद माली को भी मुरझाये फूल की तरह धूल में लोटना पड़ता। पौदे को छोड़कर वह भी गुलदस्तेवालों की जान की ख़ैर मनाता है। घर की क्यारी उजाड़कर गुलदस्ते वह सजाता है—सारा जीवन गुलदस्तों में भरकर रह गया है!"

एम्मा का हाथ पकड़कर अन्त में वह कहता—"दम घुट रहा है एम्मा! चलो, यहाँ से चलें।"

दोनों घूमने चल देते—बस्ती से दूर। एम्मा को मालूम होता, गुलदस्ते का फूल डाल पर आ लगा है। नया जीवन जैसे उसने पाया है। गुलदस्तों को छोड़कर इसी को सँवारने में वह लगी। बुलनर ने भी सहयोग दिया। अपनी योजना को सफलता की ओर बढ़ते देख उसका उत्साह बढ़ गया था। रोज़ नई-नई योजनायें वह सोचता था, नये-नये रंग लेकर जीवन सामने आता था। एम्मा को खिला हुआ

देख गुलदस्ते के फूलों का अभाव चार्ल्स को भी नहीं अखरा। वह खुश था।

बुलनर का योजनाशील मस्तिष्क हृदय की धड़कन को पीछे छोड़ आगे बढ़ रहा था। जीवन का अनुभव करने के लिए नये-नये आविष्कार वह करता था। कितने ही दिनों तक प्रेमपत्रों का क्रम चला। चिट्ठी लिखने के बहुत-से काग़ज़ और लिफ़ाफ़े एक बार एम्मा ख़रीद लाई थी। उनका अब तक कोई उपयोग नहीं हो सका था। बुलनर ने उन्हें भी जीवनदान दिया। एम्मा पत्र लिखती थी। बस्ती से बाहर एक नियत स्थान पर, पत्र छोड़ आती थी। बुलनर वहाँ आकर पत्र ले लेता था। उत्तर लिखकर फिर उसी जगह छोड़ देता था। एम्मा उसे पा जाती थी।

प्रेमपत्रों के द्वारा ही दोनों एक-दूसरे से मिलते थे। बस्ती से बाहर एक दूसरे से अदृश्य रहकर, प्रेमपत्रों का यह आदान-प्रदान चलता था। अछूते जीवन का अछूता आकर्षण पूर्व निश्चित योजना के अनुसार सामने आ रहा था। एम्मा को यह बहुत अच्छा लगता था। असन्तोष की बात इसमें एक थी। वह यह कि बुलनर के पत्र नपे-तुले होते हैं। गिने-चुने शब्द, गिनी-चुनी पंक्तियाँ। थोड़े में ही उसकी बात समाप्त हो जाती है। अपने पत्रों में जितनी ही वह इसकी शिकायत करती थी, उतने ही उसके शब्द नपे-तुले होते जाते थे। शब्दों के स्थान पर एम्मा की शिकायतों को बाँधने के लिए जैसे उसने सिपाही छोड़ दिए हों। प्रत्येक शब्द मुँह पर उँगली धरे जैसे कह रहा था—तू चुप रह!

एम्मा से न रहा गया। चार्ल्स सवेरे-ही-सवेरे कहीं चला गया था। मन में एक हूक उठी, बुलनर से मिलने के लिए एम्मा चल दी।

जिस समय उसके घर पहुँची, वह सो रहा था। आहट पा चौंककर वह उठ बैठा। कितनी देर तक एम्मा को पहचानकर भी नहीं पहचान सका। अचकचाकर वह बोला—"एम्मा, तुम यहाँ ?"

"हाँ", एम्मा ने कहा, "मैं अब वहाँ नहीं रह सकती। मेरा दम घुटा जाता है। मैं जीना चाहती हूँ।"

"लेकिन इस तरह नहीं चलेगा, एम्मा !" बुलनर ने कहा, "जीवन ऐसे नहीं चलेगा। तुम नहीं जानती, चारों ओर कितना भीषण जाल बिछा है। साँस लेने तक की जगह नहीं। तुम कहती हो, मैं छोटे पत्र लिखता हूँ। लेकिन तुम नहीं जानती, एक शब्द भी अगर इधर-उधर हो गया तो आफ़त हो जायगी। हम कहीं के न रहेंगे।"

बुलनर ने एम्मा को समझाया और सावधानी से चलने पर ज़ोर दिया। एम्मा ने सावधानी से सब सुना, सावधान होकर उठी और सावधानी के साथ हृदय को सँभाले अपने घर लौट आई।

(१३)

एम्मा के जीवन में सतर्कता ने प्रवेश किया। आशङ्काओं से वह घिरी रहने लगी। उसे लगता, किसी की गृद्धदृष्टि उसका पीछा कर रही है। इतने दिनों बाद जो उसे जीवन का सुख मिला है, किसी समय भी वह उसके हाथ से बाहर हो सकता है। पास में कोई न होने पर भी उसे अपने चारों ओर मौन षड्यन्त्र का आभास मिलता। घर की दीवारों के भी जैसे कान लग गये हैं। बाहर निकलती तो सब उसे अपनी ओर घूरते मालूम होते। किसी के पाँव की आहट, स्पष्ट-अस्पष्ट ध्वनि, वायु के झोंके से खिड़की के पल्लों का खड़खड़ा उठना, किसी का चीख़ना-

चिल्लाना—कुछ भी सुनकर वह चौंक पड़ती, चलते पाँव एक ज
बँधकर रह जाते।

घूमने वह अब भी जाती थी, लेकिन उस समय, जब कि स
बस्ती नींद में डूबी रहती। बुलनर के घर भी वह जाती थी, लेकि
उसके चारों ओर चक्कर लगाकर लौट आती थी। आशङ्का के अधि
बढ़ जाने पर कई-कई दिन तक घर से बाहर नहीं भी निकलती थ
ऐसा भी हुआ है कि एक जगह जहाँ बैठ गई है, वहाँ घंटों बैठी
रह गई है। उठने की जब-जब कल्पना की है, वह काँपकर रह गई है

ऐसी जगह वह जाना चाहती थी, जहाँ उसे कोई न जानता
उसकी आहट पाकर किसी के कान न खड़े हों। अपने घर को ब
डालने के लिए भी उसने चार्ल्स से कहा—"इस घर में अब जी न
लगता। अकेले रहने पर बड़ा डर लगता है। दूसरा घर लिये बिना क
नहीं चलेगा।"

सोते-सोते चौंक पड़ने पर चार्ल्स ने एम्मा को कई बार सँभा
था। कितनी देर तक उसके हृदय की धड़कन का अनुभव करते हु
वह मन-ही-मन काँप भी उठा था। घर बदलने की बात उसे भी ठ
लगी। बोला—"हाँ, घर बदल डालना चाहिए। खोज में रहूँगा।"

अपनी नौकरानी से भी एम्मा घबरा उठती। बर्था को न खि
कर उसकी दृष्टि एम्मा के पीछे लगी रहती है, ऐसा उसे मालूम प
था। नौकरानी का मुँह बन्द और आँखें फेरने के लिए एम्मा उसे कु
न-कुछ भेंट करने लगी।

बुलनर एम्मा से भी अधिक सतर्क था। झुटपुटा हो जाने पर च
छाईं की तरह वह आता था। आस-पास मँडराकर चला जाता था

छाया का आभास पाने पर एम्मा मन मसोसकर रह जाती थी। उसे न अपनाते बनता था, न हृदय से दूर करते। पास आने पर काँप उठती, दूर चले जाने पर उसे अपने में समा लेना चाहती। पूरी तरह वह अनुभव करना चाहती थी कि वह उसी का है, उसी का होकर रहेगा।

जाड़ों के दिन, अँधेरी रात। उस समय बुलनर आता था, जब सारी बस्ती पर सन्नाटा छाया होता था। चार्ल्स सो जाता था, एम्मा जागती रहती थी। कभी-कभी, जागने के भार को हलका करने के लिए, एम्मा के साथ-साथ वह भी जागता रहता था। एम्मा चाहती कि वह सो जाय, वह चाहता कि एम्मा सो जाय। दोनों में से एक के सोने तक बातें चलती रहतीं। चार्ल्स बिस्तरे पर पड़ा रहता, एम्मा कुरसी पर बैठ जाती। चार्ल्स की बातों की उपेक्षाकर किताब उठाकर वह पढ़ना शुरू करती। पढ़ने में वह इतनी डूब जाती कि जैसे दुनिया में सिवा उसके और एक किताब के और कुछ नहीं है।

चार्ल्स उकताकर कहता—"कितनी देर हो गई, एम्मा? अब सोने चलो।"

"अभी सोती हूँ" एम्मा कहती, "बस, एक पन्ना और रह गया है।"

लैम्प की रोशनी चार्ल्स को अच्छी नहीं लगती थी। मुँह फेरकर वह पड़ जाता। थोड़ी देर बाद उसे पता भी नहीं रहता कि एम्मा पढ़ रही है या सो गई है। एम्मा फिर उठती, छाया को अपनाने के लिए चल देती। बुलनर का ओवर-कोट संसार की आँखों से एम्मा को छिपा लेता था। अन्धकार में दो छाया मिलकर एक हो जाती थीं। दबे हुए

स्वर में दोनों बातें करते थे—दीर्घ निःश्वास जैसे एक-दूसरे का अभिवादन कर रहे हों। रात की निस्तब्धता में उनका स्वर भी जैसे निःस्तब्ध होकर अपनी अभिन्नता घोषित करता था।

बरसात के दिनों में दोनों उस कमरे में छिप रहते, जहाँ चार्ल्स रोगियों को देखा करता था। एम्मा ने कुछ मोमबत्तियाँ छिपाकर रख छोड़ी थीं। उनके धीमे प्रकाश में अनावश्यक ठोकरों से बचाव हो जाता था। अन्धकार का बोझ भी किसी हद तक हलका हो जाता था।

सहज ही इस कमरे में बुलनर ने अपना स्थान बना लिया था। रोगी के रूप में एक दिन उसने इस कमरे में प्रवेश किया था। इस कमरे में घड़ी हाथ में लेकर चार्ल्स ने उसके हृदय की धड़कन को एक एक करके गिना था। बीती बातों की यादकर वह मुस्करा उठता। चार्ल्स पर भी जब-तब एकआध छींटा कस देता था।

एम्मा को यह अच्छा नहीं लगता था। चार्ल्स ने बुलनर का कुछ नहीं बिगाड़ा था। यह ठीक है कि चार्ल्स के प्रति एम्मा के हृदय में असन्तोष था। इस असन्तोष के सहारे ही बुलनर आगे बढ़ा था, बातें भी इसी को लेकर करता था। लेकिन एम्मा इस असन्तोष से ऊपर उठना चाहती थी, बुलनर को भी इससे ऊपर उठा हुआ देखना चाहती थी। जब कि बुलनर इसके अभाव में एक बात भी नहीं कह पाता था।

किसी के पाँव की आहट का आभास पाकर एम्मा एकाएक चौंक उठती। उसे लगता, जैसे कोई आरहा है। बुलनर से कहती—"मालूम होता है, कोई आरहा है?"

बुलनर तुरत उठता। मुँह आगे बढ़ाकर बत्ती को फूँक से बुझा देता। अन्धकार के आवरण में कुनमुनाकर एम्मा के अञ्चल में छि

जाने का प्रयत्न करता। कभी-कभी एम्मा को गुदगुदाने भी लगता। झटककर एम्मा उसे अलग कर देती। बुलनर का यह लड़कपन उसे अच्छा नहीं लगता था। आहट के दूर चले जाने पर वह कहती—"अगर चार्ल्स तुम्हें देख लेता तो?"

हलकी-सी ऊँह के साथ वह चार्ल्स को उड़ा देता था। फूँक मारकर बत्ती को बुझा देने से ही चार्ल्स की समस्या उसके लिए हल हो जाती थी। अन्धकार एम्मा के लिए चार्ल्स की समस्या को और भी जटिल कर देता था। वह सोचा करती—बुलनर चार्ल्स के सामने खड़ा नहीं रह सकता। उसके पाँव लड़खड़ा जायँगे। एक दिन अन्धकार में डूबकर वह रह जायगा।

अनायास एक दिन बुलनर से उसने पूछा—"तुम्हारे पास पिस्तौल तो नहीं है?"

पिस्तौल का नाम सुन बुलनर आँखें फाड़े देखता रहा। एम्मा फिर एकाएक आगे बढ़ी। बुलनर के कंधों को अपने हाथों से थामकर कहने लगी—"तुम्हें मेरी क़सम है, अपने पास पिस्तौल कभी न रखना।"

बुलनर के अस्तित्व को सुरक्षित रखने के लिए वह विशेष रूप में सतर्क हो उठी थी। उसके जीवित स्पर्श का अनुभव करने की ओर भी वह आगे बढ़ी। जब कभी वह बुलनर से मिलती, उसकी याद बनाये रखने के लिए कुछ-न-कुछ उससे पाना चाहती। बुलनर के बालों का एक गुच्छा उसने अपने पास रक्खा, उसकी जेब से एक दिन पेन्सिल निकाल ली, कोट का एक बटन तोड़कर अपने हृदय से लगा लिया, उसके हाथों से एक अँगूठी पाने के लिए रोज़ तक़ाज़ा करने लगी। कोई

ऐसी चीज़ वह चाहती थी, जिसके सहारे एक घड़ी के लिए भी वह उसे न भूल सके।

कभी-कभी अपनी मा की याद भी उसे हो आती थी। मा को लेकर बुलनर से घण्टों बातें करती। बुलनर भी अपनी मा का हाल सुनाता था। बीस साल उसकी मा को मरे हो गये। उसके जीवन में जितना स्नेह था, सब मा के साथ चला गया। सुनकर एम्मा व्यथित हो उठती। बुलनर को हृदय से लगा लेती। आकाश की ओर दोनों की आँखें उठकर रह जातीं। मा का आशीर्वाद पाने के लिए दोनों विह्वल हो उठते।

मा के बाद बुलनर को जीवन में स्नेह नहीं मिला था। जो कुछ मिला, वह था अनादर, उपेक्षा और ठोकरें। एम्मा को पाकर उसने नये जीवन का अनुभव किया। मा का स्नेह जैसे फिर से मिल गया। एम्मा के सामने आने पर मा की याद आ जाती थी। धीरे-धीरे मा की याद एम्मा में ही विलीन होकर रह गई। जब-जब वह मा की याद करता था, एम्मा का चेहरा सामने आ जाता था। अनेक बार उसने मा का आवाहन करना चाहा है, और एम्मा सामने आगई है।

मा का यह रूप उसने पहले कभी नहीं देखा था। न आकर्षण की कमी थी, न स्नेह की। अटपटा लगता था उस समय, जब एम्मा 'मा' को पीछे छोड़ आगे बढ़ चलती थी। तब वह एम्मा से दूर हट मा की याद करने लगता था। जितनी मात्रा में वह एम्मा की ओर आकर्षित होता था, उतनी ही मात्रा में पीछे भी हटता था।

पहले की तरह एम्मा से अब वह बातें नहीं करता था। दो हाथ की दूरी वह बीच में बनाये रहता था। एम्मा इस दूरी को भरना चाहती थी, वह अलग हट जाता था। एम्मा को मालूम होता, पानी की

गहराई कम होती जा रही है। नीचे की धरती साफ़ दिखाई पड़ती थी। देखकर भी एम्मा इसे नहीं देखती थी।

एक दिन एम्मा को अपने पिता का पत्र मिला। लिखा था, एम्मा बहुत याद आती है। चार्ल्स और बर्था का भी पत्र में ज़िक्र था। लड़की के लिए कुछ खिलौने भी उन्होंने भेजे थे। अनेक शुभेच्छाओं के साथ पत्र समाप्त हुआ था।

पत्र को पढ़ने के बाद कितनी देर तक एम्मा अपने हाथ में लिये रही। पत्र के अक्षर कुछ उखड़े-उखड़े-से थे, बीच-बीच में एक-दूसरे से उलझकर भी रह गये थे, मिट्टी कुरेदकर सुखाये जाने से अक्षर कुछ मटमैले भी हो गये थे। कहीं-कहीं मिट्टी अभी तक चिपकी हुई थी। पत्र खोलने पर मिट्टी के कुछ कण झड़कर एम्मा के कपड़ों पर आ गिरे। पिता का चित्र उसकी आँखों के सामने आ गया। उसके जीवन से कितनी दूर वे हट गये हैं। मा के मरने के बाद वे अलग ही होते गये। एम्मा को वह दिन याद आया, टाँग के टूटने के बाद, चार्ल्स ने पहले-पहल जब घर में प्रवेश किया था। फिर विवाह हुआ, पिता का स्थान पति ने ले लिया, वह बर्था की मा बनी और... ।

बीते दिनों की स्मृतियाँ ही उसके पास रह गई हैं। एक भी दिन ऐसा नहीं, जिसे पकड़कर वह अपने साथ रख सकी हो। सभी पीछे छूट गये, छूटते जा रहे हैं।

बर्था की किलकारी सुनकर एम्मा चौंक उठी। किसी कीड़े को पकड़ने के लिए किलकारी मारकर वह आगे बढ़ना चाहती थी। नौकरानी ने उसकी फ्रॉक का छोर पकड़ रक्खा था, हवा में हाथ फेंकते हुए बर्था उलट-पुलट हो रही थी। गोदी में उठाकर एम्मा उसे प्यार

करने लगी। उसके कपड़ों पर मिट्टी लग गई थी। एम्मा ने झाड़कर साफ़ कर दिया। कीड़े की याद भुलाने के लिए उड़ती चिड़िया की ओर उसने बर्था का ध्यान खींचा—अरे रे, देखो तो, वह ले उड़ी!

फिर बर्था को नीचे छोड़ कमरे में टहलने लगी। बुलनर उस रात आया था, लेकिन उसने कोई बात नहीं की। उसकी उपेक्षा से 'घनिष्ठ' होकर वह चला गया।

(१४)

चार्ल्स का जीवन एकरस हो चला था। इस एकरसता का कारण एम्मा नहीं थी। बुलनर का भी इसमें कोई स्थान न था। असन्तोष उसे अपनी डाक्टरी से था—जिस तरह उसकी डाक्टरी चल रही थी उस हिसाब से कुछ न हो सकेगा।

रह-रहकर वह अपने बारे में सोचता था। डाक्टरी से अधिक उसका सोचना चलता था। उसे अपनी मा का ख़याल आया, फिर पिता का। स्कूल-जीवन का वह पहला दिन भी याद आया, जब सब लड़के खिलखिलाकर हँस पड़े थे, उनकी हँसी में उसकी टोपी उछलने लगी थी। फिर भी क्लास में उसने अपना स्थान बना लिया था। उसे आशा होने लगी थी, वह अपने पाँव पर खड़ा हो सकेगा। तीन साल बाद उसके पाँव फिर उखड़े। दूसरे स्कूल में उसे भेज दिया गया। डाक्टरी की मोटी-मोटी किताबें, मुर्दों की चीर-फाड़—सबको सँभालता हुआ वह आगे बढ़ा। डाक्टर वह बन गया। डाक्टर के साथ-साथ पति भी बना और फिर एक प्रेमी! सब कुछ बनने पर भी वह कुछ नहीं बन सका। यह देहाती प्रदेश है, इसकी सीमाओं से टकराकर रह जानेवाली उसकी डाक्टरी है।

उज्ज्वल क्षण उसके जीवन में अनेक आये थे। सब इधर-उधर बिखरे हुए पड़े थे। उन्हें बटोरकर चार्ल्स अपनी डाक्टरी को आलोकित करने का प्रयत्न करने लगा। वे क्षण, जिनमें उसने अपने जीवन से अनेक आशायें बाँधी थीं; वे इरादे, जिनके सहारे खड़े होने की उसने प्रतिज्ञा की थी; उन सबको आज वह फिर से जीवित करना चाहता था। उसके शून्य को भरने में एम्मा ने भी बड़ा भाग लिया था। उसे भी वह अपने साथ रखना चाहता था। उसकी काली पुतलियों में अपनी प्रतिमा देखकर उसने जो स्फूर्ति पाई थी, उसे फिर से समेटकर वह आगे बढ़ना चाहता था। जीवन के प्रत्येक स्खलित क्षण की ज्योति से वह अपने पथ को आलोकित करना चाहता था।

जैसे स्वप्न देखकर एक रात चार्ल्स चौंककर उठ बैठा। एम्मा को भी उसने जगाया। बोला—"एम्मा!"

"क्या है?" एम्मा ने पूछा।

"केवल डाक्टरी करने के लिए ही मैं डाक्टर नहीं बना हूँ एम्मा!" उसने कहा, "मैं विशेषज्ञ बनना चाहता हूँ।"

एम्मा चार्ल्स का मुँह देखने लगी। उसकी कुछ समझ में नहीं आया। चार्ल्स ने फिर कहा—"तुम नहीं समझ सकीं एम्मा। अच्छा, मैं बताऊँगा।"

डाक्टरी की नई किताबों की सूची चार्ल्स ने मँगाई। कितने ही विशेषज्ञों की किताबें उसने चुनीं, उनका आर्डर दे दिया। किताबें आगईं। एम्मा किताबों को देखकर मुग्ध हो गई। चमड़े की सुन्दर जिल्द पर सुनहरे अक्षरों में छपे हुए नाम उसे बहुत अच्छे लगे। चार्ल्स किताबों के बारे में बहुत कुछ बताता था। वह कुछ समझ नहीं पाती थी,

जिल्द के सुनहरे अक्षर उसकी आँखों के सामने नाचने लगते थे। सब कुछ सुनकर उसके हृदय में भी आशा जग उठी थी। चार्ल्स का नाम भी एक दिन सुनहरा हो उठेगा। आँखें बन्दकर उस दिन की वह कल्पना करने लगी।

इस कल्पना को प्रत्यक्ष करने का प्रयत्न जितना अधिक एम्मा करती थी, उतना ही चार्ल्स भी करता था। दोनों एक दूसरे को उत्साहित करते थे। उत्साह के द्वारा उत्साह के आधार को वे पाना चाहते थे। अपने प्रत्येक क़दम का परिचय चार्ल्स देता रहता था। एम्मा की पुतलियों में डूबकर प्रत्येक क़दम की थाह लिये बिना अगला क़दम वह नहीं उठाता था। एम्मा जैसे सहारा देकर उसे उबार लेती थी।

एक रोगी को देखकर चार्ल्स इधर बहुत व्यथित हुआ था। सारा शरीर रोगी का अच्छा था। एक टाँग थी जो गड़बड़ हो गई थी। लकड़ी की तरह सीधी उसके शरीर से जड़ी थी। शरीर लड़खड़ाकर गिर न पड़े, इस डर से जैसे किसी ने टेक लगा दी हो। चार्ल्स के मस्तिष्क में यह टाँग उलझकर रह गई। उसी के बारे में वह सोचता रहा। दबे-पाँव से एम्मा उसके पास जाती थी, फिर लौट आती थी। खाना पड़ा ठण्डा हो रहा था, लेकिन उसने कुछ नहीं कहा। एकाएक उसे चार्ल्स की आवाज़ सुनाई पड़ी—"एम्मा !"

आवाज़ का सूत्र पकड़ जैसे पानी पर तैरती हुई एम्मा पहुँच गई। चार्ल्स ने कहा—"तुम्हें याद है एम्मा, हम दोनों की पहली भेंट कैसे हुई थी?"

"हाँ, याद है," एम्मा ने कहा, "पिता जी घोड़े पर से गिर पड़े थे और......"

"ठीक, एम्मा," चार्ल्स ने कहा, "उसी क्षण को अपने जीवन का लक्ष्य बनाकर मैं आगे बढ़ना चाहता हूँ। सारा शरीर भला-चंगा हो, लेकिन टाँग में ज़रा भी गड़बड़ी होने से वह काम नहीं देता।"

इसके बाद चार्ल्स ने नये रोगी की व्यथा का वर्णन किया। एम्मा ध्यान से सुनती रही। अन्त में चार्ल्स ने कहा—"इसी को लेकर मैं आगे बढ़ना चाहता हूँ। इसकी बड़ी ज़रूरत है। जो अपने पाँव पर खड़ा नहीं हो सकता......कल्पना करो एम्मा, वह दिन कितना अच्छा होगा!"

इस योजना का पता पाकर दूकान-मालिक बहुत उत्साहित हुआ। अपनी बातों से सुदूर भविष्य को वर्त्तमान में लाकर उसने खड़ा कर दिया। दुनिया की चाल में जितना भी टेढ़ापन था, सब सीधा होकर सामने आ रहा था। अटेरन चाल से चलते हुए एक व्यक्ति को उसने पकड़ लिया। उससे बोला—"सुनो एक बात। क्या सदा ही इस चाल से चलते रहोगे? देखते-देखते डाक्टर साहब तुम्हें ठीक कर देंगे। जानते हो, इससे कितना लाभ होगा? तुम्हें देखकर और लोग भी आयेंगे। सभी का भला होगा।"

आँखें फाड़कर वह व्यक्ति देखने लगा। सभी उसकी टेढ़ी टाँग को सीधा करना चाहते थे।। जो मिलता, वही उसे समझाता। कुछ उसकी नासमझी पर खेद प्रकट करते, कुछ झुँझला भी उठते। आख़िर उसे कुछ समझ आई। सुनहरे अवसर से लाभ उठाने के लिए वह तैयार हो गया। चार्ल्स ने भी आश्वासन दिया, एक पैसा भी वह उससे नहीं लेगा।

इस प्रयोग की ओर सारी बस्ती की आँखें लगी थीं। एम्मा भी उत्साहित थी। पट्टियाँ तैयार करने में उसने पूरा सहयोग दिया। चार्ल्स

को भी वह आगे बढ़ाये रही। प्रयोग शुरू हुआ। चार्ल्स ने पाँव की एक रग काट डाली। एम्मा पट्टियाँ लिये पास ही खड़ी थी। बाहर और बहुत-से आदमी जमा हो गये थे। उन्हें आशा थी, इसी समय सीधी चाल से आते हुए रोगी को वे देखेंगे। टेढ़ी टाँग सबकी आशाओं का केन्द्र बन गई थी।

चार्ल्स ने बाहर आकर बताया—"सब ठीक हो गया है। तीन दिन बाद पट्टी खुलेगी।"

जो कसर रह गई थी, उसे दूकान-मालिक ने पूरा कर दिया। आकर सबसे कहने लगा—"बड़ी सफ़ाई से डाक्टर साहब ने काम किया। पाँव की रग काट डाली, ख़ून की एक बूंद तक न निकली। रोगी ने चूँ भी न की। आराम से आँखें बन्द किये पड़ा रहा। पलक मारते इतनी बड़ी बात हो गई। देखकर दंग रह गया।"

दंग रहने के बाद दाँतों तले उँगली काटने का अवसर आया तीसरे दिन। मालूम हुआ, उसकी टाँग सूजकर केले का पेड़ हो गई है। पीड़ा इतनी अधिक है कि वह रह-रहकर बेहोश हो जाता है। चार्ल्स ने जाकर देखा, उसे गैंगरीन हो गया है। टाँग में ज़हर फैल गया है। बाहर से बड़े डाक्टर को बुलाया गया। देखकर उन्होंने कहा—"पूरी टाँग काटनी होगी।"

चार्ल्स को मालूम हुआ, जैसे नश्तर उसी की टाँग पर लगनेवाला है। क्या सोचा था, क्या हो गया। दोनों हाथों से सिर को थामे वह सोचने लगा। निश्चय ही उससे कोई भूल हुई है। कोई बात है, जिसका उसे ध्यान नहीं रहा। उस बात को पकड़ने की उसने कोशिश की, लेकिन सफल न हो सका। उठकर कमरे में टहलने लगा। ज़ोर देकर पाँव

ज़मीन पर रख रहा था—ठोकर से खोद कर मानो उस बात को निकाल लाना चाहता हो !

एम्मा भी पास ही थी। उसे लगा, यह ठोकर उसके हृदय पर लग रही है। झुँझलाकर उसने कहा—"बैठ क्यों नह जाते। फ़र्श ने आख़िर तुम्हारा क्या बिगाड़ा है ?"

इसी समय रोगी का हृदय एक गहरी चीत्कार के साथ चुप हो गया। चार्ल्स स्तब्ध होकर अपनी कुरसी पर जा गिरा। एम्मा भी वहाँ खड़ी नहीं रह सकी। अपने कमरे में जाकर पलँग पर पड़ रही।

(१५)

इधर बुलनर एम्मा के निकट नहीं पहुँच सका था। टेढ़ी टाँग उसके मार्ग में आ गई थी। कई बार एम्मा की ओर वह गया। चार्ल्स के साथ उसे व्यस्त देख लौट आया। चार्ल्स के न रहने पर वर्था एम्मा की गोद को घेरे मिलती थी। कहीं जगह न पाकर दूर ही दूर से वह लौट आता था।

एम्मा से अलग रहकर बुलनर के मस्तिष्क ने योजना के बिखरे हुए सूत्रों को एकत्र करना शुरू किया। जल्दी में कहीं ऐसी-वैसी जगह पाँव पड़ गया है, यही वह सोचता था। जीने-मरने का यह सवाल है। इस तरह चलने से काम नहीं चलेगा—नहीं, बिलकुल नहीं चलेगा।

हाथों की मुट्ठियाँ बाँधे बुलनर अपने कमरे में टहल रहा था। विचारों के साथ-साथ उसके क़दमों की गति भी तेज़ होती जाती थी। सोचते-सोचते उसे एकाएक ध्यान आया, बहुत कुछ उसने सोच डाला है।

एक साथ इतना कुछ सोच डालने से ठीक नहीं होगा। पहले एक बात पूरी हो जाय, उसके बाद......

उठा हुआ क़दम उठा ही रह गया। एक क्षण तक एक ही टाँग पर वह खड़ा रहा। विचार भी झटका खा गये थे और क़दम भी लेकिन क़दमों की आहट अब भी आ रही थी। आहट अस्पष्ट से स्पष्टतर होती गई। बुलनर ने घूमकर देखा—एम्मा सामने खड़ी थी।

बुलनर एम्मा को देखता रह गया। अपने को सँभालकर वह कहना चाहता था—उतावली करना ठीक न होगा, लेकिन मुँह से आवाज़ नहीं निकली। वह सोचता रह गया कि अभी कहना ठीक होगा या कुछ देर ठहरा जाय। उसे चुप देखकर एम्मा ने कहा—"ज़रूरी काम से मैं यहाँ आई हूँ। टेढ़ी टाँग को सीधी करने के लिए चार्ल्स ने एक नश्तर लगाया था। बढ़कर वह गैंगरीन हो गया। बड़े डाक्टर को बुलाना पड़ा। उसने पूरी टाँग काट डाली। मैं तो डर गई थी कि टाँग के साथ-साथ उसके प्राण-पखेरू बिदा हो गये, लेकिन बच गया।"

एम्मा के साथ-साथ बुलनर ने भी सन्तोष की साँस ली। एक भारी बोझ उतर जाने के बाद जैसे हलके होकर एम्मा ने फिर कहना शुरू किया—"रह-रहकर उसका मुझे ध्यान आता है। मैं चाहती हूँ पेरिस से एक बहुत बढ़िया टाँग उसके लिए मँगवा दूँ। यही काम है जो तुम्हें मेरे लिए करना होगा।"

टाँग मँगाने के लिए तो चार्ल्स भी तैयार था। एम्मा से उसने कहा भी था कि टाँग का प्रबन्ध अवश्य करना चाहिए। एम्मा को चार्ल्स की यह बात पसन्द भी आई थी। लेकिन उसे विश्वास नहीं होता था

कि चार्ल्स उतनी ही बढ़िया टाँग मँगा सकेगा, जैसी कि वह चाहती है। इसी लिए उसने बुलनर का सहारा लिया। बढ़िया टाँग भी आ जायगी, चार्ल्स भी देखकर धक् रह जायगा। उस क्षण की कल्पनाकर एम्मा उत्साहित हो उठी और सब काम छोड़कर बुलनर के पास पहुँच गई।

ठीक समय पर टाँग आगई। बहुत बढ़िया थी। चार्ल्स देखकर दंग रह गया। जिसके लिए टाँग आई थी, वह तो घंटों उसे देखता रहा। ऐसी जीवन-संगिनी पाने की जैसे उसे स्वप्न में भी आशा नहीं थी। ख़ूब सँवारकर उसे रखता था। लगाने से मैली हो जायगी, इसलिए उसका प्रयोग करते भी उसे हिचक होती थी। शाम को, नियत समय पर, उसे लगाकर एम्मा को सलाम करने वह आता था। जिस दिन एम्मा को इस टाँग की आहट सुनाई न पड़ती, अथवा कुछ देर हो जाती, वह व्यथित हो उठती। उसे सूना-सूना-सा लगता। चार्ल्स के कानों में यह आहट यहाँ तक समा गई कि सो जाने पर भी सुनाई पड़ती थी। लगता था, जैसे वह उसका पीछा कर रही है।

टाँग का दान करके एम्मा ने जैसे अपनी ज़मीन को मज़बूत कर लिया था। पाँव तले की धरती अब खिसकती हुई नहीं मालूम होती थी, न अब ऐसा ही लगता था कि आँधी में उड़नेवाले पत्ते की तरह उसका अस्तित्व हो गया है। अतल गहराई में डूबने के क्षण भी अब उससे दूर होते जा रहे थे। एक प्रकार की पूर्णता का वह अनुभव करती थी। अनुभव ही नहीं, उस पूर्णता को प्रत्यक्ष भी कर सकती थी। इसके लिए न अब उसे चार्ल्स का मुँह देखना पड़ता था, न बुलनर का, न और किसी का। ये सब उसके लिए जैसे निमित्तमात्र रह गये थे। इसी

रूप में वह उनका साथ देना अथवा पाना चाहती थी। पहले जीवन इन्हीं तक सीमित था, साधन और उद्देश्य एक-दूसरे से उलझकर रह गये थे। जीवन की प्रगति का प्रारम्भ ही उसका अन्त बन गया था। अब ऐसा नहीं रहा था। जीवन का क्षेत्र व्यापक हो गया था। वह आगे बढ़ सकती थी।

चार्ल्स के साथ क़दम-से-क़दम मिलाकर वह चलने लगी। चार्ल्स मरीज़ों के लिए नुस्ख़े लिखता था, एम्मा उनके पथ्य का प्रबन्ध करती थी। एक द्वार से चार्ल्स बाहर निकलता था, दूसरे से वह अन्दर जाती थी। चार्ल्स फ़ीस लेकर घर में आता था, वह फ़ीस के पैसे देकर बाहर निकलती थी। रोगियों का पैसा रोगियों के पास ही पहुँच जाता था। चार्ल्स एम्मा के बटुवे को भरने का जितना ही प्रयत्न करता, उतना ही वह ख़ाली हो जाता था। पास पैसा न होने पर उधार भी वह ले लेती थी। रोगियों की दवा-दारू और पथ्य का प्रबन्ध तो वह करती ही थी, उनके बच्चों को उपहार भी देती थी। चार्ल्स की डाक्टरी से अधिक उसकी सेवा चल रही थी।

उधार की मात्रा बढ़ जाने पर चलने में बाधा आ उपस्थित हुई। एम्मा के एक हाथ में ख़ाली बटुवा था, दूसरे में बिल। इस अवस्था को वह अभी पार कर भी न पाई थी कि एक बाधा और आगई। वह थी चार्ल्स की मा। पति की आवारगी क्रूरता पर उतर आई थी। चार्ल्स की मा के लिए घर में रहना दूभर हो गया। बहुत दिनों तक उसने सहा, आख़िर पति और घर को छोड़ चार्ल्स के पास चली आई। चार्ल्स को उसने अपने अञ्चल की ओट किया और एम्मा पर सतर्क दृष्टि रखनी शुरू की।

एम्मा के जीवन का प्रत्येक उभार चार्ल्स की मा की आँखों में खटकता था। चार्ल्स जो अब तक सितारा बनकर चमकने नहीं लगा है, इसका कारण वह एम्मा को ही समझती थी। चार्ल्स ने जो बिना मा की अनुमति के एम्मा से विवाह किया है, इसलिए उससे भी वह कुछ असन्तुष्ट थी। लेकिन असन्तोष का यह उफ़ान भी जाकर उतरता था एम्मा के ही सिर पर। वही सारे झगड़ों की जड़ है।

प्रमाणों की कमी नहीं थी। एम्मा की नौकरानी और दूकान-मालिक का नौकर इधर अधिक घनिष्ठ हो उठे थे। एम्मा के आँगन में दोनों को हँसते हुए एक दिन चार्ल्स की मा ने देख लिया। जिस घर में ऐसे कौतुक हों, उसका राम ही मालिक है, आँगन में दोनों को हँसता छोड़, पहुँची एम्मा के पास। एम्मा न जाने क्या सोचते-सोचते आईने के सामने जा खड़ी हुई थी। चार्ल्स की मा की आवाज़ सुन चौंक उठी।

मा कह रही थी—"जब देखो तब आईने के सामने रानी जी का सिंगार चलता रहता है। जैसी आप हैं, वैसे ही नौकर। कमरे में जाओ तो रानी जी बाल सँवारती मिलती हैं, बाहर जाओ तो आँगन में गलबहियों का खेल दिखाई पड़ता है। घर न हुआ......"

एम्मा ने कुछ न कहा। वह चुप हो रही। ऐसे अवसर भी आते थे, जब चुप रहना मुश्किल हो उठता था। एक दिन मा ने बुलनर के साथ एम्मा को बातें करते देख लिया। मा से न रहा गया। बुलनर के चले जाने पर एम्मा के पास पहुँची। बोली—"चार्ल्स के साथ तो एक दिन भी इस तरह घुटकर बातें करते नहीं देखा। अपने तो पराये हो गये हैं, पराये अपने। मैं भी तो कहूँ कि चार्ल्स क्यों दिन-दिन घुलता जा रहा है?"

एम्मा को बड़ा बुरा लगा। बोली—"जी हाँ, अपनों को मैं समझती हूँ। लेकिन ग़ैर समझकर तुम्हारी तरह उन्हें छोड़ नहीं दि है। पति को तो सँभाल न सकीं, अब चली हैं बेटे को सँभालने!"

मा एम्मा की जीभ बाहर खींचने के लिए आगे बढ़ी, एम्मा धक्का दिया। आवाज़ सुन चार्ल्स दौड़ा। मा को गिरी देख, उस सहारा दिया। वह उठ खड़ी हुई। सारा शरीर काँप रहा था, ओ फड़फड़ा रहे थे। मा का हाथ पकड़ चार्ल्स अपने कमरे में ले गया। फिर एम्मा के पास जाकर बोला—"एम्मा, तुम्हें आज हो क गया था?"

एम्मा कुछ कहने के लिए मुँह खोलने जा रही थी कि चार्ल्स कहा—"मुझ पर दया करो एम्मा! तुमने मा को नहीं, मुझे धक्का दिया है।"

एम्मा कुछ नहीं बोली। चार्ल्स उसे साथ लेकर अपने मा कमरे में गया। एम्मा सिर झुकाये खड़ी थी। चार्ल्स ने कहा—"इन्हें माफ़ कर दो मा, ये अपना क़सूर मानती हैं।"

माफ़ी-प्रसंग के बाद एम्मा अपने कमरे में आकर पड़ रही। जीव की झुँझलाहट आँसू बनकर फूट चली।

(१६)

मा ने चार्ल्स को अपनाया था, एम्मा ने बुलनर को। मा चार्ल्स अपने जीवन के शून्य को भरना चाहती थी, एम्मा बुलनर के सह आगे बढ़ना चाहती थी। एक से ही प्रतीकों को लेकर दोनों आमने सामने आगई थीं। इस साम्य के साथ अन्तर भी उनमें था। वह

कि मा ने चार्ल्स को अपनी कोख से जन्म दिया था, एम्मा ने बुलनर को जैसे रास्ते में पड़ा पा लिया था। मा अभिसार के अभिशाप को साथ लिये थी, एम्मा के लिए अभिशाप अभिसार बन चला था। एक नीचे से ऊपर चढ़ रहा था, दूसरा ऊपर से नीचे उतर रहा था। बीच आने पर दोनों में मुठभेड़ हो गई। दोनों एक-दूसरे को अपनी-अपनी दिशाओं में चलाने का प्रयत्न करने लगे।

मा चार्ल्स को सामने रखती थीं, एम्मा बुलनर को। विरोधी प्रदर्शन को दोनों अपनाये थे। मा चार्ल्स को संयम का उपदेश देती थी, एम्मा बुलनर को असंयम का। मा चार्ल्स के खाने-पीने का जितना ख़याल रखती थी, एम्मा बुलनर को सामने लाकर सब पर पानी फेर देती थी। मा जितना ही डोर खींचती थी, एम्मा उतनी ही ढील देती थी। मा बुलनर को चार्ल्स बनाना चाहती थी, एम्मा चार्ल्स को बुलनर। स्थिति विकट हो उठी थी; इसलिए कि मा की कोख से चार्ल्स ने जन्म लिया था, बुलनर ने नहीं। उधर एम्मा का पति चार्ल्स बना था, बुलनर नहीं। उसे पुत्र के रूप में अपनाना भी असम्भव हो गया था। न केवल इतना ही, वरन् चार्ल्स अथवा बुलनर को, पति-पुत्र-प्रेमी में से किसी भी एक रूप में स्वीकार करके अपनाना उनका लक्ष्य नहीं था, लक्ष्य था इन्हें लेकर अपने विरोध को प्रत्यक्ष करना। विरोध-प्रदर्शन ही उनका जीवन हो उठा था।

जीवन रुक गया था, विरोध चल रहा था। मा एम्मा की छाया से चार्ल्स की रक्षा करना चाहती थी, एम्मा उस छाया को और भी घना कर रही थी। अपने पुत्र के पीछे मा भूल गई थी कि उसकी बहू भी किसी की गोदी का लाल है। उसके पुत्र को जितने स्नेह की ज़रूरत

है, उससे कहीं अधिक बहू को है। अपनी मा की गोद छोड़कर वह इस घर में आई है। उसका पुत्र ही इस घर में उसे लाया है। वह घर को जला डालनेवाली चिनगारी ही नहीं, उसे आलोकित करनेवाला प्रकाश भी हो सकती है।

चार्ल्स की मा ने अपने जीवन में जितनी कटुता पाई थी, उतना माधुर्य नहीं। एकमात्र पति को पाकर भी वह नहीं पा सकी थी। जो कुछ मिला भी; वह था एकमात्र पुत्र। पति की आवारगी ने चार्ल्स को उसके पेट का बोझ बना दिया था। इस बोझ को दूरकर अपने पति को ही वह चाहती थी। जब वह पेट में था, रोज़ सोचती थी, उससे किसी तरह पीछा छुटे। पति को पास में न पाकर वह झुँझला उठती थी, मुझे बन्धन में डालकर आप इधर-उधर घूमा करते हैं। पति को पाने का जब कोई उपाय नहीं रहा तो अपने एकमात्र पुत्र को ही पूरी तरह पाने का प्रयत्न करना उसने शुरू किया। एकमात्र पति की तरह एकमात्र पुत्र भी कहीं धोखा न दे जाय, इसका वह बराबर ध्यान रखती थी। उसकी गोदी से उतरकर लड़खड़ाता हुआ जब वह अपने पाँवों पर चलने लगा था, उस समय उसे ख़ुशी भी होती थी और दुःख भी। दो क़दम भी वह नहीं चल-पाता था कि लपककर उसे गोदी में खींच लेती थी। उसे डर लगता था कि कहीं वह उसकी गोदी से खिसककर दूर न चला जाय।

एकमात्र पति से निराश हो जाने के बाद वह चार्ल्स के घर आई थी। एम्मा को देखकर उसकी आशङ्का बढ़ आई। एकमात्र पुत्र को उसकी छाया से दूरकर अपनी गोदी में खींच लिया। किसी तरह भी उसे वह अपने से अलग नहीं होने देगी। एम्मा को देखकर उसे उ

युवतियों की याद हो आती थी, जिन्होंने उसके पति को उससे छीन लिया। उसके सुहाग को रौंदकर जिन्होंने उसके पति के साथ होली खेली। एम्मा से वह लड़ती-झगड़ती थी, भला-बुरा उसे कहती थी, घर से बाहर निकालने तक की धमकी देती थी। एम्मा भी अपने अधिकार को प्रत्यत्न करती थी। बहुत परेशान होने पर पहुँचती थी बुलनर के पास। कहती—"अब नहीं सहा जाता। चलो, यहाँ से कहीं चलें।"

बुलनर की मा उसे छोड़कर इस संसार से ही चली गई थी। मा का दूध वह चाहता था, मिली उसे छाछ। मा का दूध समझ अनेक बार उसे अपने मुँह से लगाने का प्रयत्न उसने किया, ओठ खट्टे हो-हो गये। माधुर्य की कल्पना का स्पर्श करते समय उसे भय मालूम होता था। दूध के सामने आने पर भी उसे लगता, यह छाछ ही है। दूर रह-कर ही उसे अपनाना ठीक होगा। अपनाने की बात सामने आने पर, वह जानना चाहता कि यह दूध ही है, छाछ नहीं। यह जानने के लिए लम्बी-चौड़ी योजनायें बनाना शुरू करता। इसके बाद उस योजना को देखता-भालता। उसे काम में लाने से पहले यह निश्चय करना चाहता कि वह ठीक बनी है या नहीं ?

"पगली हुई हो एम्मा !"—कहीं चलने की बात सुनकर बुलनर ने कहा—"इस तरह भाग चलने से क्या कुछ हो सकता है !"

बुलनर एम्मा को गृहस्थी के जञ्जाल से मुक्त करना चाहता था। वह यह भी जानता था, एम्मा इस जञ्जाल में फँसकर खो जाने के लिए नहीं बनी है। उसे ऊपर उठना है। लेकिन ऊपर उठने से पहले वह यह निश्चय कर लेना चाहता था कि उसमें निज की शक्ति कितनी है ?

आचार-विचार के बन्धनों को वह तोड़ सकती है या नहीं ? लज्जा-शील सङ्कोच की बाधाओं की खींच-तान को लेकर प्रयोग किये गये। ऐसी ऐसी तरकीबें वह बताता था कि एम्मा दंग रह जाती थी। पहले प्रेम पत्र लिफ़ाफ़ों में बन्दकर चलते थे। ऐसे स्थान पर उनका आदान प्रदान होता था, जहाँ कोई न देख सके। अब लिफ़ाफ़े के आवरण से भी उन्हें ढँकने की ज़रूरत नहीं रही।

ट्रेनिङ्ग चलने लगी। अगला क़दम इसके बाद ही लिया जा सकेगा। हो सकता है, बीच में ही कोई गड़बड़ हो जाय, एम्मा के लिए घर में रहना असम्भव हो उठे। ऐसा होने पर, ज़रूर कुछ-न-कुछ किया जायगा। एम्मा को उत्साहित करते हुए बुलनर कहने लगा—"बस और कुछ नहीं, अपनी खिड़की पर लाल कपड़ा लटका देना। मैं समझ लूँगा, ख़तरा है!"

घर में रहकर घर के बन्धनों को एम्मा ने तोड़ना शुरू किया। बुलनर भी रोज़ आता था। खिड़की पर लाल ख़तरा तो नहीं मँडराने लगा है, दूर से यह देखकर लौट जाता था। अनेक आशङ्काओं के साथ धड़कते हृदय को सँभाले घर से वह चलता था। पास आने पर एकाएक साहस नहीं होता था कि आँखें खोलकर खिड़की की ओर देख सके। कितनी देर बाद, अधमुँदी आँखों से, ख़तरे का अभाव देख सन्तोष की साँस लेता।

एम्मा से उसका इस तरह आना छिपा न रह सका। बन्धनों के तोड़ने की ट्रेनिङ्ग में बाधा आने लगी। नियत समय पर बुलनर आता था। उस समय से बहुत पहले ही, ट्रेनिङ्ग का काम छोड़, खिड़की पर वह पहुँच जाती थी। बुलनर उसे भूला नहीं है, उसकी मुक्ति के लिए

वह प्रयत्नशील है, आँखें बन्दकर इस भावना का प्रत्यक्ष प्रमाण वह पाती थी। उसे विश्वास हो चला था, जीवन का वह चिरवाञ्छित क्षण अब आया ही चाहता है!

हृदय में एम्मा के उल्लास छा गया। पिछले दिनों के संघर्ष ने जो कटुता ला दी थी, वह माधुर्य से रँग गई। उसके व्यक्तित्व का इतना सुन्दर विकास पहले कभी नहीं हुआ था। पलकपाँवड़े बिछाकर जीवन के अभिसार की वह कल्पना करती थी। अधखुली आँखें, अधखुले ओठ, छितरकर इधर-उधर लहराते हुए उसके बाल, आत्मसमर्पण की इस प्रतिमा को देखकर चार्ल्स मुग्ध हो उठा था। विवाह के प्रारम्भिक दिनों की याद उसके हृदय में आई। उसका हृदय मसोस उठा। न-जाने किसके अभिशाप से यह दैवी आकर्षण मृत्युलोक में उतर आया है!

आधी रात गये चार्ल्स घर लौटता। एम्मा के सुप्त सौन्दर्य को देख ठिठक जाता। पास ही बर्था सोई दिखाई पड़ती। जान पड़ता, चार्ल्स का नन्हा-मुन्ना वर्तमान अपने में दीर्घ भविष्य को छिपाये है। चार्ल्स कल्पना करता, वह बड़ी हो गई है। उसे पढ़ाने-लिखाने की चिन्ताओं में वह व्यस्त है। हाथ, कपड़े और मुँह पर स्याही के दाग़-धब्बे लगाये बर्था उसकी बाँह पकड़कर खींच रही है। कह रही है—"चलिए, बाहर चलिए! हमारे मास्टर साहब आये हैं!"

चार्ल्स की कल्पना ने एकाएक झटका खाया। चौंककर उसने देखा, बर्था पहले की तरह ही सो रही है। एम्मा की ज्योति छिटक-कर जैसे अलग हो गई हो। दोनों की वह तुलना करने लगा। कल्पना ने बर्था को एम्मा जितना ही बड़ा बना दिया। मालूम होता

था, जैसे दो बहनें हों। एक दिन आयेगा, जब उसका विवाह हो
और......।

उसकी कल्पना एक आकार ग्रहण करने जा रही थी कि मा की
आवाज़ आई—"चार्ल्स !"

एम्मा को सोया देख, मा ने मुँह फेर लिया। टाँग पसारे आराम
रानी सो रही हैं। कपड़ों तक का होश नहीं। इसे क्या पड़ी है? जिस
जी को लगती है, वही जानती है !

मा की आवाज़ सुन चार्ल्स चौंक पड़ा था। उसका सकपकाया
मुँह देख मा का हृदय मसोस उठा। एम्मा के प्रति झुँझलाहट
उतनी ही मात्रा में उभर आई। उसका हाथ पकड़ अपने कमरे में
जाते हुए मा ने कहा—"चेहरा कितना उदास पड़ गया है। उदा
की बात ही है। यह तो कहो कि चार्ल्स है, और कोई होता तो पता न
जाता !"

चार्ल्स का बिस्तरा मा ने अपने कमरे में ही लगा दिया। जब त
वह सो नहीं गया, उसका माथा सहलाती रही। रह-रह कर करुण-दृ
से चार्ल्स की ओर वह देखती और एम्मा को भला-बुरा कहती जा
थी। सुबह होने पर एम्मा को सुनाकर कहने लगी—"चार्ल्स घर
बहू क्या, छाती का बोझ ले आया है। बेचारे का दम घुटा जा रहा
और यह बोझ है कि हलका होने में ही नहीं आता !"

बर्था खिसककर मा के कमरे में पहुँच गई थी। किसी चीज़
गिरने की आवाज़ आई। मा ने जाकर देखा, बर्था ने गुलदान तो
डाला है। झुँझलाहट सीमा पार कर चली। बोली—"क्या छोटे, क्या
बड़े, सभी घर का नाश करने पर तुले हैं !"

बर्था को मा ने झँझोड़ डाला था। एकाएक वह रो भी नहीं सकी। एम्मा की गोदी में पहुँचने के बाद उसने सुबकना शुरू किया। एम्मा की आँखों से भी आँसू बहे—उस समय नहीं, शाम को, बुलनर के सामने।

(१७)

घर आकर बुलनर सोचने लगा। पत्र लिखने वह बैठा था, बैठा ही रहा। क़लम थामे हाथ रुका हुआ था, सामने कोरा काग़ज़ पड़ा था, बराबर में दावात मुँह खोले क़लम की प्रतीक्षा कर रही थी।

वह सोच रहा था—एम्मा से अधिक बर्था के बारे में। एम्मा तो बड़ी है, अपनी बात अपने आप देख सकती है; लेकिन बर्था? एम्मा से उसने पूछा था—"और बर्था का क्या होगा?"

"क्यों, उसे भी साथ ले चलेंगे,"—लगे हाथ एम्मा ने उत्तर दे दिया था। पर बुलनर की समझ में बात कुछ आई नहीं। उसने एम्मा से फिर पूछा—"ख़ूब अच्छी तरह से सोच लिया है न तुमने?"

"हाँ, सोच लिया है,"—एम्मा ने कहा—"इस घर से निकलकर किसी कुएँ में डूब मरना भी मेरे लिए कहीं अच्छा होगा!"

कुएँ की कल्पना कर बुलनर चौंक उठा। एम्मा जल्दी कर रही है। जल्दी उसने की भी है। खिड़की पर लाल कपड़ा न लटकाकर वह .ख़ुद ही चली आई। रोज की तरह उस दिन भी लाल कपड़े का अभाव देख सन्तोष की साँस वह ले रहा था। उसकी बंद आँखों के सामने एम्मा के उज्ज्वल भविष्य का चित्र खिंचा हुआ था। वह कल्पना कर रहा था उस दिन की, जब इस जञ्जाल से मुक्त होकर एम्मा का स्वतंत्र विकास

होगा। वह था और एम्मा का वह विकसित रूप। बीच के सारे व्यवधान विलीन हो गये थे। इतने में एम्मा की सुबकियों ने उसे चौंका दिया। अपने विकसित रूप को आँसुओं के पानी में बहाते हुए वह कह रही थी—"बस, बहुत हो चुका। अब नहीं सहा जाता! नहीं, अब मैं यहाँ किसी तरह नहीं रहूँगी।"

घर आने पर बुलनर यही सोचने लगा। एम्मा को एक पत्र वह लिखना चाहता था। कुरसी खींचकर मेज़ के पास बैठ गया, काग़ज़ फैलाकर सामने रक्खा, दावात को भी बराबर में किया और क़लम को सँभालकर बैठ गया। लेकिन कुछ चला नहीं। मेज़ की दराज़ खोलकर फिर वह देखने लगा। उसमें एम्मा का दिया हुआ एक रूमाल था, कुछ फूल भी थे। सूखकर सभी मुरझा गये थे। हाथ में उठाकर उन्हें देखने लगा। आँखों और हृदय से लगाकर फिर उन्हें सँभालकर रख दिया। एक दिन था, जब ये फूल ताज़े थे। सुगंध थी, रंग-रूप था। आज इनमें कुछ भी न रहा!

आज और उस दिन के विरोधी मित्रों की वह कल्पना करने लगा। खिले हुए फूलों की कल्पना को जैसे बरबस खींचकर उसे लाना पड़ रहा था। उनका मुरझाया रूप इसमें बाधा देता था। दोनों एक-दूसरे से प्रतिद्वन्द्विता करते नज़र आते थे। अस्पष्टता और उलझन के अतिरिक्त और कुछ बुलनर के हाथ नहीं आया।

इस उलझन को स्पष्ट रूप में देखने के लिए उसने एम्मा के पत्र निकाले। अक्षर जैसे काग़ज़ पर पड़े हुए थे। अपनी जगह से वे हिले-डुले नहीं थे, रंगीन स्याही भी पहले जैसी ही बनी हुई थी। एम्मा का सारा सौन्दर्य उन अक्षरों में जैसे समा गया था। बुलनर की दृष्टि उन पर

जम गई। एकटक देखता रहा। अक्षर अपने आपमें पूर्ण थे। एक दूसरे से मिलकर वे किसी बाध्य की रचना कर रहे हैं, यह देखने का बुलनर को अवसर नहीं मिला।

लेकिन पत्र में एक ही अक्षर नहीं था। दृष्टि को एक ही केन्द्रविन्दु नहीं मिल सका। कुछ देर तो अक्षर अलग-अलग, अपने स्पष्ट रूप में दिखाई पड़े। फिर एक-दूसरे से उलझकर एकाकार हो चले। सभी अक्षर मिलकर जैसे एक हो जाना चाहते थे। सब कुछ अस्पष्ट और धुँधला हो गया। झुँझलाकर बुलनर ने उन्हें दराज़ में डाल दिया।

उलझन को स्पष्ट करने के लिए अपने अक्षरों का निर्माण करने की ओर वह झुका। क़लम को फिर से सँभाला, काग़ज़ को ठीक किया, दावात की तपस्या भी पूरी हुई। उसने लिखना शुरू किया:—

इस तरह उलझन बढ़ाने से काम नहीं चलेगा, एम्मा! धैर्य से काम लो। मैं तुम्हें सुखी देखना चाहता हूँ।

इतना लिखने के बाद प्रत्येक अक्षर को वह देखने लगा। अक्षर स्पष्ट और सुथरे थे। काग़ज़ पर जमकर बैठे थे। कोई भी उलझन जैसे उन्हें डिगा नहीं सकेगी। सन्तोष की साँस लेकर बुलनर आगे बढ़ा:—

तुम नासमझ नहीं हो। कुएँ में गिरना क्या होता है, यह जानती हो। तुम्हारा आत्मविश्वास, उन्मुक्त भविष्य के लिए तुम्हारा उत्साह—किस अभिशाप के कारण यह सब लेकर तुम इस संसार में आईं!

संवेदना प्रदर्शित करने के लिए उसकी क़लम कुछ देर के लिए चुप हो रही। अवसर नाज़ुक था। आँखों का पानी बहाने से काम नहीं चलेगा। आँसुओं को बटोरकर बुलनर ने फिर लिखना शुरू किया:—

तुम्हारे इस उत्साह और आत्म-विश्वास को मैं कभी नहीं भूल सकता। इसी उत्साह और आत्म-विश्वास के बल पर मैं अपने जीवन को खड़ा कर सका हूँ। इस पर आँच आते मैं नहीं देख सकता। मेरे लिए यह असह्य होगा। इसे बचाना होगा। तुम नहीं जानती एम्मा, इसे बनाये रखने के लिए ही मैं तुमसे दूर रहता हूँ। अपने स्पर्श से भी मुझे भय होता है। रह रहकर सोचता हूँ, क्यों तुम इस संसार में आईं!

एक दूसरे लोक में बुलनर पहुँच गया था। दैवी आकर्षण को लिये एम्मा उसके सामने खड़ी थी। इस आकर्षण की रक्षा करनी ही होगी। पूरी तरह से एम्मा को इसके लिए तैयार करना होगा। उन स्त्रियों में वह नहीं है जो तिनककर बाज़ार के कोठों पर जा पहुँचती हैं। कल्पना को कार्यरूप में परिणत करने के लिए क़लम आगे बढ़ी:—

नहीं एम्मा, यह नहीं होगा। संसार के रूप को तुम नहीं पहचानतीं। सचमुच में वह अन्धा कुआँ हो है। किसी का कुछ पता नहीं चलता, सब कुछ उसमें समाता जाता है। जीवन को निगलने के लिए हर घड़ी मुँह बाये वह तैयार रहता है। जरा-सी भी असावधानो घातक सिद्ध हो सकती है। खूब सोच-समझकर चलना होगा।

एकाएक बुलनर को लगा, कुछ धुँधला-धुँधला-सा सारे कमरे में फैल गया है। ठीक से अस्पष्टता भी इसे नहीं कहा जा सकता। सीधे बैठकर वह सोचने लगा। सामने नज़र गई। खिड़की के पल्ले हवा से बन्द हो गये थे। अब तक इस ओर उसका ध्यान ही नहीं गया था। उठकर पल्ले खोल दिये। कमरे में प्रकाश फैल गया। सन्तुष्ट होकर उसने फिर लिखना शुरू किया:—

मेरा हृदय व्यथित हो उठा है। अपनी ही आँखों से मैं यह सब नहीं दे

सकता हूँ। मैं जा रहा हूँ—ऐसी जगह—जहाँ तुम्हारे इस आत्म-विश्वास और उत्साह को स्थापित कर सकूँ। यही मेरे जीवन का उद्देश्य होगा। जब तक उद्देश्य पूरा न होगा, एक दिन के लिए भी कहीं न टिकूँगा। अच्छा, अब बिदा।

—तुम्हारे ही पथ का पथिक

पत्र समाप्त करने के बाद बुलनर उठा। अपने आप ही कुछ कहना चाहता था; लेकिन मुँह से आवाज़ नहीं निकली। गला कुछ सूखा-सूखा-सा मालूम हुआ। कोने में तिपाई पर सुराही रक्खी थी। गिलास में उँडेलकर पानी पिया।

संध्या हो गई थी। कमरे का अन्धकार घना हो चला। लैम्प जलाकर बुलनर ने इसे सँभाल लिया। मेज़ पर से पत्र को उठाया। पलँग पर पड़कर बार-बार उसे पढ़ने लगा। प्रत्येक अक्षर खूँटा बनकर जैसे काग़ज़ पर गड़ गया था। हर दृष्टि से बुलनर ने पत्र को देखा। अपनी जगह पर सब कुछ ठीक दिखाई पड़ा। वह सन्तुष्ट हुआ। लिफ़ाफ़ा उठाकर पत्र को उसमें रख दिया। चारों ओर देखकर लिफ़ाफ़ा बन्द करने लगा। पत्र लिखने में इतनी देर नहीं लगी थी, जितनी कि उसे बन्द करने में। रह-रहकर वह देखता था, पत्र अच्छी तरह बन्द हो गया है या नहीं? मानो उसे आशङ्का थी, कुछ भी कसर रह जाने से, पत्र बाहर निकल भागेगा!

(१८)

पत्र भागकर कहीं गया नहीं। ठीक एम्मा के पास दूसरे दिन पहुँच गया। फूलों की डाली में छिपाकर बुलनर ने उसे भेजा था। माली के

लड़के के हाथ से एम्मा ने डाली ली और अपने कमरे में चली गई। पत्र को देखकर उसने फूलों को नीचे डाल दिया। वह पत्र को पढ़ रही थी, फूल नीचे फ़र्श पर बिखरे पड़े थे। एकआध पत्ती उसके कपड़ों में भी उलझकर रह गई थी।

पत्र की कुछ ही पंक्तियाँ उसने पढ़ी थीं। आगे नहीं बढ़ सकी। पढ़ना अन्तिम अक्षर तक चाहती थी; पर साहस साथ नहीं देता था।

कमरे से बाहर निकल, वह छत पर चली गई। धूप की तेज़ी से छत और उसके हाथ का पत्र, दोनों ही जैसे जल उठे थे। पत्र को छोड़ उसकी दृष्टि छत की ओट पार कर दूर जा पहुँची। समतल भूमि का अन्त पहाड़ियों से टकराकर जैसे बिखर गया था। वहाँ से लौटकर दृष्टि पास की बस्ती की ओर गई। सभी कुछ स्तब्ध नज़र आता था। एम्मा की आँखें पथरीले घरों से टकराकर रह गईं। हाथ के पत्र का फिर ख़याल आया। एक ही दृष्टि में उसे पढ़ डालना चाहती थी—बिना पढ़े ही पूरा हो जाता तो और भी अच्छा होता!

नीचे उतरकर वह कमरे में गई। अपनी खिड़की के पास बैठ गई। अनजाने ही उसकी उँगलियों ने पत्र की गोली बना डाली थी। सलवटें खोल उसे सीधा करने में लगी। पत्र के अक्षर पत्र के साथ चुरमुर गए थे। एकटक वह उनके इस रूप को देखती रही। फिर हृदय में साहस बटोर अपने आपसे ही कहने लगी—"कुछ नहीं। यह सब अब नहीं होगा!"

अपनी आवाज़ से वह अपने-आप चौंक पड़ी। इस आवाज़ में उसे अपना पत्र नहीं मालूम दिया। अपनापन का अनुभव करने के लिए उसने शब्दों को फिर दोहराया—"नहीं, यह सब अब नहीं होगा!"

आवाज़ पहले से और भी अधिक दूसरी हो गई। जितना ही वह अपनेपन पर ज़ोर देती थी, उतना ही वह अपने से दूर हटती जाती थी। झुँझलाकर एम्मा ने पत्र को अपने से दूर कर दिया, नीचे गिरे फूलों को उठाकर बाहर फेंक दिया। कमरे को एकदम साफ़ वह देखना चाहती थी। बिखरी, उलटी-पलटी चीज़ों को सीधाकर अधमुँदी आँखों से कमरे का निरीक्षण करने लगी।

चार्ल्स की आवाज़ ने उसका ध्यान भङ्ग कर दिया। वह उसे पुकार रहा था—"एम्मा, एम्मा !"

एम्मा घूम गई। सुनाई पड़ा—"यहाँ आओ एम्मा !"

एम्मा आवाज़ का अनुसरणकर चल पड़ी। जाकर देखा—खाने के लिए उसकी प्रतीक्षा की जा रही है। चार्ल्स ने कहा—"क्या कर रही थीं एम्मा ! आओ, बैठो।"

एम्मा खाना खाने बैठ गई। कुछ खाया न गया। पानी के सहारे निवाले गले के नीचे उतारने लगी। खाने से अधिक उसका ध्यान कपड़े के छोर से उलझा था। अभी-अभी उसने देखा, वह फट गया है। सुई-धागा लाकर तुरन्त उसे सीना चाहती थी। बैठे-बैठे उसका दम घुटने लगा। किसी तरह उठकर अपने कमरे में जा सकती तो ठीक होता।

इतने में चार्ल्स ने कहा—"बुलनर इधर अब दिखाई न पड़ेंगे। उनका अभाव अखरेगा।"

एम्मा एकाएक धक्-से रह गई। फिर अपने को सँभालकर बोली—"आपको कैसे मालूम हुआ ?"

"माली का लड़का आया था न,"—चार्ल्स ने कहा,—"उसी से पता चला कि बुलनर बाहर जा रहे हैं।"

एम्मा की कुछ समझ में न आया कि और क्या कहे। उसे चुप देख चार्ल्स ने ही कहना शुरू किया—"चुप हो गई एम्मा! अनहोनी बात तो इसमें कुछ नहीं है। आगे नाथ, न पीछे पगहा। जब जहाँ चाहे जा सकता है। बीमार भी वह रहता है। वायु-परिवर्तन से लाभ ही होगा।"

बुलनर को छोड़कर चार्ल्स खाने की तारीफ़ करने लगा। रीती थाली देख दासी कुछ परोसने आई थी। उसके सामने आने पर चार्ल्स ने कहा—"बहुत अच्छा खाना बना है।"

एम्मा को जैसे अवकाश मिला। चार्ल्स को खाने की तारीफ़ करते छोड़, एम्मा उठ जाना चाहती थी। इसके लिए प्रयत्न भी उसने किया, लेकिन चार्ल्स ने टोक दिया। बोला—"अरे, अभी से उठी जाती हो! कुछ भी तो नहीं खाया तुमने!"

कुछ नहीं से सब कुछ पर एम्मा आगई। देखते-देखते उसने अपनी थाली साफ़ कर दी। चार्ल्स ने पूछा—"और कुछ चाहिए?"

"नहीं,"—एम्मा ने कहा और चार्ल्स के साथ-साथ उठ खड़ी हुई। हाथ-मुँह धोने के बाद एम्मा ने अपने कमरे का रास्ता लिया और चार्ल्स ने अपने।

कुछ देर बाद दासी की आवाज़ सुनकर चार्ल्स को एम्मा के कमरे में जाना पड़ा। एकाएक एम्मा चक्कर खाकर गिर पड़ी थी। दवा सुँघाकर चार्ल्स ने उसे होश में लाया। हाथ-पाँव फेंकते हुए एम्मा कह रही थी—"नहीं-नहीं, मुझे कुछ नहीं चाहिए!"

"हाँ-हाँ, एम्मा! तुम्हें कुछ नहीं चाहिए,"—उसे सँभालते हुए चार्ल्स ने कहा,—"किसी बात की कमी नहीं है तुम्हें! सभी कुछ तुम्हारे पास है एम्मा, सभी कुछ।"

एम्मा को पलंग पर लिटा दिया गया। उसकी चेतना जैसे फिर खो गई थी। ओठ उसके रह-रह कर फड़क उठते थे, पलकें पुतलियों को ढके थीं, हथेली खुली हुई। आँख की कोरों से पानी निकल रहा था। हाथ बिलकुल सफ़ेद पड़ गये थे—जैसे मिट्टी के हों।

एम्मा होश में आने से जैसे इनकार कर रही थी। चेतना का प्रत्येक स्पर्श बड़बड़ाहट के रूप में सामने आता था। चार्ल्स चिन्तित हो उठा। चेतनाविहीन चेतना को सँभालने में काफ़ी दिन लग गये। सारे काम छोड़कर चार्ल्स एम्मा के सिरहाने बैठा रहता। सभी कुछ वह भूल गया था। उसके जीवन की बिखरी हुई व्यस्तता एम्मा पर ही केन्द्रित हो गई थी।

पचीस रोज़ बाद तकियों के सहारे एम्मा बैठने क़ाबिल हुई। हलका पथ्य भी उसे दिया गया। पहली बार एम्मा को देखकर चार्ल्स की आँखों में आँसू भर आये। कमरे में उससे बैठा नहीं गया। वहाँ से उठकर बाहर चला गया। कुछ देर बाद हाथ-मुँह धोकर वापस लौटा। हाथ का सहारा देकर एम्मा को लिटा दिया।

चार्ल्स की दृष्टि में एम्मा ने फिर से जन्म लिया। नई शक्ति के प्रत्येक स्पर्श को वह ध्यान से देखता था। रोज़ एम्मा को काँटे पर तोलता था। हाथ के नाखूनों की परीक्षा करता था। एम्मा की खुली हथेली को अपने हाथ में लेकर घंटों देखा करता। पीलापन अब कम हो चला था।

वह दिन भी आया, जब एम्मा चलने-फिरने लायक़ हुई। अपने हाथ का सहारा देकर चार्ल्स उसे बग़ीचे में टहलाने ले गया। वसन्त के स्वागत के लिए वृक्षों ने अपने पत्तों से धरती को ढक दिया था।

धीरे-धीरे एम्मा ने टहलना शुरू किया। ओठों पर उसके मुस्कान खेलती रहती, धरती पर बिछे सूखे पत्तों को भी जैसे जीवन मिल जाता।

कुछ देर बाद चार्ल्स ने कहा—"थक जाओगी एम्मा! अब कुछ देर सुस्ता लो।"

पास ही एक पत्थर पड़ा था। चार्ल्स ने बैठने के लिए उसकी ओर संकेत किया। एम्मा ने जैसे झटका खाया। बोली—"नहीं-नहीं, मैं यहाँ नहीं बैठूंगी।"

एम्मा सचमुच में थक गई थी। चक्कर-सा आकर उसकी आँखों के आगे अँधेरा छा गया। उसकी बीमारी फिर से लौट आई। वह जीवन उसके शरीर को क्षत-विक्षत कर बाहर आने लगा। एक साथ अनेक रोग उस पर आक्रमण करने लगे। एक हट नहीं पाता कि दूसरा आ जाता था। दवाइयाँ चार्ल्स देता था लेकिन वे पचती नहीं थीं। जी मिचलाकर उलटी हो जाती थी।

(१९)

बग़ीचे के जिस पत्थर पर चार्ल्स ने एम्मा से बैठने के लिए कहा था, जीवन में पहली बार एम्मा ने उसे पत्थर के रूप में देखा था। अब से पहले उसके लिए इस पत्थर का अस्तित्व जीवन से ओतप्रोत था। जीवन से आगे बढ़कर जीवन के आदर्श की अभिव्यक्ति भी उसके द्वारा होती थी। सङ्गीत-प्रेमी युवक के संसर्ग से वह पत्थर जीवित हो उठा था। बुलनर ने उसके अस्तित्व को और भी आकर्षक बना दिया था। प्रेम-पत्रों का आदान-प्रदान इसी पत्थर की ओट को अपनाकर चलता था। चार्ल्स के संकेत ने जैसे उसका जीवन हर लिया, पत्थर ने ऊपर उ

कर और कुछ बनने से इनकार कर दिया। पहले एम्मा की आँखों के आगे अँधेरा छाया, फिर एक चीख़ के साथ हृदय थामकर वद गिर पड़ी। दवाइयों के सहारे सँभला हुआ शरीर फिर से ढह गया।

चार्ल्स ने अपनी डाक्टरी की टेक लगानी शुरू की। साथ ही एक मुश्किल का उसे और भी सामना करना पड़ा। घर के मरीज़ के सहारे स्वय डाक्टरी भी खड़ी नहीं रह सकती। उसके लिए बाहर के रोगी चाहिए—पैसे की समस्या जिनसे हल हो। एम्मा की बीमारी ने चार्ल्स को बाहर के रोगियों से दूर कर दिया था। जिस डाक्टरी की टेक देकर वह एम्मा को खड़ी करना चाहता था, वह भी लड़खड़ाने लगी। चार्ल्स न इसे सँभाल पाता था, न उसे। स्वयं अपने को सँभालकर रखने के मार्ग में भी बाधा आने लगी।

उधार खाते कुछ दिन चला। देखते-देखते इसकी भी सीमा आ गई। चार्ल्स को घर से बाहर निकलते डर मालूम होता था—कहीं कोई टोक न दे। घर से बाहर न निकलने पर टोकनेवाले घर पर ही आने लगे। चार्ल्स की कुछ समझ में न आता था कि क्या करे। जितना ही सोचता था, उतना ही उलझता जाता था। अन्त में सबको अपने से दूरकर कह उठता—अपनी ही बात मैं सोचता हूँ। एम्मा बीमार पड़ी है, उसका मुझे ज़रा भी ध्यान नहीं!

इसके बाद वह अपने को ख़ूब भला-बुरा कहता। एम्मा का पति बनने की अनधिकार चेष्टा उसने की है। अपने से झुँझलाता हुआ पहुँचता एम्मा के पास। स्वर में सारा स्नेह बटोरकर कहता—"अब कैसा जी है एम्मा!"

हर घड़ी उसने एम्मा के बारे में सोचना शुरू किया। एक क्षण के

लिए भी वह एम्मा को अपनी कल्पना से बाहर नहीं रखना चाह
था। सम्भव-असम्भव, सभी तरह के तर्क-वितर्क करके अपने हृदय
इसके लिए वह उत्साहित करता था। अपने को खोकर भी वह एम्
के सुहाग की रक्षा करना चाहता था। पति की कल्पना में बसने
लिए ही जैसे एम्मा ने जन्म लिया था। एम्मा तो बीमार थी
चार्ल्स ने भी अपने सिर बुख़ार चढ़ा लिया।

जाड़ों के दिन आ चले थे। दिन-दिन ठण्ड बढ़ती जा रही थी,
एम्मा सँभलकर भी नहीं सँभल पाती थी। चार्ल्स ने देखा, उस
लिए घूमना ज़रूरी है। आरामकुरसी में पहिये लगवाकर एक गाड़ी
उसने तैयार करा ली। सब कुछ ठीक हो जाने पर वह एम्मा के पा
गया। घूमने का प्रस्ताव पेश किया। गाड़ी का चित्र भी खींचकर साम
रक्खा। एम्मा ने इनकार कर दिया। घूमने से उसे आन्तरिक घृणा
गई थी। हरियाली की कल्पना निर्जीव पत्थरों को सामने ले आती थी

एम्मा का स्वभाव चिड़चिड़ा हो गया था। पहले जो चीज़ें उ
अच्छी लगती थीं, उन्हें देखकर वह अब कुढ़ जाती थी। उसे प्रस
करने के लिए चार्ल्स घण्टों सोचता था। बीते जीवन के किसी सुन्द
प्रसङ्ग को एम्मा के सामने रखता था। झुँझलाकर एम्मा मुँह फेर ले
थी। चार्ल्स की बातें उसे लड़कपन मालूम होती थीं। अधिक बढ़ जा
पर वह झिड़क भी देती थी। चार्ल्स समझता था, बीमारी से उस
स्वभाव ऐसा हो गया है।

बीमारी के चिड़चिड़ेपन को दूर करने के लिए भी वह बहुत कु
सोचता था। बैठे-बैठे एक दिन ख़याल आया—रीते गिलासों के खे
का। एम्मा कितने उछाह से उसे शरबत पिलाती थी!

मधुर चित्र चार्ल्स की आँखों के सामने खिंच गया। रीते गिलासों के खेल को कैसे वह अब तक भूला रहा! एम्मा के चिड़चिड़े स्वभाव का मूल सूत्र जैसे आज उसकी पकड़ में आ गया। एम्मा के पास जाकर बोला—"शरबत पिओगी एम्मा!"

सुनकर एम्मा एकाएक चौंक उठी। बोली—"शरबत—कैसा शरबत?"

"ताज़ा फलों का, एम्मा!" चार्ल्स ने कहा, "तुम्हें याद है एम्मा, रीते गिलास को मुँह से लगाकर तुम......!"

'नहीं-नहीं, मुझे कुछ नहीं चाहिए", एम्मा ने कहा, "जाओ तुम यहाँ से!"

अपने अतिरिक्त और किसी के बारे में एम्मा अब कुछ नहीं सोचना चाहती थी। ऐसी कोई चीज़ आँखों के सामने न पड़ जाय, इसलिए अपने पलँग से नीचे पाँव तक वह नहीं रखती थी। जिस खिड़की पर वह घण्टों बैठी रहती थी, जीवन के अनेक दृश्य जिसके सहारे वह देखती थी, उस पर भी उसने परदा डलवा दिया था। आस-पास की सभी पुरानी चीज़ों को उसने अपने कमरे से हटवा दिया था। शून्य कमरे में सिवाय उसके और कोई न रहे, यही वह चाहती थी, इसी के लिए वह प्रयत्न करती थी। कोई चीज़ ऐसी नहीं रह गई थी, जो दृष्टि को उलझा सके—एम्मा की ही नहीं, औरों की भी। जो उसके कमरे में जाता, उसकी दृष्टि शून्य कमरे में घूमघामकर एम्मा पर ही टिकती थी।

चार्ल्स का जहाँ तक सम्बन्ध था, एम्मा और भी आगे बढ़ गई थी। सूक्ष्म रूप धारणकर वह चार्ल्स के मस्तिष्क में समा गई थी।

एम्मा के कमरे की तरह चार्ल्स का मस्तिष्क भी शून्य हो गया था। बहुत कुछ जाँच-पड़ताल करने पर एम्मा ही वहाँ दिखलाई पड़ती थी। स्वयं चार्ल्स भी यह नहीं चाहता था कि सिवा एम्मा के वहाँ और कोई रहे। जो कोई भी उसके पास आता, उसके मुँह से सबसे पहली और सबसे अन्तिम बात एम्मा के बारे में ही सुनना चाहता। एम्मा के लिए उसकी शुभ-कामना पाने के लिए वह उसे चाय पिलाता था, बड़े चाव से उसकी ख़ातिर-तवाज़ा करता था।

बहुत दिनों के बाद एक नाटक-मण्डली का इस बस्ती में आना हुआ। एम्मा के लिए शुभकामनायें हृदय में लिये कितने ही व्यक्ति चार्ल्स की बैठक को आबाद करने के लिए आने लगे थे। उन्हीं में से एक ने कहा—"एम्मा को नाटक दिखाया जाय तो कैसा! कुछ न कुछ तो उसका जी बहलेगा ही!"

दूसरा बोला—"बात तो ठीक है। जीवन में मनोरंजन का बहुत बड़ा स्थान है। इसके अभाव में आदमी बीमार न भी होता हो तो हो जाये!"

तीसरे ने इसका विरोध किया—"नहीं, यह ठीक नहीं। खेल-तमाशों का असर अच्छा नहीं पड़ता। उन्हें तो अब धरम-करम की बातों में मन लगाना चाहिए।"

बात आगे बढ़ी। नाटक-मण्डलियों के फेर में कितने युवकों का जीवन बरबाद हुआ, कितनी युवतियाँ घर छोड़कर भाग गईं, इसकी पूरी सूची सामने आई। दूसरा पक्ष भी इसमें पीछे न रहा। धरम-करम के नाम पर जितना जो कुछ दुराचार फैला, उसका कच्चा चिट्ठा खोला जाने लगा। दोनों पक्ष एक-दूसरे की पोल खोलने में लग गये। चार्ल्स के उठने का समय न हो जाता तो शायद वे और भी डटे रहते!

उनके चले जाने पर चार्ल्स उठ खड़ा हुआ। नाटक-मण्डली की बात उसे बड़ी अच्छी मालूम हुई। एम्मा इसे अवश्य पसन्द करेगी। क़दम बढ़ाता हुआ एम्मा के कमरे में पहुँचा। बोला—"यहाँ एक नाटक-मण्डली आई है एम्मा! देखने चलोगी?"

चार्ल्स का अपना नाटक ही एम्मा के लिए बहुत था। उसी को देखते-देखते वह उकता गई थी। दूसरे नाटक की बात सुनकर वह झुँझला उठी। बोली—"मेरी जान छोड़ो बाबा! मैं कोई नाटक नहीं देखना चाहती!"

चार्ल्स इतने से ही निराश नहीं हुआ। बालकों की तरह मचलते उत्साह से उसने कहा—"नहीं एम्मा, तुम्हें चलना ही पड़ेगा। बहुत अच्छा नाटक है!"

नाटक को नाटक बनाने के लिए एम्मा आख़िर तैयार हो गई। चार्ल्स बहुत ख़ुश हुआ। अपने घर और नाटक के मण्डप के कई चक्कर उसने लगा डाले। नाटक का कोई अंश छूट न जाय, इसके लिए वह बहुत चिन्तित था। खाना तक उसने अच्छी तरह नहीं खाया। देर हो जाने की आशङ्का ने उसका हाथ रोक दिया। जैसे-तैसे बदन पर कपड़े डाल एम्मा को हाथों-हाथ ले चला। मण्डप के पास जाकर उसने देखा—अभी अन्दर जाने के लिए दरवाज़े तक नहीं खुले हैं। एम्मा को एक जगह स्थापितकर टिकटघर के आस-पास वह चक्कर लगाने लगा।

(२०)

दृश्य कमरे का नाटक ही अब तक एम्मा ने देखा था। परदों के उठने-गिरने का वहाँ काम नहीं था। जो कुछ था, वह सामने प्रत्यक्ष था।

आवरण की ज़रूरत पड़ने पर या तो एम्मा को अपनी आँखें बंद क
लेनी पड़ती थीं, अथवा उस प्रत्यक्षता को कमरे से बाहर कर दे
होता था।

समय से पहले ही चार्ल्स पहुँच गया था। एम्मा के साथ ज
उसने अन्दर प्रवेश किया, मण्डप शून्य था। धीरे-धीरे वह भरने लगा
कुछ देर बाद भरने की गति और भी तेज़ हुई। जीवन की रिक्त
को भरने के लिए सारी बस्ती उमड़ पड़ी थी।

तीसरी घण्टी के साथ परदा उठा। जन-शून्य चौराहे का दृश
सामने था। इस चौराहे से भी अधिक शून्य हृदय को लिये एक व्यक्ति
ने रङ्गमञ्च पर प्रवेश किया। हाथ ऊपर उठाकर आकाश को
पड़ने का निमंत्रण वह दे रहा था। धरती का आलिङ्गन करने के लि
आकाश तो नीचे नहीं उतरा, उसके उठे हुए हाथों के सहारे एम
अवश्य ऊपर उठ गई। वह न अब भीड़ को देख रही थी न अभिनेता
को, न रङ्गमञ्च की दृश्यावली को। इन सबसे उलझकर रह जा
वाली दृष्टि जैसे उसके पास नहीं रही थी।

दृश्य बदल गया था। अभिशाप का आवाहन करनेवाले व्यक्ति
स्थान एक युवती ने ले लिया था। वह प्रेम का आवाहन कर रही थ
उसे देखकर लगता था, उसके हाथ ही नहीं, सम्पूर्ण शरीर ऊपर उ
जायगा—परियों की तरह अब आकाश में उड़ा ही चाहती है। अ
अङ्ग उसका थिरक रहा था। पाँव जैसे ज़मीन पर पड़ना ही न
चाहते थे।

प्रेम का आवाहन सार्थक हुआ। रङ्गमञ्च पर एक प्रेमी ने प्रवे
किया। प्रेम करने में वह पूरी तरह अभ्यस्त था। उसके आते ही

का सागर लहरा गया। वह युवती उसमें डूबने-उतराने लगी। प्रेमी कभी उसे अपने हाथों पर उठा लेता था, कभी छोड़कर दूर हट जाता था, क्षणिक वियोग की व्यथा से बल खाकर फिर लौटता था, युवती के चरणों में बैठकर अपने जीवन को उत्सर्ग करने की क़सम खाता था। चुम्बन और दीर्घ निश्वासों से सारा मण्डप भर गया।

प्रेमाभिनय देखने के लिए एम्मा आगे को झुक गई। सीधी होकर बैठी उस समय, जब प्रेमी और प्रेमिका एक-दूसरे से बिदा हो रहे थे। चुम्बन और दीर्घ निश्वासों के खेल पर परदा गिर रहा था।

"इस प्रेम का क्या यही अन्त होना था !" दीर्घ निश्वास लेते हुए चार्ल्स ने कहा।

"नहीं-नहीं," एम्मा के मुँह से निकला, "वह उसे छोड़ नहीं सकता। वह उसका प्रेमी है।"

प्रेमिका का नाम था लूसी। एक छोड़ दो-दो उसके प्रेमी थे। दोनों में से एक को उसके घरवाले भी चाहते थे। आशा नहीं थी, लूसी उसी के हाथों में जायगी। जहाँ तक लूसी का सम्बन्ध था, वह अभी निश्चय नहीं कर पाई थी, दोनों में से किसको अपनाये। जिसे उसके घरवाले चाहते थे, उसे पाना सहज था। उसे देखने के अवसर भी आसानी से मिल जाते थे। स्वय उसके घरवाले ऐसे अवसरों का निर्माण करते रहते थे— यहाँ तक कि लूसी उकता उठती थी। जिस समय वह दूसरे प्रेमी को देखना-भालना चाहती थी, उस समय आ जाता था पहला !

दूसरे प्रेमी का काम साहसपूर्ण था। लूसी को पाने से पहले उसे परिवारवालों की बाधा को दूर करना था। उस प्रतिद्वन्द्वी को भी हटाना था, जो लूसी के परिवार को साथ लिये प्रेम के मार्ग की बाधा बना

हुआ था। लूसी के बारे में सोचना स्थगितकर इन बाधाओं को दूर करने की ओर ही वह जुट गया। दोनों प्रेमी प्रतिद्वन्द्विता में आगे बढ़े। दोनों का यह श्रेणी-संघर्ष लूसी के लिए महँगा पड़ा। वह बीच में पिसने लगी।

"मेरी तो कुछ समझ में नहीं आता," चार्ल्स ने कहा, "लूसी को चाहते हुए भी ये लोग क्यों नहीं देख पाते कि छुरी और किसी के नहीं, स्वयं लूसी के गले पर ही चल रही है!"

एम्मा झुँझला उठी। बोली—"चुप रहो तुम! जो बात समझ में नहीं आती, उस पर राय देना फ़िज़ूल है।"

"नहीं एम्मा," चार्ल्स ने कहा, "मैं समझना चाहता हूँ।"

इतना कहकर चार्ल्स चुप हो गया। प्रेम को समझने के लिए नाटक को और भी ध्यान से देखने लगा। एम्मा अपनी बात कहकर चुप हो गई थी, चुप ही रही।

विवाह का दृश्य सामने था। दुलहिन के वेष में लूसी रङ्ग-मञ्च पर लाकर खड़ी कर दी गई थी। चेहरा उसका पीला पड़ गया था। विवाह के लिए नहीं, बलि देने के लिए जैसे उसका शृङ्गार किया गया हो। एम्मा से यह दृश्य देखा नहीं गया। आँखें बन्दकर कुरसी पर पड़ रही। उसके अपने विवाह का दृश्य सामने था। विवाह से पहले के चित्र भी बन्द आँखों के सामने सजीव हो उठे थे। चार्ल्स के आगमन ने उसके हृदय में जो उथल-पुथल मचा दी थी, क्या सचमुच में वह प्रेम ही था? हृदय की साधारण कुड़कुड़ के सहारे ही क्या प्रेम आता है? कुछ भी समझने का उसे अवसर नहीं मिला। उसके पिता ने भी इसमें सहायता नहीं दी। अपने घर की शून्यता उन्होंने उसे

समझ लिया था। चार्ल्स को देखते ही वह भी एम्मा को अपने से दूर करने के लिए तैयार हो गये। अपने घर की शून्यता को उसके पल्ले बाँधकर छुट्टी पाई। किसी पति की पत्नी बनने का क्रम इसके बाद शुरू हुआ। कैसा था यह प्रेम और कैसा यह पत्नीत्व? हृदय की कुलबुलाहट की ज़मीन पर दोनों खड़े हुए। क्या हो गया था उसे जो उस समय कुछ भी नहीं समझ सकी?

आँखें बन्द कर लेने से दृष्टि अन्तर्मुखी हो गई थी। जो कुछ वहाँ देखा, वह भी प्रिय नहीं था। कितनी कमज़ोर नींव पर यह जीवन खड़ा हुआ है। आँखें खोलने पर देखा—यह नाटक भी उसी ज़मीन पर चल रहा है। हृदय में संवेदन ने प्रवेश किया—कितने नासमझ हैं ये सब। परदों को उठा-गिराकर, उन पर बेलबूटे बनाकर, बनावटी साधनों के सहारे जीवन-संगीत की सृष्टिकर इस कच्ची नींव को भूलने का प्रयत्न कर रहे हैं!

एम्मा को एक नई दृष्टि मिली। उसी के सहारे वह देखने लगी। नाटक उसके लिए अब निरा नाटक ही नहीं रह गया था। मङ्गल-कामनाओं से घिरी हुई रङ्ग-मञ्च की लूसी पर एम्मा की आँखें टिक गईं। विवाह को सफल बनाने के लिए रङ्ग-मञ्च खूब सजाया गया था। चमकदार गहने और कपड़े पहने स्त्रियों का एक समूह भी वहाँ मौजूद था। बाल-पट्टियों से सभी दुरुस्त थे। एम्मा की दृष्टि के सामने सब निरावरण खड़े थे। एक ओर निराश प्रेमी भी खड़ा था। अपने हाथों को हवा में घुमा रहा था। उसके प्रेम में कोई कमी नहीं आई थी। लूसी का विवाह हो रहा था, वह अपने प्रेम का प्रदर्शन कर रहा था—लूसी के लिए नहीं, वरन् नाटक-मण्डप में जमा हुई अगणित भीड़ के लिए!

इस प्रेम-प्रदर्शन पर परदा गिरते देख एम्मा ने सन्तोष की साँस ली। हृदय की उथल-पुथल इतने से ही शान्त नहीं हुई। रङ्ग-मञ्च पर परदा गिर जाने के बाद एम्मा भीड़ को देखने लगी। बड़े उत्साह से वे बातें कर रहे थे। एम्मा का जी अन्दर-ही-अन्दर घुमड़ उठा। घबराहट इतनी प्रत्यक्ष थी कि चार्ल्स का ध्यान उसकी ओर आकर्षित हो गया। उसने देखा—एम्मा का हृदय बुरी तरह धड़क रहा है।

एम्मा उठकर खुली हवा में जाना चाहती थी। चार्ल्स ने कहा—"नहीं एम्मा, तुम यहीं बैठो। तुम्हारे बदन में ज़रा भी तो दम नहीं रहा है। अभी जाकर तुम्हारे लिए मैं ठण्डा पानी ले आता हूँ।"

भीड़ को चीरता हुआ चार्ल्स चल दिया। लौटने में उसे बड़ी दिक़्क़त हुई। हाथ में शरबत का गिलास था, रास्ते में भीड़। गिलास रह-रहकर छलक उठता था। सँभालने की पूरी कोशिश करते हुए भी चार्ल्स सँभाल नहीं पा रहा था। एक महिला पर, बचाते-बचाते भी, गिलास कुछ छलक पड़ा। इस तरह वह चौंकी, मानो किसी ने छुरी भोंक दी हो। अनेक विशेषणों से उसने चार्ल्स को विभूषित किया। उसका पति भी साथ में था। पत्नी से अधिक उसके बढ़िया कपड़ों की उसे चिन्ता थी। तीखे वाक्यों-द्वारा उसने चार्ल्स के कपड़े उतारने शुरू किये!

आख़िर चार्ल्स एम्मा के पास पहुँचा। एम्मा से अधिक अब उसका साँस उखड़ा हुआ था। लड़खड़ाते हुए शब्द उसके मुँह से निकले—"बड़ी भीड़ है एम्मा! मैं तो समझता था, तुम तक कभी नहीं पहुँच सकूँगा।"

एम्मा के हाथ में गिलास दे देने के बाद वह अपनी जगह पर बैठ

गया। कुछ सँभल जाने पर उसने फिर कहा—"और एम्मा, सुनकर तुम्हें ताज्जुब होगा, बाहर मैंने लियोने को देखा।"

"कौन लियोन ?" एम्मा ने आश्चर्य से पूछा, "वह संगीत-प्रेमी युवक ?"

"हाँ, एम्मा वही," चार्ल्स ने कहा, "वह शरबत पी रहा था। तुमसे मिलने के लिए अभी आता ही होगा।"

एम्मा सुनकर स्तब्ध रह गई !

(२१)

संगीत-प्रेमी युवक से आगे बढ़कर लियोन, अब संगीतज्ञ बन गया था। संगीत की धीमी-सी दमक पहले उसे मत्त बना देती थी। अपने को भी वह भूल जाता था और दुनिया को भी। स्वयं संगीत भी इस भूलभुलैया में खोकर कहीं का कहीं पहुँच जाता था; रह जाता एक दीर्घ निश्वास। उसी को हृदय से लगाये, वह एम्मा से विदा हो गया था—जीवन-संगीत की खोज में।

तीन साल तक वह एम्मा से अलग रहा। एम्मा की याद उसे रह-रहकर आती थी। शुरू-शुरू में अधिक, बाद में जब-तब। सुदूर भविष्य से सुदूर अतीत में एम्मा चली गई थी। फिर भी इतनी दूर नहीं कि वह निराश हो जाय। उसे आशा थी, विश्वास भी था, एक दिन उसके जीवन में भी प्रभात होगा, सम्पूर्ण सृष्टि उसका आभास पाकर थिरकने लगेगी।

अपने को खूब सँभालकर वह चला था। उसका वर्त्तमान रूप इसकी गवाही दे रहा था। उसके बाल न बहुत छोटे थे, न बहुत बड़े।

पगार में जो कुछ पाता था, पहली तारीख़ को ही वह ख़र्च नहीं कर डालता था। उन लोगों में वह नहीं था, जो उधार पर महीना चलाते हैं। पहली तारीख़ आने पर उधारवाले जिनकी जेब ख़ाली कर ले जाते हैं। संगीत-प्रेम का परिचय वह अब भी देता था, लेकिन इस हद तक नहीं कि अपने को भूल जाय। अपने को भूलते उसे बड़ा डर मालूम होता था। इस डर को सँभालने की भी उसने बराबर कोशिश की। उन लोगों की तरह वह नहीं था जो डर के मारे संगीत के पास नहीं जाते हैं। समझते हैं, उनके पाँव उखड़ जायँगे। लियोन ने अपने भय को इस सीमा तक नहीं बढ़ने दिया था। दोनों सिरों की कतर ब्योंत करता हुआ वह चल रहा था।

एम्मा को फिर से अपने जीवन के निकट पाकर पहले की तरह वह अपने को भूल नहीं गया। वह ज़रा भी नहीं सकपकाया। उसके पाँव धरती पर ही टिके रहे। नाटक समाप्त होने पर काफ़ी दूर तक उसने एम्मा और चार्ल्स का साथ दिया। उसे विश्वास था, बिना अपने को खोये वह और भी दूर तक जा सकता है। वापस लौटते समय यही वह सोच रहा था। घर न जाकर आशङ्काहीन क़दमों से वह इधर-उधर घूमता रहा। प्रत्येक क़दम के साथ उसका आत्मविश्वास झलक रहा था। काफ़ी रात गये वह घर पर लौटा। बिस्तर पर पड़े-पड़े भी जैसे वह आगे बढ़ रहा था। उसे पता भी नहीं चला कि कब नींद ने आकर उसके प्रगतिशील क़दमों को अपनी गोद में ले लिया।

दूसरे दिन शाम को एम्मा से फिर उसकी भेंट हुई। चार्ल्स कहीं गया हुआ था। पहली रात एकाएक वह सामने आ गया था। नाटक का कोई पात्र रङ्गमञ्च से उठकर जैसे उसके सामने आकर खड़ा

गया हो। एम्मा कुछ सकपका गई थी। आज ऐसा नहीं हुआ। उसने अपने को सँभाल लिया था। बड़ा हो जाने पर भी लियोन वही संगीत-प्रेमी युवक है। वह अब तटस्थ दृष्टि से देखने लायक़ स्थिति में हो गई थी।

लियोन ने कहा—"अच्छा, अभी तक तुम यहीं टिकी हो! तीन साल हो गये। कल तुमसे पता मालूम करना भी भूल गया था। मुझे शङ्का थी, पता नहीं तुमसे अब भेंट हो या न हो। लेकिन मेरा सौभाग्य, तुम वहीं मिलीं, जहाँ पहले थीं!"

"हाँ, एम्मा ने कहा, "घूमने के लिए सारा संसार पड़ा है। बदलने के लिए घरों की भी कमी नहीं है। लेकिन करने के लिए एक यही काम तो नहीं रह गया है।"

घूमना और घर बदलना ही लियोन का जीवन नहीं रहा, यह उसने प्रत्यक्ष किया। जीवन के उतार-चढ़ाव और काम के विभिन्न रूप एक-एककर सामने आये। दीर्घ निश्वास के उपसंहार के साथ एम्मा ने कहा—"इतनी व्यस्तता के होते हुए भी इतना शून्य। जीवन का यही एक सार जैसे शेष रह गया है!"

इसके बाद दीर्घ-निश्वासों का विश्लेषण चला। बातों के साथ-साथ विश्लेषण भी आगे बढ़ता जाता था। बढ़ते-बढ़ते लियोन को एकाएक ध्यान आया, वह अपने को भूलता जा रहा है। सीमा निर्धारित करते उसे देर न लगी। सीमा के आ जाने पर वह सोचने लगा, किन शब्दों का अब सहारा लिया जाय जो बात भी चलती रहे और सीमा भी पार न हो। शब्दों के अभाव में कुछ रुकावटें पैदा होने लगीं। इस रुकावट का भी रुक-रुककर विश्लेषण हुआ। आवरण की

आवश्यकता सामने आई। दोनों ने एकस्वर हो इसे स्वीकार किया। रुकावट ने दोनों के लिए एक ज़मीन तैयार कर दी—आवरणों का व्यापार शुरू हुआ। परदे उठ-उठकर गिरने लगे। कभी एम्मा डोरी खींचती थी, कभी लियोन। दोनों के सहयोग से जीवन की सृष्टि होने लगी।

आवरणों ने इन दोनों को एक दूसरे के निकट ही नहीं ला दिया, बाहरी बाधाओं को दूर रखने में भी सुविधा हो गई। तीन साल के जीवन में लियोन ने अनेक स्मृतियाँ अपने साथ बटोर ली थीं। एम्मा के लिए ये स्मृतियाँ हृदय का काँटा भी हो सकती थीं। स्वयं एम्मा के जीवन में भी कितनी ही बातें ऐसी आगई थीं, जिन्हें वह लियोन से ही नहीं, अपने से भी छिपाना चाहती थी। क़दम-क़दम पर आवरणों की आवश्यकता का अनुभव वह करती थी। उनके अभाव में बल खाकर वह रह जाती थी। लियोन ने इस अभाव को पूरा कर दिया। पहले शून्य कमरे में भी वह उभरकर आती थी, अब भरे हुए कमरे में भी वह अकेली रह सकती थी। लियोन सामने बैठा बातें करता था। उसके सामने होते हुए भी एम्मा को अकेले होने के लिए बल खाने अथवा कमरा छोड़कर चले जाने की ज़रूरत नहीं रह गई थी।

"लेकिन नहीं" बातें करते-करते एकाएक सतर्क होते हुए एम्मा कहती, "तुम भी कहोगे, मैं अच्छा एक पुराण लेकर बैठ गई। एकआध बात हो तो कही भी जाय, यहाँ तो जीवन भर..."

"नहीं-नहीं, एम्मा," लियोन बीच में ही बोल उठा, "जीवन-विमुख होकर हम जीवन को पार नहीं कर सकते। इस तरह टालने से काम नहीं चलेगा।"

आँखें बन्दकर एम्मा ने जीवन का सामना करना शुरू किया। वह बोली—'मेरे जीवन का वह स्वप्न..."

एम्मा के शब्द जैसे स्वप्नलोक में जाकर खो गये। लियोन ने देखा, एम्मा की आँखों की कोरों में आँसू चमक रहे हैं। एम्मा के खोये शब्दों का सूत्र पकड़ उसने कहना शुरू किया—"हाँ एम्मा, जीवन ऐसा ही है। तुम्हारी तरह मैं घर में बन्द नहीं रहा। घर से बाहर रहकर मैंने जीवन देखा। जानती हो एम्मा, कैसा जीवन था वह ? कहीं कोई हरियाली नहीं, टिकने का स्थान नहीं। भटकते-भटकते एक जगह कुछ आँखें टिकी थीं, लेकिन..."

"कहाँ ? कौन जगह थी वह ?" एम्मा ने बीच में ही बात काट-कर पूछा।

"जगह कोई नहीं, एम्मा !" लियोन ने कहा, "एक लड़की थी।"

दीर्घ निश्वास लेकर लियोन कुछ ठिठक गया। एम्मा ने पूछा—"क्या हुआ फिर उसका ? तुम रुक क्यों गये ?"

"नहीं जानता," लियोन ने कहा, "उसे देखकर मुझे तुम्हारा भ्रम हुआ था, एम्मा ! अच्छी तरह उसे देख भी नहीं पाया था कि जीवन ने धक्का दिया, चौंककर मैं आगे बढ़ गया।"

एम्मा ने एकाएक अपना मुँह फेर लिया। आगे बढ़ने के लिए लियोन का जैसे मार्ग साफ़ कर रही हो। लियोन कह रहा था—"कितनी ही बार तुम्हें पत्र लिखना चाहता था। पत्र लिखे भी और लिख-लिखकर फाड़ भी दिये। भेजने का साहस नहीं कर सका। जीवन ने कहीं कोई गुञ्जाइश नहीं छोड़ी थी !"

एम्मा चुप थी। वह कुछ नहीं बोली। लियोन का स्वर आगे बढ़

रहा था—"जीवन के धक्कों ने मुझे एक जगह नहीं टिकने दिया। तुम्हें विश्वास नहीं होगा, लेकिन सच कहता हूँ एम्मा, चलती गाड़ियों के पहियों से मेरी दृष्टि उलझकर रह जाती थी। अनेक चेहरे सामने आते थे, अनायास उन्हें देखने लगता था, लेकिन व्यर्थ। जो चाहता था, वह कभी न मिला।"

कुछ न बोलने का एम्मा ने जैसे निश्चय कर लिया था। गरदन झुकाये अपने जूतों पर बने बेल-बूटों को वह देख रही थी। सारा शरीर उसका स्थिर था। पाँव का अँगूठा अवश्य जूते पर बने किसी फूल की एकआध पत्ती को साफ़ कर रहा था।

चुप होकर लियोन भी अब एम्मा को ही देखने लगा था। उसके शब्दों ने वातावरण को जैसे बोझिल बना दिया था। बाद के मौन ने इसे और भी प्रत्यक्ष कर दिया। एम्मा ने इस बार मुँह खोला। वह बोली—"किसी को सुख नहीं दे सकते तो दुःख भी न दें। रह-रहकर यही मैं सोचती हूँ। यह जीवन यों ही बीता जा रहा है। इससे किसी को सुख न मिले, यह बात तो समझ में आ जाती है। पर भार हो चलता है यह उस समय जब किसी का दुःख बँटाने का अवसर भी नहीं मिल पाता!"

कुछ देर बाद एम्मा ने फिर कहा—"कभी-कभी सोचती हूँ, मैं किसी अस्पताल में नर्स होती तो कितना अच्छा होता। मैं रोगियों की सेवा करना चाहती हूँ।"

"ठीक कहती हो एम्मा," लियोन ने कहा, "जीवन ने तुम्हारे साथ निर्दय व्यंग्य किया है। तुम रोगियों की सेवा करना चाहती हो, मिला है तुम्हें डाक्टर। ख़ुद रोगी बनकर ही उसका जीवन

पृथक किया जा सकता है। तुम्हें क्या बताऊँ एम्मा, मेरे जीवन में भी..."

जीवन की बातों में जीवन का अभाव देखकर लियोन चुप हो गया। एकाएक अधिक उदास हो उठे एम्मा के मुँह की ओर वह देखने लगा। कुछ समझ में नहीं आता था, किस तरह एम्मा का साथ दे। उसकी उदासी में गलकर उसी समय यह बह जाना चाहता था। अपने स्थूल शरीर को सूक्ष्म बनाकर वह पेश करना चाहता था।

वर्तमान रूप उसकी इस इच्छा का साथ नहीं दे सका। अतीत की स्मृतियों को झाड़-पोंछकर वह पेश करने लगा—पत्थर की देवी पर जैसे फूल चढ़ा रहा हो। पलकों का आवरण खींच एम्मा इन फूलों को स्वीकार करती थी। अतीत ही वर्तमान बन गया था और वर्तमान अनपेक्षित भविष्य के सहारे कहीं शून्य में जाकर खो गया था।

"विचित्र जीवन था हम लोगों का!" लियोन ने कहा, "एक दिन तुमसे मिलने के लिए चला। पता नहीं, तुम्हें याद रहा कि नहीं?"

"मुझे सब याद है," एम्मा ने कहा, "तुम कहे चलो।"

"उस समय तुम सीढ़ियों के पासवाले कमरे में थीं। शायद कहीं जाना चाहती थीं। बिना पूछे ही मैं भी तुम्हारे साथ हो लिया। ज़रा सोचो तो एम्मा, क्या पागलपन था। तुमसे कम-से-कम पूछ तो लेना था। लेकिन नहीं, जैसे आया था, वैसे ही तुम्हारे साथ हो लिया। रास्ते भर मुझे इसका ध्यान बना रहा। सोचता था, तुम्हारे साथ आख़िर मैं चल क्यों रहा हूँ। लेकिन फिर भी चल रहा था। साथ छोड़ते भी नहीं बनता था। नहीं चलने के लिए ही जैसे मैं चल रहा था। चलते चलते तुम एक दूकान में घुस गईं। मैं बाहर ही खड़ा रहा। इसके बाद

अपनी एक महिला-मित्र के घर में तुमने प्रवेश किया। पागल तरह आँखें फाड़े मैं बाहर ही खड़ा रहा।"

एम्मा को भी बड़ा आश्चर्य हुआ। इतनी देर तक वह उसके रहा और उसे पता भी नहीं चला। आँखें बन्दकर वह सोचने लगी-कैसा पागलपन था वह! बहुत दूर से जैसे बोल रही हो, उसके मुँह धीमा स्वर निकला—"ठीक कहते हो तुम—हाँ, ठीक।"

इसके बाद दोनों चुप हो गये। कमरे में अँधेरा हो चला था एम्मा को ध्यान न रहा था कि सध्या बीत गई है। उठकर कमरे उसने उजाला किया। उजाले ने दोनों को स्पष्टकर रख दिया कुछ कहना चाहने पर भी मुँह से आवाज़ नहीं निकल रही थी। एम्मा ने ही मौन भङ्ग किया। बोली—"बीते दिनों को फिर से तरह जीवित करने की अनेक बार इच्छा हुई है। लेकिन सफल नहीं सकी। लड़कों को एक दिन खेलते देखकर मेरा जी मचल उठा चाहती थी, किसी तरह मैं भी उनके साथ खेल पाती! लेकिन ऐसा नहीं सका—कभी हो सकेगा, इसकी आशा भी नहीं है।"

"नहीं, एम्मा, ऐसा नहीं है", लियोन ने उत्साहित होकर "जीवन कभी पुराना नहीं होता। कुछ दिनों के लिए वह साथ सकता है। लेकिन जब भी वह सामने आता है, नया रूप लिये।"

"तुम्हारे लिए यह ठीक हो सकता है," एम्मा ने कहा। कुछ भी वह कहना चाहती थी। लियोन का शब्द सुनकर चुप हो गई। कह रहा था—"और तुम्हारे लिए क्यों नहीं? जीवन ऐसा नहीं एम्मा, तुम भूल"·····

मुँह पर हाथ रखकर एम्मा ने लियोन का स्वर बन्द कर दि

वह एक दूसरा स्वर सुन रही थी—किसी के पाँव की आहट का। मरीज़ों को देखने के बाद चार्ल्स घर लौट आया था।

(२२)

चार्ल्स के क़दमों की आहट को सुनना एम्मा के लिए ज़रूरी था। यह उसकी सीमा थी। यहीं तक अतीत बढ़ सकता था। सीमा आ जाने पर हथेली के आवरण से एम्मा ने लियोन के स्वर को ढक दिया। अतीत पीछे हट गया था, वर्तमान सामने था। लियोन का मुँह उसी तरह खुला रह गया था। शब्दों की इस अप्रत्याशित हत्या पर उसकी आँखें आश्चर्य-मिश्रित विरोध प्रकट कर रही थीं। किञ्चित् रूखे पर मधुर स्वर में एम्मा ने कहा—"तुम्हारे लिए यह ठीक है। तुम जवान हो। जीवन तुम्हारे सामने है। आगे बढ़ सकते हो। तुम्हारे साथ घिसटकर मैं प्रगति में बाधा ही दूँगी। यह मैं नहीं चाहती।"

लियोन को विश्वास नहीं हुआ। एम्मा का मतलब क्या है? वह कहना क्या चाहती है। कुछ देर पहले तो उसका कुछ और ही रूप था। इतनी देर में क्या हो गया। कुछ समझ में नहीं आता।

लियोन एम्मा के मुँह की ओर देखने लगा। उसके अङ्ग-प्रत्यङ्ग का विश्लेषण वह कर रहा था। चेहरा कुछ उदास हो गया है, हाथ-पाँव भी कुछ ढीले पड़ गये हैं, लेकिन जीवन का अभाव इनमें नहीं है।

देखते-देखते एकाएक लियोन ने मुँह फेर लिया। उसके मुँह से निकला—"मुझे माफ़ करो, एम्मा!"

एम्मा ने देखा, लियोन अपने में सिमटा जा रहा है। छोटा होते-होते कहीं खो जाना चाहता है। एम्मा को यह अच्छा नहीं लगा। उसे

कुछ भय भी मालूम हुआ। बड़ा होकर यदि वह उस पर आक्रमण करता, तो भी वह इतना विचलित नहीं होती। अपने को सँभालकर वह बोली—"बातों में कुछ पता न चला, कितना समय हो गया। चाचा भी आ गया है। तुम बैठो तो मैं ज़रा देख आऊँ।"

लियोन भी उठ खड़ा हुआ। बोला—"हाँ, काफ़ी देर हो गई। मैं भी अब चलता हूँ।"

चलते-चलते उसके क़दम रुक गये। मुड़कर उसने कहा—"अच्छा, तो फिर भेंट होगी। इधर-उधर की बातें ही आज होती रहीं। जो कहना चाहता था, वह कह भी नहीं पाया।"

"तो ज़रा बैठो न," एम्मा ने कहा, "मैं नहीं चाहती कि हृदय को बोझिल बनाये तुम यहाँ से जाओ।"

"नहीं एम्मा, ऐसी कोई बात नहीं," लियोन ने कहा, "बोझ मेरे हृदय पर ज़रा भी नहीं है। है भी, तो वह बड़ा ही मधुर बोझ है। जी मैं उससे हलका होना नहीं चाहूँगा।"

"अच्छी बात है," एम्मा ने कहा, "तुम जाओ। फिर किसी दिन देखा जायगा।"

मधुर बोझ ने लियोन के जीवन को मधुमय कर दिया। रात अँधेरी थी, लेकिन लियोन के लिए मधु की कमी न रही। हलका लिये सुबह उठा। घर से बाहर निकला। बड़ा सुहावना समय था। टहलता-टहलता वह बग़ीचे में पहुँच गया। पुरानी स्मृतियाँ सामने आ गईं। उस पत्थर पर बैठकर एम्मा के बारे में सोचने लगा। वह आती ही होगी। यह जगह ऐसी नहीं जो आसानी से भूली जा सके। कोई भी इसे नहीं भूल सकता—एम्मा तो और भी नहीं।

एम्मा उसके पास आ गई थी—कल्पना का आवरण ओढ़े हुए। सारा शरीर उसने ढक लिया था। किसी की सामर्थ्य नहीं थी जो उसे निवारण कर सके। अपने हृदय के आवरण में लेकर लियोन ने उसे और भी सुरक्षित कर दिया। सब तरह से आश्वस्त हो वह उठ खड़ा हुआ। तेज़ दृष्टि से पत्थर की ओर वह देखने लगा। जैसे पत्थर उसका प्रतिद्वन्द्वी हो। एम्मा की स्मृतियों को वह अपने भीतर समाये है—पत्थर कहीं का!

एकाएक चौंककर वह पीछे हट गया। यह पत्थर—जीवन का स्पर्श पाने के लिए पत्थरों का सहारा लेना होगा। नहीं, जीवन यहाँ नहीं है।

वह पीछे हटता ही आया—दिशा-परिवर्तन कर आगे बढ़ा। फूलों को तोड़कर अपने रूमाल में धरने लगा। जो फूल मिलता था, उसे ही तोड़ लेता था। रूमाल भर जाने पर एक जगह वह बैठ गया। तोड़े हुए फूलों को लगाकर एक गुलदस्ता उसने बना डाला। कितनी देर तक हाथ में लिये उसे देखता रहा। फिर आगे बढ़ा। अनायास उसके क़दम एम्मा के घर की ओर बढ़ रहे थे।

एम्मा उस समय अपने घर के दरवाज़े पर खड़ी थी। कहीं जाने के लिए ही वह दरवाज़े तक आई थी। दरवाज़े पर आकर एकाएक भूल गई, कहाँ जाने के लिए तैयार होकर वह आई थी। लियोन को देखकर उसने हाथ से इशारा किया। पास आने पर वह बोला—"मालूम होता है, कहीं जा रही हैं?"

"नहीं", एम्मा ने कहा और चुप हो गई। इस छोटी-सी 'नहीं' से खुद उसे भी सन्तोष नहीं हुआ। कुछ रुककर फिर उसने कहा, "एक

काम से ज़रा बाहर गई थी। अभी लौटी हूँ। दरवाज़े पर कुछ याद कर एकाएक ठिठक गई। लगा, एकआध काम और था, जो रह गया। उसे ही याद कर रही थी। इतने में तुम आ गये।"

"मेरे साथ भी कई बार ऐसा हो चुका है," लियोन ने कहा। फिर उसकी दृष्टि अपने हाथ पर गई। गुलदस्ते को आगे बढ़ाते हुए उसने कहा, "मेरी तुच्छ भेंट स्वीकार करेंगी ?"

यंत्रवत् एम्मा ने गुलदस्ता ले लिया। फिर बोली—"आओ, कुछ देर बैठो।"

लियोन को एकाएक उस पत्थर की याद हो आई। एम्मा के घर की दीवारों पर भी उसकी दृष्टि गई। चार्ल्स का चित्र भी आँखों के सामने से घूम गया। इन सबसे अधिक याद आया एम्मा का निमंत्रण। उससे स्वीकार करते नहीं बना। बोला—"नहीं, एक ज़रूरी काम से इस समय जा रहा हूँ। फिर कभी मिलूँगा।"

एम्मा ने एक बार अपने हाथ के गुलदस्ते को देखा, फिर लियोन के ज़रूरी काम की कल्पना करने लगी। मुँह से निकला—"अच्छी बात है, मैं चलती हूँ।"

लियोन खड़ा रहा। एम्मा चली गई। ज़ीने पर वह चढ़ रही थी। पगध्वनि की पुरानी स्मृति जाग उठी। पुरानी ध्वनि को जगाकर एम्मा घर में विलीन हो गई थी। उसी को हृदय में समेटे लियोन आगे बढ़ा। किसी बाधा को वह स्वीकार नहीं करेगा। आगे बढ़ता ही जायगा।

मार्ग में एक बूढ़े से उसकी टक्कर हो गई। बूढ़ा झुँझला उठा—"इस तरह चलते हैं, जैसे सड़क इन्हीं के बाप-दादा की हो। यह भी

समझना कि मैं बूढ़ा हो गया हूँ। जो चाहेगा वही धक्के देता चलेगा। इन हड्डियों में अब भी दम है!"

अपनी हड्डियों को देखता और बड़बड़ाता बूढ़ा आगे बढ़ गया। एम्मा की पगध्वनि के साथ उसकी शब्द-ध्वनि का अभिसार चल रहा था। लियोन अपने से झुंझला उठा। उसके पाँव ठीक तरह से क्यों नहीं ज़मीन पर पड़ रहे हैं। क्यों वह दूसरों से उलझता चलता है। और यह बूढ़ा—कहता है, हड्डियों में दम है। दम तो पत्थर में भी है!

सामने से आती गाड़ी के कोचवान की आवाज़ सुनकर वह चौंका। हाथ उठाकर गाड़ी को रोकने का इशारा किया। पूछा—"कहाँ जा रहे हो? गाड़ी ख़ाली है?"

"हाँ, हुज़ूर," कोचवान ने कहा।

"तो चलो," कहते हुए लियोन गाड़ी में बैठ गया। गाड़ी अभी तक रुकी हुई थी। झुँझलाकर लियोन ने कहा—"चलते क्यों नहीं?"

"कहाँ चलना होगा, हुज़ूर!" गाड़ीवान ने पूछा।

"सीधे चलो!" लियोन ने कहा और गाड़ी के परदे खींच लिये। गाड़ी चलने लगी। नाक की सीध ख़त्म हो जाने पर गाड़ीवान ने फिर पूछा—"अब किधर चलना होगा, हुज़ूर?"

अन्दर से आवाज़ आई—"बस, चले चलो!"

गाड़ी चलाना भूल कोचवान कुछ सोचने लगा। अंदर से फिर आवाज़ आई—"गाड़ी मत रोको! चले चलो, जहाँ जी चाहे।"

बस्ती के, उस दिन, इस गाड़ी ने इतने चक्कर लगाये कि किसी से छिपा न रहा। सभी को आश्चर्य होता था। यह कैसी गाड़ी है जो रुकना ही नहीं चाहती। कौतुक आगे बढ़ना चाहता था, गाड़ी के

परदों से टकराकर लौट आता था। आख़िर चलते-चलते गाड़ी रुक गई। अंदर से आवाज़ आई—"रुक क्यों गये ? तुमसे कहा था न कि रुकना नहीं होगा ?"

माथे का पसीना पोंछते हुए गाड़ीवान ने कहा—"बस, बहुत हो चुका हुज़ूर। अब छुट्टी दीजिए। घोड़ा हाँफ रहा है। और आगे नहीं बढ़ सकता।"

"अच्छी बात है," एक जगह का नाम लेते हुए लियोन ने कहा, "लेकिन तुम्हें मुझे मेरे ठिकाने पर छोड़ना होगा।"

गाड़ी फिर चली। ठिकाने पर जाकर रुक गई। नीचे उतरकर लियोन ने देखा, ठीक जगह पर वह आ गया है। पैसा देकर गाड़ीवान को विदा किया और अपने पलंग पर आकर पड़ रहा। गाड़ी के पहिये अब भी उसके मस्तिष्क में घूम रहे थे।

(२३)

अनेक विरोधी भावनाओं से एम्मा घिरी रही है। बुलनर के दिये फूलों को उठाकर उसने बाहर फेंक दिया था। बग़ीचे में पत्थर के पास चक्कर खाकर गिर पड़ने के बाद उसे फूलों से और भी चिढ़ हो गई थी। बग़ीचे की कल्पना-मात्र से उसका मस्तिष्क झनझना उठता था। एक दिन था, जब पत्थर भी उसके लिए फूल से अधिक कोमल था। ऐसा भी हुआ, जब फूल पत्थर से भी अधिक कठोर हो चला। सबसे विचित्र बात तो यह है कि पत्थर का स्पर्श आता था उसे उस समय, जब कि उसका हृदय कोमल था—खिले हुए फूल की तरह। उस समय इस फूल को पत्थर के स्पर्श से बचाने की चिन्ता कभी न हुई।

चिन्ता ने प्रवेश किया हृदय के सुन्न हो जाने पर। पत्थर को पत्थर के समीप लाते उसे डर मालूम होता था। न केवल इतना ही, प्रत्येक फूल को भी वह पत्थर ही समझने लगी थी!

नाटक देखने के बाद उसकी भावनाओं में फिर परिवर्तन हुआ। एक नई दृष्टि उसे मिली। वेदना ने उसके सुन्न हृदय में प्रवेश किया। पीड़ा का माधुर्य मूर्तिमान् हो उठा। उसने अनुभव किया—पत्थरों के इस व्यापार में चिंगारी ही नहीं, और भी कुछ है जो हृदय का स्पर्श पा सकता है। पत्थरों को लेकर उसके हृदय में जो भय समा गया था, वह जाता रहा। भय से काँपकर ही अब वह नहीं रह जाती थी। पत्थरों का हृदय खोजने के प्रयत्नों की ओर उसका झुकाव हुआ। अपने आपमें कोई पत्थर नहीं है। जीवन की ठोकरें खाते-खाते हृदय पत्थर की तरह कठोर हो गया है। पत्थर की इस कल्पना से उसका हृदय उमड़ पड़ता। आँखें बंदकर इस पीड़ा का वह अनुभव करती। दुःखी संसार का सारा दुःख अपने ऊपर लेने की प्रेरणा हृदय में जाग उठी। धीरे-धीरे उसे विश्वास हो चला, इसी काम को पूरा करने के लिए परमात्मा ने दुःख के इस सागर में उसे छोड़ा है।

दुःख में डूबकर वह दुःखों से ऊपर आगई। दीर्घ निश्वासों के स्थान पर आदर्श वाक्य उसके मुँह से निकलने लगे। बर्था का शैशव दैवी आकर्षण लिये अब सामने आता था। अभिशापग्रस्त संसार से उसकी रक्षा करने के लिए अपनी गोदी में उसे उठा लेती थी। अपने खेल में व्यस्त बर्था इस तरह के अप्रत्याशित हस्तक्षेप से सकपका जाती। उसकी फटी हुई आँखें देखकर एम्मा का हृदय और भी उमड़ पड़ता।

रानी बिटिया का स्थान अब ऊँचा हो गया था। ऊपर तो वह पहले भी उठती थी, लेकिन एम्मा की गोद तक ही। ऊपर उठे देर भी नहीं होती थी कि वह फिर धरती पर आ गिरती थी। फ़रिश्तों की पंक्ति में एम्मा ने उसे अब पहुँचा दिया था। बर्था को ही नहीं, औरों को भी वह इसी रूप में लेती थी। चार्ल्स को देखकर भी उसका हृदय वेदना से उमड़ पड़ता था। वह तो बर्था से भी भोला है। कुछ भी नहीं समझता।

बर्था की तरह चार्ल्स की आँखें भी एम्मा के सामने खुली रह जाती थीं। वह खोया-खोया-सा हो जाता था। पास जाते उसे डर मालूम होता था। वह ठिठककर दो हाथ की दूरी पर ही रह जाता था। दोनों हाथों से अपने मुँह को ढककर कभी-कभी उसे भागना भी पड़ जाता। उसकी यह अवस्था देखकर एम्मा का हृदय और भी उमड़ पड़ता। आँखें बन्दकर वह कल्पना करती—एक दिन आयेगा, जब सारा रहस्य उस पर अपने आप प्रकट हो जायगा। भागना छोड़कर शान्ति से वह अपना जीवन बिता सकेगा।

लियोन के हाथ से गुलदस्ता लेकर वह अपने कमरे में चली आई। गुलदस्ते को लियोन से अलग करके देखने लगी। देखते-देखते अपने से भी गुलदस्ते को उसने अलग कर दिया। सावधानी से एक जगह उसे स्थापितकर वह अलग हट गई। तटस्थ दृष्टि से उसने गुलदस्ते को देखना शुरू किया। उसने देखा—गुलदस्ते के फूल क्षत-विक्षत हो गये हैं। तोड़नेवाले ने फूल समझकर इन्हें नहीं तोड़ा है। मालूम होता है, जो डाल सामने आ गई, उसी को नोंचा-खसोटा गया है। फूल खिले हुए ही हों, इसका ध्यान भी नहीं रक्खा गया है। कितनी ही कच्ची

कलियाँ भी गुलदस्ते में उलझी हैं। कुछ ऐसी भी हैं, खिलने के लिए जिनके ओठों पर मुस्कराहट की आभा अभी आने ही लगी थी। खिले फूलों की पत्तियाँ अस्तव्यस्त हो गई हैं, कच्ची कलियों पर भी घाव दिखाई पड़ रहे हैं।

एम्मा के सामने विचित्र दृश्य था। वह व्यथित हो उठी। खिले फूलों से अधिक कलियों ने उसके हृदय में प्रवेश किया। इन कलियों की रक्षा करनी ही होगी। खिलकर मुरझाने अथवा किसी के निर्दय हाथों से तोड़े जाने के लिए ही इनका अस्तित्व नहीं है। खिले फूलों को भी वह कलियों के रूप में ही देखने लगी। आगे बढ़कर उसने गुल-दस्ते को उठा लिया। अस्तव्यस्त पत्तियों को अपनी उँगलियों से समेट-कर कली का रूप देने लगी। हाथ हटा लेने पर पत्तियाँ फिर बिखर पड़ती थीं।

लियोन का उसे ध्यान आया। तुच्छ भेंट के रूप में यह गुलदस्ता वह दे गया है। वह कुछ भी नहीं समझता। जीवन को रौंदता हुआ वह चलता है। कल्पना यह करता है कि जीवन चल रहा है। इसी जीवन की यह भेंट उसने मुझे दी है। एक ज़रूरी काम को पूरा कर दूसरे ज़रूरी काम पर वह गया है। यही एक ज़रूरत उसके जीवन में शेष रह गई है। इसी को पूरा करने की ओर वह झुका है। ना-समझ कहीं का!

इसी समय चार्ल्स ने एम्मा के कमरे में प्रवेश किया। किसी ज़रूरी काम की याद आ जाने पर ही वह एम्मा के कमरे में आया था। एम्मा को देखकर ज़रूरी काम को भूल गया। कुछ देर खड़ा-खड़ा सिर खुज-लाता रहा। कुछ याद नहीं आया। तुरंत लौट जाना भी आज भूल गया

था। कुछ न कर सकने पर बड़ा अटपटा लगा। एकाएक उसकी नज़र गुलदस्ते पर पड़ी। ज़रूरी काम को जैसे एक सहारा मिल गया। आगे बढ़कर गुलदस्ते को उठा लिया। मुग्धभाव से बोला—"बड़े सुन्दर फूल हैं!"

चार्ल्स की आवाज़ सुनकर एम्मा चौंक उठी। चार्ल्स के हाथ में गुलदस्ता देखकर उसका सारा शरीर मरोड़ खा उठा। उसे लगा, चार्ल्स के स्पर्श ने गुलदस्ते के फूलों को और भी छिन्न-भिन्न कर दिया है। तेज़ी से उठी। चार्ल्स के हाथ से गुलदस्ता ले लिया। गुलदान में पानी भरा। गुलदस्ते को उसमें रख सन्तोष की साँस ली।

चार्ल्स से उसने पूछा—"कहिए, क्या काम है?"

"कुछ नहीं," चार्ल्स ने कहा, "यही जानने आया था, आज तुम्हारा जी कैसा है?"

"ठीक है," एम्मा ने कहा। ज़रूरी काम में इस उपसंहार को हृदय से लगाये चार्ल्स चला गया।

अभिशप्त संसार से ऊपर उठकर जीवन ने एम्मा के लिए एक आदर्श रूप ग्रहण कर लिया। संसार की बिखरी हुई वेदनाओं को समेटकर उसके चरणों में एम्मा अपने अस्तित्व को उत्सर्ग कर देना चाहती थी। क्षत-विक्षत हृदय आँसू बनकर बह चलता था।

मृत्यु की कल्पना पहले उसे बड़ी भयावनी मालूम होती थी। इस हद तक वह त्रस्त हो उठती थी कि उसे अपने से भी भय मालूम होता था। लगता था, वह किसी के काम नहीं आ सकती। जो कुछ भी उसके पास आयेगा, बिखरकर रह जायगा। मृत्यु की कल्पना ने स्वयं उसे भी मृत्यु का प्रतीक बना दिया था। जीवन पर कहीं उसकी छाया न

ड़ जाय, इस डर से जीवन से अपने को दूर रखती थी, जीवन उसका स्पर्श पाकर बिखर नहीं जाता था। बिखरे जीवन को समेटकर एक रूप उसने दे दिया। जीवन की बिखरी वेदनाओं से आदर्श की नींव उसने डाली थी, आँसुओं से सींचकर इस नींव को दृढ़ उसने कर लिया था। इसी ओर उसके सारे प्रयत्न अब निर्देशित होते थे।

मृत्यु की कल्पना अब सुहावनी हो उठी थी। संसार की समग्र वेदनाओं से मुक्त करनेवाला एकमात्र आकर्षक आवरण वह बन गई थी। सम्पूर्ण रूप से अपने शरीर को शिथिल छोड़कर मृत्यु का आलिङ्गन करने का अनेक बार उसने प्रयत्न किया था। जैसे-जैसे वह अपने शरीर को ढीला छोड़ती थी, एक दिव्य ज्योति में वह परिवर्तित होती जाती थी। उसे मालूम होता था, वह ऊपर उठ रही है—ऊपर उठती जा रही है।

यह सब कुछ होते हुए भी इस दुनिया के बन्धनों से वह बँधी हुई थी। एक सीमा तक ही वह ऊपर उठ पाती थी। उसकी इस तटस्थ दृष्टि और ऊपर उठने के प्रयत्नों को उपेक्षा की भावनाओं से अलग करके देखना मुश्किल था। वह ख़ुद भी नहीं देख पाती थी। आशङ्कित हो उठती थी, उसकी तटस्थता उपेक्षा की ज़मीन पर तो खड़ी नहीं हुई है।

ऐसी स्थिति आने पर तुरंत ही ऊपर से नीचे उतरना वह शुरू करती। विरोधी टुकड़ों में उसका व्यक्तित्व बँट गया था। एक को अपनाने पर मालूम होता, दूसरे की उपेक्षा हो रही है। दूसरे की उपेक्षा को दूर करते न करते पहले की ओर उसकी दृष्टि जाती। उपेक्षा और स्नेह का एक साथ ऐसा क्रम चलता था कि देखकर आश्चर्य होता था।

जितनी गहरी उपेक्षा होती थी, उतना ही गहरा स्नेह। तीखी दृष्टि के साथ-साथ मुँह से मधुर शब्दों की वर्षा वह कर सकती थी।

अपनी दासी पर एक दिन वह नाराज़ हो उठी। कोई काम करने के लिए एम्मा ने उसे दिया था, वह टालमटोल कर रही थी। काम को छोड़ बाहर जाने की उसे उतावली हो रही थी। शाम तक के लिए उसका मार्ग बन्द कर एम्मा अपने कमरे में चली आई।

फिर तुरन्त ही वह दासी के पास गई। बोली—"काम से वह अधिक प्यारा है तुम्हें, क्यों?"

दासी के उत्तर की प्रतीक्षा किये बिना उसने फिर कहा—"अच्छा जाओ, मौज करो।"

उसे छुट्टी देकर एम्मा अपने कमरे में चली आई।

(२४)

काम को छोड़कर आगे बढ़नेवाले दासी के प्रेम को लेकर एक दिन काफ़ी हलचल उठ खड़ी हुई। विवाह के प्रारम्भिक दिनों में चार्ल्स ने एम्मा को एक पुस्तक लाकर दी थी। पुस्तक का नाम था—विवाह और प्रेम। कुछ दिन तक एम्मा ने पुस्तक को सँभालकर रक्खा। वह उसके लिए चार्ल्स की एक सुन्दर भेंट थी। दोनों के विवाहित जीवन का सारा आनन्द इस पुस्तक में जैसे समाकर रह गया था। बाद में पुस्तक अपने सुरक्षित स्थान से खिसककर इधर-उधर होती रही। दासी की नज़र उस पर पड़ी। पुस्तक पर लिखे शीर्षक विवाह और प्रेम इन दो शब्दों को पढ़कर समझने लायक़ योग्यता उसमें थी। जब वह आई-आई थी, इतना अक्षर-ज्ञान एम्मा ने उसे करा दिया था। पढ़

लिखाने में एम्मा तो और भी आगे बढ़ना चाहती थी; लेकिन दासी यहीं तक घूम-घामकर रह गई। हृदय की निधि समझ पुस्तक को उठाकर अपने अञ्चल में दासी ने छिपा लिया। बड़े प्रेम से पुस्तक को अपने प्रेमी मित्र के सामने उसने रक्खा। उत्साह से इस प्रेम की भेंट को उसने स्वीकार किया।

दूकान-मालिक को इस पुस्तक पर नज़र पड़ गई। अपने नौकर को वह पहले से ही कोंचते रहते थे। इस पुस्तक को देखकर बहुत बिगड़े। अपराध के साथ अपराधी को उन्होंने पकड़ लिया था। लगे ज़ोर-ज़ोर से उसे भला-बुरा कहने! दो-चार आदमी भी जमा हो गये, उनकी संख्या बढ़ती ही जा रही थी। उनकी भीड़ देखकर दूकान-मालिक से पुस्तक का नाम लेते नहीं बनता था। इधर-उधर की बातें करते थे। वे कह रहे थे—"बदमाशी तो इसकी देखो, डिब्बों पर लेबिल लगाना भी इसे नहीं आता। आम के अचार का लेबिल लगा दिया अमरूद की जेली पर, अमरूद का नमक के डिब्बे पर, नमक के डिब्बे का चीनी पर! दूकान का सत्यानाश करने पर तुला है, बदमाश कहीं का!"

नौकर की अच्छी तरह ख़बर वह लेना चाहता था। एम्मा को भी उसने बुलवा भेजा था। एम्मा ने आकर देखा—दूकान पर एक भीड़ लगी है। कुछ समझ में नहीं आया। दूकान-मालिक से पूछा—"किस-लिए बुलाया था मुझे?"

"किसलिए बुलाया था तुम्हें?"—दूकान-मालिक ने कहा—"हाँ, तुम्हें अब भी कुछ पता नहीं चला? पता चले भी कैसे? जिसे भुगतना पड़ता है, वही जानता है। देखती हो इसे...यह नौकर...यह बदमाश...कहीं मुँह दिखाने लायक़ भी इसने नहीं रक्खा!"

दूकान-मालिक की बात से एम्मा कुछ भी नहीं समझ सकी। उसे छोड़ उसकी पत्नी से पूछा—"क्या हुआ है ?"

कुछ भी कहने से पहले पत्नी दाँतों तले अपनी जीभ ले आई। शब्दों को फिर इधर-उधर करते हुए उसने कहा—"कैसे बताऊँ तुम्हें, ऐसा तो पहले कभी नहीं देखा था !"

भीड़ के छँट जाने पर दूकान-मालिक पुस्तक को लेकर सामने आया। पुस्तक के नाम 'विवाह और प्रेम' को अलग-अलग तोड़कर उसने उच्चारित किया। एक ओर छिटक कर विवाह जा पड़ा था, दूसरी ओर प्रेम।

पत्नी ने आगे बढ़कर पति के हाथ से पुस्तक को छीनकर अलग फेंक दिया। बच्चों को अवसर मिला। उठाकर उसके चित्र देखने लगे। दूकान-मालिक ने घूमकर देखा, आग-बगूला हो गया ! पुस्तक बच्चों से झपटकर छीन ली—"हरामी कहीं के !"

इसी समय चार्ल्स भी वहाँ आगया था। हाथ में उसके एक पत्र था। कितनी देर से एम्मा को वह खोज रहा था। यहाँ आने पर उसने देखा—उसकी प्रेम की भेंट ने एक तूफ़ान खड़ा कर दिया है।

चार्ल्स को देखकर दूकान-मालिक का स्वर कुछ धीमा पड़ा। इसका कारण था। चार्ल्स के आने के बाद छोटी-मोटी दवाइयाँ, मरहम, आदि वह रखने लगा था। चार्ल्स के पीठ-पीछे डॉक्टर बनते भी उसे देर नहीं लगती थी। प्रभाव भी उसका बढ़ गया और दूकान की बिक्री भी। चार्ल्स को देखकर उसने कहना शुरू किया—"यह नहीं कि पुस्तक एकदम ख़राब है। इसे हाथ लगाना पाप है। प्रसिद्ध डॉक्टर की यह लिखी हुई है। लेकिन इसका बच्चों के हाथ में जाना ठीक

नहीं। जो विवाहित हैं, बड़े हो गये हैं, उन्हीं के हाथों में इसे देना चाहिए।"

दूकान-मालिक से चार्ल्स ने पुस्तक को ले लिया। एम्मा के साथ वह लौटा। एक हाथ में उसके पुस्तक थी, दूसरे में पत्र। पत्र उसकी मा के पास से आया था। लिखा था—'उसके पिता का देहान्त हो गया है। मैख़ाने में दारू पीते-पीते उन्हें लकवा मार गया। लोग उठाकर घर लाये। उनकी आँखें बन्द हो गई थीं, अन्त तक बन्द ही रहीं।'

पिता के देहान्त की बात सुनकर चार्ल्स स्तब्ध रह गया था। स्तब्ध रहने का एक कारण और भी था। उसकी समझ में नहीं आ रहा था, एम्मा पर इस दुःखद प्रसंग को कैसे प्रकट करे? सदमा गहरा था! सहज ही और बड़ी सावधानी से एम्मा तक इसे पहुँचाना चाहता था। कई बार उसने प्रयत्न करना चाहा; उसका हृदय आशङ्कित हो उठा। पता नहीं, एम्मा का दुःखी हृदय इस आकस्मिक आघात को सँभाल भी सकेगा या नहीं?

शब्द अटककर चार्ल्स के गले में ही रह जाते थे। कोशिश करने पर भी उन्हें गले से बाहर नहीं निकाल सका। आख़िर मा के पत्र को ही उसने एम्मा के सामने बढ़ा दिया। चुपचाप एम्मा पत्र को पढ़ गई। पढ़ने के बाद पत्र चार्ल्स को लौटा दिया। वह कुछ बोली नहीं।

शाम को खाना खाते समय चार्ल्स को लगा, एम्मा का जी खाने में नहीं लग रहा है। जैसे-तैसे गले से शब्दों को बाहर खींचकर वह कहने लगी—"संसार में यह आना-जाना तो लगा ही रहता है एम्मा! इस तरह खाने-पीने से भी हाथ खींच लोगी तो कैसे चलेगा?"

जो कुछ थोड़ा-बहुत एम्मा अपने गले के नीचे उतार रही थी, वह भी रह गया। अधिक ज़ोर देना चार्ल्स ने भी ठीक नहीं समझा। दूसरी ओर उसका ध्यान अब चला गया था। वह कह रहा था—"कितना अभागा हूँ मैं! मरते समय भी मैं अपने पिता की सेवा नहीं कर सका।"

मा का उसे फिर ध्यान आया। बोला—"एक ही सहारा था, वह भी जाता रहा। पता नहीं, मा का क्या हाल होगा?"

एम्मा अब तक चुप थी। मौन उसे अखर रहा था। कुछ न कुछ कहना ही चाहिए। बोली—"क्या उमर थी उनकी?"

"यही कोई अट्ठावन की होगी" चार्ल्स ने उत्तर दिया। एम्मा के मुँह से एक 'आह!' निकलकर रह गई।

इसके बाद दोनों चुप हो गये। मौन बोझिल हो उठा। दोनों ने ही इस बोझ को स्वीकार किया। अवसर ही ऐसा था। खाना खाने के बाद उठना है, यह भी उन्हें याद नहीं रहा। आकस्मिक दुर्घटना की साभार-साकार स्वीकृति का रूप धारण किये दोनों बैठे थे, बैठे ही रहे।

ज़ीने में किसी के आने की आवाज़ सुन एम्मा और चार्ल्स, दोनों चौंक उठे। आवाज़ नई नहीं थी। यह पहचानते देर नहीं लगी—लकड़ी की टाँग की खट-खट साफ़ सुनाई पड़ रही थी। सकपकाकर चार्ल्स ने सिर उठाया—उसकी असमर्थता की प्रतिमूर्ति सामने खड़ी थी। सिर पर उसके एक ट्रंक लदा था।

चार्ल्स ने पूछा—"क्या है?"

उत्तर मिला—"मा आई हैं।"

चार्ल्स उठकर मा को लिवाने चला, एम्मा अपने कमरे में चली गई।

(२५)

मा को देखकर चार्ल्स की आँखों में आँसू आ गये। अपने पिता से वह सदा दूर-दूर ही रहा, इस बात का उसे बड़ा दुःख था। जीवन में अपने पिता के स्पर्श को इतने निकट से उसने पहले कभी अनुभव नहीं किया था। पिता की स्मृति के साथ-साथ उसके आँसुओं की मात्रा बढ़ती जाती थी। चार्ल्स को रोता देख मा का हृदय भी उमड़ आया। पति की उपेक्षा के वास्तविक रूप को इतने दिनों तक वह क्यों नहीं पहचान सकी? रह-रहकर यही वह सोचती थी। बेहोश होकर न गिर पड़ते तो अपने आप वे उसके पास आते। किसी को उठाकर लाने की ज़रूरत नहीं पड़ती। गोदी में सिर लिये तीन दिन तक वह बैठी रही। एक घड़ी के लिए भी अपना सिर उठाकर गोदी से उन्होंने अलग नहीं किया। न जाने कौन बुरी हवा थी जो वह इतने दिनों तक बाहर भटकते रहे।

पति की प्रत्येक बात मा के लिए आकर्षक हो उठी थी। समय के साथ-साथ आँसुओं की मात्रा कम हो चली, बातों की बढ़ गई। बातें और काम, दोनों साथ-साथ चलने लगे। आँसू बीच में आकर बाधा नहीं देते थे। पति का जीवन, उस जीवन का सम्पूर्ण दुःख, एक पारिवारिक कहानी बन गया था। कपड़ों की कतर-ब्योंत के साथ-साथ कहानी भी चलती रहती थी। कहानी के साथ-साथ हाथ की क़ैंची के बहकने की सम्भावना भी नहीं रही थी। जेब में हाथ डाले एकटक चार्ल्स मा की बातें सुना करता। पुराने कपड़ों को फिर से नया बनाने के लिए एम्मा बखिया उधेड़ती रहती। पास ही बर्था किलकारियों के साथ मिट्टी उछालती रहती।

चार्ल्स के पिता अपनी बची-खुची सम्पत्ति एम्मा के नाम लिख गये थे। चार्ल्स को यह जानकर बड़ी ख़ुशी हुई। मा का हृदय एक बार कचोट उठा था; लेकिन एम्मा की उदासीनता को देखकर वह चुप हो गई। यह बात सुनकर एम्मा ने कोई उत्साह प्रकट नहीं किया। उसके बर्ताव में भी कोई परिवर्तन नहीं हुआ। कई दिन तक ध्यान से देखने के बाद भी मा को कहने लायक़ कुछ नहीं मिला। एम्मा की इस तटस्थता पर उसे आश्चर्य भी हुआ। उसे लगता था, पति की तरह एम्मा को पहचानने में भी उसने भूल की। पति-सम्बन्धी भूल को स्वीकार करने में उसे विशेष दिक़्क़त नहीं हुई थी। भूल सहज ही एक कहानी भी बन गई थी। एम्मा को लेकर ऐसा नहीं हो सका। स्वीकार करते-करते भी इस भूल को वह अस्वीकार कर उठती थी।

उधारवालों की समस्या अभी तक सुलझ नहीं पाई थी। चार्ल्स चाहता था, मा के सामने उधार की उलझन कभी न आये। एम्मा के सामने भी उसने इसे प्रत्यक्ष नहीं होने दिया था। प्रोनोट लिख-लिखकर किसी तरह उलझन को अब तब वह स्थगित करता आया था। लेकिन प्रोनोटों की भी एक सीमा होती है। वह सीमा अब आ पहुँची थी। चार्ल्स की कुछ समझ में नहीं आता था कि वह क्या करे?

सीमा के आ जाने का एक कारण और भी था। वह था चार्ल्स के पिता की मृत्यु। इससे भी अधिक यह कि पिता की सम्पत्ति एम्मा के नाम लिखी गई है, चार्ल्स के नहीं। प्रोनोटवालों ने अच्छी तरह खोज-बीन कर डाली थी। वे चाहते थे प्रोनोट किसी तरह एम्मा के नाम से हो जायँ।

इस दिशा में एक साहब काफ़ी आगे बढ़े थे। चार्ल्स से मिलने

वे आते थे, दृष्टि खोजने लगती थी एम्मा को। एम्मा के सामने आने पर वे कहते—"सुनकर बड़ा दुःख हुआ। कुछ भी हो, बड़ों के साये में बड़ी बरकत होती है। मेरी मा जब मरी थीं, मैं काफ़ी बड़ा हो गया था। फिर भी बच्चों की तरह बिलख-बिलखकर रोने लगा।"

कुछ देर ठहरकर वह भूमिका बाँधना शुरू करता। अन्त में कहता—"पिता जी ने ठीक ही किया, जो सब कुछ तुम्हारे नाम छोड़ गये। लड़कों का कुछ भरोसा नहीं। बुरी सोहबत में पड़कर सारे करे-धरे पर पानी फेर सकते हैं। बहू के नाम से रहेगा तो फिर भी बहुत कुछ बच जायगा। बहू ही घर की लक्ष्मी होती है।"

जब-तब चार्ल्स के पास वह आता था। शुरू-शुरू में चार्ल्स उसकी छाया देखकर काँप उठता था। धीरे-धीरे चार्ल्स अस्वस्थ हो गया। उसने देखा—प्रोनोट और तकाज़े की बात करना जैसे वह भूल गया है। बातें करता भी है तो इधर-उधर की। चार्ल्स के लिए ट्रेवलिंग-गज़ट—चलता-फिरता अख़बार बनकर वह आता था। घर बैठे बस्ती का सारा हाल उसे मालूम हो जाता था। कोई घटना ऐसी न थी, जो बासी होने के बाद चार्ल्स के पास पहुँचती हो।

चार्ल्स से छुट्टी लेने के बाद एम्मा के पास जाने का अवसर वह पाता। भूमिका बाँधने के लिए कभी उसे इधर-उधर नहीं देखना पड़ा। प्रत्येक बात जैसे टकसाल से गढ़ी-गढ़ाई निकलती थी। वह कहता—"भाग्य से ही ऐसे पिता मिलते हैं। ऐसे ही आदमियों के बारे में कहा जाता है, वे मर कर अमर हो गये। यों तो रोज़ ही सैकड़ों मरते हैं; कोई उनका नाम तक नहीं लेता।"

भूमिकाओं का दौर ही अभी तक चल रहा था। पिता जी की

स्मृति को अमर करने के लिए वह आता था। न चार्ल्स मना कर सकता था, न एम्मा। किसी बात का विरोध करते भी नहीं बनता था। चुपचाप एम्मा सुना करती।

वह कहता—"अपनी थाती पिता जी तुम्हें सौंप गये हैं। उसे सँभालकर रखना। तुम ख़ुद समझदार हो। तुम्हें अधिक समझाने की ज़रूरत नहीं। ज़माना आजकल बड़ा ख़राब है। भाई भाई का एतबार नहीं करता। तुम तो सब जानती हो, अधिक क्या कहूँ?"

प्रोनोटों की समस्या चार्ल्स के लिए बराबर बनी हुई थी। जटिल भी हो गई थी। वह समस्या की जटिलता को, अधिक से अधिक, स्थगित ही कर सका था। उसे सुलझाने का कोई उपाय सामने नहीं आता था। मा के पास भी वह जाता था तो सिमटा हुआ। आशङ्का बराबर बनी रहती, कहीं मा को पता न चल जाय। मा के सामने पहुँचने पर अपने कपड़ों को एकाएक वह सँभालने लगता। मुस्कराहट की जहाँ ज़रूरत होती, ठहाका मारकर वह हँस पड़ता। वह दिखाना चाहता था, उसके जीवन में कहीं भी कोई अस्तव्यस्तता नहीं है। उसका हृदय किसी बोझ से भारी नहीं है। चौबीसों घंटे ठहाका मारकर वह हँसता रहता है।

मा के सामने अपने को सँभालने में उसे जितनी सफलता मिलती थी, उतनी एम्मा के सामने नहीं। कपड़ों को जितना ही वह सँभालने का प्रयत्न करता, उतना ही वे अस्त-व्यस्त हो उठते। ठहाका मारकर हँसना चाहने पर ओठों पर मुस्कराहट भी नहीं खेल पाती थी। दीर्घ निश्वास छोड़कर अन्त में वह कहता—"पिता जी के मरने के बाद से न जाने मुझे क्या हो गया है? कोई बात समझ में नहीं आती!"

कहकर वह चला जाता। एम्मा को पता भी नहीं चलता, कि

चीज़ के लिए और क्यों यह सब कहा जा रहा है ? ऐसी कौन बात है जो उसने जाननी चाही थी, चार्ल्स की समझ में जो नहीं आ रही थी ? ज़ोर देने पर भी एम्मा कुछ पता नहीं लगा पाती थी।

एम्मा के सामने आते चार्ल्स को डर लगता था। बचाव करते कई दिन हो गये। एम्मा को भी यह अभाव अखरा। दबे पाँव चार्ल्स के कमरे में झाँककर वह देखती—काग़ज़ों पर झुका हुआ चार्ल्स कुछ देख रहा है। कितनी देर तक वह खड़ी रही। उसे आशंका होने लगी—वह काग़ज़ों को देख भी रहा है या नहीं। कमरे की स्तब्धता उसे बड़ी बोझिल मालूम हुई। उससे रहा नहीं गया। कमरे में उसने प्रवेश किया। बोली—"सच-सच बताओ, तुम ऐसे क्यों हो रहे हो ?"

एम्मा की आवाज़ सुनकर चार्ल्स चौंक उठा। फिर अपने को सँभालकर बोला—"कुछ नहीं, यों ही एक बात याद आ गई थी। उसी को सोच रहा था।"

"नहीं"—एम्मा ने कहा, "तुम मुझसे छिपाते हो। सच बताओ, बात क्या है ?"

"कुछ नहीं, एम्मा !"—चार्ल्स ने कहा, "यही गृहस्थी के झगड़े। सोचता था, पिता जी की... ।"

"मुझे कुछ नहीं चाहिए"—एम्मा ने बीच में ही कहा, "एक पैसा भी मुझे नहीं चाहिए। सब तुम्हारा ही है।"

"नहीं-नहीं एम्मा !"—चार्ल्स ने कहा, "मेरे कहने का यह मतलब नहीं। मैं कहना चाहता था....."

आख़िर चार्ल्स ने मूल समस्या को सामने रक्खा। एम्मा ने उसे सँभालने में पूरा सहयोग दिया। पिता जी की अस्तव्यस्त और बिखरी

हुई पूँजी का कैसे क्या करना होगा ? सभी कुछ उसने सामने रक्खा। क़ानून की सभी बारीकियाँ उसे मालूम थीं। चार्ल्स देखकर दंग रह गया। अब कुछ नहीं करना होगा। सब अपने आप ठीक हो जायगा। एम्मा के मुँह की ओर देखकर उसने सन्तोष की साँस ली।

"बात कोई बड़ी नहीं है"—एम्मा ने कहा, "सब ठीक हो जायगा। लेकिन मैं क़ानून नहीं पढ़ी हूँ। किसी वकील से सलाह लेना अधिक ठीक होगा।"

चार्ल्स को आश्चर्य हुआ, इतनी सीधी बात भी अब तक उसे सुझाई क्यों नहीं पड़ी ? उत्साह से वह बोला—"हाँ-हाँ, ठीक ! किसी वकील से सलाह लेनी चाहिए।"

वकील के बारे में वह सोचने लगा। कैसे किसी अच्छे वकील को वह पाये। एम्मा के मुँह पर उसकी दृष्टि जम गई। अच्छे वकील का पता जैसे वहाँ लिखा हो। फिर एकाएक बोला—"हाँ, याद आया, लियोन सब ठीक कर देगा।"

लियोन का नाम सुनकर एम्मा कुछ अकचका गई। चार्ल्स कह रहा था—"बस एम्मा, यही ठीक है। तुम्हें ही लियोन को इसके लिए तैयार करना होगा।"

एम्मा कुछ बोली नहीं। वह चुप रही। चार्ल्स ने समझा—एम्मा की मौन स्वीकृति मिल गई है।

(२६)

जीवन-संगीत रोज़ की परेशानियों में, प्रोनोटवालों के तक़ाज़ों में, डूब गया था। कुछ न होने पर भी चार्ल्स के क़दमों की आहट सुनाई पड़ती

रहती थी। एक दिन था जब वह टूटी टाँगों को सीधी करने के बारे में सोचा करता था। उसका हृदय व्यथित हो उठता था, जब किसी को अटेरन चाल चलते देखता था। आज वह सोचता था—कैसी टाँगें हैं इन लोगों की। एक घड़ी के लिए भी निश्चल होना नहीं जानतीं। जब देखो, तब चलती ही रहती हैं!

उसके कानों की खटखट और भी बढ़ जाती। हृदय की धड़कन भी उसका साथ देती थी। मालूम होता था, हृदय नहीं, किसी के पाँव की आहट उसे रौंदे डाल रही है। उसका सिर झनझना उठता। कानों पर हाथ रख संसार की सम्पूर्ण आहट को अपने से दूर कर देना चाहता!

कुछ भी उसकी समझ में नहीं आ रहा था। अप्रत्याशित रूप से एम्मा ने आकर सहारा दिया। एम्मा के मुँह पर अपनी दृष्टि को बाँध सभी कुछ उसने अपने से दूर कर दिया। आँखों के सामने एम्मा का चेहरा था, कान किसी सुदूर संगीत का आवाहन कर रहे थे। एकाएक उसे संगीत-प्रेमी युवक की याद हो आई। कितनी शान्ति से वह आता था, किसी को ज़रा भी चौंकने की ज़रूरत नहीं होती थी। वह आता था, आकर बैठा रहता था। ऐसा कभी न हुआ कि उसका आना, आकर बैठना, बोझिल हो उठे।

एम्मा की मौन स्वीकृति पाकर चार्ल्स सन्तुष्ट हुआ। अनेक धन्यवाद वह एम्मा को देना चाहता था; लेकिन फिर ओंठ काटकर रह गया। एम्मा उसकी अपनी ही है। किसी प्रोनोटवाले का एजेण्ट नहीं। तुरन्त ही क्षमा माँगने को फिर उसका जी चाहा। लेकिन धन्यवादों की तरह यह भी ठीक नहीं लगा। गद्‌गद भाव से वह एम्मा को देखता रहा। ओंठ बराबर मुस्कराने का प्रयत्न कर रहे थे।

लियोन बन्द गाड़ी का निवासी था। गाड़ी चलती थी, उसके पी नहीं। गाड़ी के अन्दर क्या हो रहा है? किसी को पता नहीं चलता था उत्कण्ठा होती थी, परदे फाड़कर अन्दर का हाल देखा जाय। बाह वालों के प्राण जैसे गाड़ी के परदों के भीतर समा जाते थे, समाये रह थे। बाहर की हलचल का प्रेरणा-केन्द्र जैसे वहीं था।

लियोन रहता था—पासवाले नगर के होटल में। चहल-पहल होटल में कमी नहीं रहती। लेकिन इस चहल-पहल के बीच भी लियो का कमरा बन्द गाड़ी बना हुआ था। खिड़कियों पर काले परदे प रहते थे, दरवाज़ा भी उसका अधिकांश बंद ही रहता था। होटल चहल-पहल जैसे इस बन्द कमरे के संगीत को ही व्यक्त करती थी। चार के पिता के शोक का आवरण ओढ़े एम्मा ने इसी कमरे में प्रवेश किया

निरन्तर संगीत की ध्वनि से कमरा जैसे भरा हुआ था। एम्मा अ को भूल गई। कुछ चेतना होने पर वह यह जानने का प्रयत्न क लगी कि कमरे के संगीत का प्रेरणा-केन्द्र कहाँ है? लियोन की ओर देखती। कुछ निश्चय नहीं कर पाती। एक भ्रम-सा होता था। लगता—किसी दिन इस कमरे में संगीत गूंजा था। बन्द दीवारों टकराकर वह बिखर गया। उसी संगीत की प्रतिध्वनि को अपने हृ से यह अब लगाये है। कभी-कभी यह भी आशङ्का होती, संगीत न बाहर की हलचल, अस्पष्ट होते-होते, अपना मूल रूप छोड़, दूरा संगीत का भ्रम उत्पन्न कर रही है। भ्रम ने ही वास्तविकता का धारण कर लिया है।

बन्द कमरे से बाहर भी दोनों निकलते थे—बन्द गाड़ी में स होने के लिए। गाड़ी के पहियों की आवाज़ संगीत की सृष्टि करती थी

देखनेवाले सुनकर चौंक उठते थे, कौतूहल उनकी आँखों में भर जाता था। बन्द गाड़ी की कल्पना ने जैसे सभी को तोप लिया था।

बन्द गाड़ी पहुँचती थी नगर से बाहर, प्रकृति की गोद में। ऐसी स्नेहमयी गोद उन्हें पहले कभी नहीं मिली थी। प्रकृति की गोद को भरकर उन्हें मालूम होता, उनकी अपनी गोद भर गई है। भरे अञ्चल और उन्मुक्त हृदय को लिये बन्द कमरे में लौट आते। एक नये संगीत से कमरा भर जाता।

नौका-विहार के लिए एक दिन दोनों गये। चाँदनी रात थी। गरदन को उठाये, हाथों को हृदय पर रक्खे, एम्मा चाँद की ओर देख रही थी। नौका में पड़ा हुआ एक लाल फ़ीता लियोन को मिल गया था। उसी से वह खेल कर रहा था। कभी उँगली पर लपेटता था, कभी खोल डालता था। एक छोर पकड़कर हवा में उसे लहराने भी लगता था। डाँड चलाते-चलाते माँझी की नज़र फ़ीते पर पड़ी। देखकर वह बोला—"दो दिन हुए बाबू जी, इसी नौका पर कुछ लोगों को मैंने घुमाया था। सभी जवान थे। बड़े हँसमुख, दिल्लगीबाज़। एक लड़की को कहीं से वे पकड़ लाये थे। लड़की की बात मैं नहीं कहता, मुझे तो उन सब में एक आदमी बड़ा अच्छा लगा। देखने में सुन्दर, छरहरा बदन, रेखें अभी फूटी ही थीं। मण्डली का जैसे वही दुलहा था। सब उसी को ऊपर उठाने में लगे थे। भर-भर कर गिलास उसे देते थे। रह-रहकर यही सुनाई पड़ता था—"अरे वाह, अभी और लो, बुलनर! हाथ रोकने से नहीं चलेगा!"

एम्मा के कानों में बुलनर का नाम पड़ा। सारा बदन काँपकर रह गया। लियोन ने पूछा—"क्या हुआ, एम्मा!"

"कुछ नहीं"—एम्मा ने कहा, "यों ही हवा कुछ ठण्डी-सी मालूम दी।"

नौका के साथ-साथ जीवन के अभिसार को भी आगे बढ़ाने में माँझी योग देना चाहता था। नौका उसकी चल रही थी, अभिसार शान्त था। उत्साह प्रदान करते हुए वह बोला—"दोस्तों में इस तरह चलता ही रहता है। बड़े ही फक्कड़ थे सब। वह लड़की तो गिलगिली होकर दुहरी हुई जा रही थी।"

अनायास ही एम्मा का बदन सीधा हो गया। माँझी ने अपने डाँड़ों को सँभाला। लहराकर नौका आगे बढ़ी। किनारे से लगने का समय भी उसका आया। एम्मा और लियोन उतर पड़े। बन्द गाड़ी ने उन्हें बन्द कमरे में पहुँचा दिया।

एम्मा और लियोन एक दूसरे से बिदा होने की तैयारी कर चुके थे। एम्मा ने पूछा—"आपने सब समझ लिया है न? चार्ल्स बहुत चिन्तित हैं।"

'हाँ, आप निश्चिन्त रहें"—लियोन ने कहा, "सब ठीक हो जायगा।"

तीन भरे-पूरे दिनों की भरी-पूरी अमिट स्मृति को लिये एम्मा चार्ल्स के पास पहुँच गई। लियोन का बन्द कमरा और बन्द हो गया। चलने के लिए बन्द गाड़ी भी बन्द कमरे की ओर ताकती रह जाती थी।

(२७)

बन्द कमरे की प्रतिक्रिया को सिर उभारते देर नहीं लगी। लियोन घबरा उठा। परदों को फाड़कर वह फेंक देना चाहता था। संगीत का सारा माधुर्य जैसे एम्मा के साथ ही चला गया था। उसे न अब बन्द कमरा

अच्छा लगता था, न बन्द गाड़ी। जब नहीं रहा गया तब उकताकर एम्मा की बस्ती की ओर चला। अँधेरा हो आया था। एम्मा के घर के चारों ओर चक्कर काटता रहा। उसने देखा, खिड़कियों के परदे बदल दिये गये हैं। बिलकुल वैसे ही हैं, जैसे कि उसके अपने कमरे के थे। एम्मा की छाया भी कहीं दिखाई नहीं पड़ी। झुँझलाकर लौट आया। बन्द गाड़ी ने फिर चलना शुरू किया।

बन्द कमरे के संगीत में एम्मा अभ्यस्त हो गई थी। नाटक के किसी गाने की दो-चार कड़ियाँ उसकी स्मृति से कहीं उलझकर रह गई थीं। वे अब सामने आईं। उन्हीं को वह हर समय गुनगुनाया करती। चार्ल्स भी संगीत के इस माधुर्य से वञ्चित नहीं रहा। कमरे में बैठा इन्हीं कड़ियों को बार-बार सुना करता। एम्मा से अधिक उत्साह का सञ्चार उसमें होता था। कहता—"मुझे क्या पता था एम्मा, कि इतना मधुर गला पाया है तुमने! अरे, चुप क्यों हो गईं? सच कहता हूँ, बड़ा मीठा स्वर है तुम्हारा!"

"बस रहने दीजिए"—एम्मा ने कहा और चुप हो गई। चार्ल्स ने भी फिर कुछ नहीं कहा। खाना खाने के बाद शाम को उसने फिर कहा—"अच्छा एम्मा, सुबह तुम्हारी बात रही, अब मेरी बात माननी पड़ेगी। कुछ सुनाओ।"

एम्मा के मुँह से गाने की वे ही कड़ियाँ निकलने लगीं। चार्ल्स को बहुत अच्छा लगा। कई दिन तक यह क्रम चलता रहा। जो भी आता था, उसके सामने चार्ल्स एम्मा के गाने की प्रशंसा करता था। एम्मा की इस विशेषता से सभी परिचित हो गये थे। अकेले में चार्ल्स सोचता था—क्या कुछ नहीं है एम्मा में! सभी कुछ तो है। मेरी ही उपेक्षा से

वह दबा पड़ा रहा। जितना ही वह यह सब सोचता, उतना ही एम्मा के गाने की प्रशंसा करता। देखते-देखते वह समय भी आ गया, जब एम्मा का संगीत-प्रेम गाने की चार कड़ियों और चार्ल्स की प्रशंसा में खो गया। संगीत का कहीं पता नहीं था, प्रशंसा चारों ओर सुनाई पड़ती थी।

प्रशंसा का यह प्रचार भी एक सीमा तक चलकर ठहर गया। अपनी ओर से चार्ल्स अब कुछ नहीं कहता था। एम्मा के संगीत-प्रेम की प्रगति का उल्लेख होने पर वह उत्तर देता—'हाँ, इधर गाना बन्द कर दिया गया है। उत्साह में एम्मा ने अपने गले की ओर कुछ ध्यान नहीं दिया। उसके गले की नसें झनझना उठीं। थोड़ा भी ज़ोर पड़ता है तो दुखने लगता है।"

एम्मा से मिलने पर कहता—"अपने को पहचानकर भी तुम नहीं पहचानती हो एम्मा! यह तुममें बड़ा ऐब है। दो घड़ी जी बहल जाता था, वह भी तुमने बन्द कर दिया!"

दूकान-मालिक का चार्ल्स के जीवन से घनिष्ठ सम्बन्ध था। संगीत के अभाव का प्रभाव उस पर भी पड़ा। चार्ल्स की बात को और भी स्पष्टकर वह कहने लगा—"यह तो प्रकृति की देन है। यों तो रोना-गाना सभी को आता है। लेकिन संगीत—वह सभी के बस की बात नहीं। यह जीवन की निधि है। इसका उपेक्षित रहना ठीक नहीं। घर-घर इसका प्रचार आजकल बढ़ रहा है। हमारा क्या है, हम लोगों का जीवन तो बीत चुका। अब क्या गायेंगे और क्या बजायेंगे। लेकिन अपने बाल-बच्चों के लिए तो कुछ करना ही होगा। देखो न, यह बर्था है। मा को ही संगीत से रुचि न होगी तो बेटी से इसकी आशा करना और भी मुश्किल है।"

चार्ल्स से विदा होने के बाद वह अपनी दूकान पर चला जाता। पत्नी को बुलाकर कहता—"सुनती हो, लड़कियों के नाचने-गाने का प्रबन्ध करने में डाक्टर साहब लगे हैं। डाक्टरी तो गई भाड़ में, यही एक काम अब रह गया है !"

पत्नी आँखें फाड़कर देखती रह जाती। यही एक रूप उसकी आँखों का रह गया था। बच्चों के रोने-चिल्लाने की आवाज़ सुनकर फिर वह चली जाती। दूकान-मालिक डिब्बों के लेबिल पढ़-पढ़कर उनकी गर्द झाड़ना शुरू करता। बीच-बीच बड़बड़ाता भी जाता था—"नाचने-गाने की स्कीम चल रही है। डाक्टरी को चलायें तो कुछ बात भी है। उनका अपना भला भी हो, दूसरों के पेट में भी कुछ पड़ जाये।"

बहुत कुछ सोचने के बाद चार्ल्स को एक दिन ध्यान आया—संगीत की बातें तो इतने दिन से चल रही हैं, संगीत किसके सहारे चलेगा, यह कभी न सोचा। नाटक के एक गाने की चार कड़ियों को लेकर संगीत भी आख़िर कहाँ तक जायेगा। न कोई पुस्तक है, न बाजा, न शिक्षक; किसके सहारे एम्मा आगे बढ़े।

यह सोचकर चार्ल्स को बड़ा पछतावा हुआ। उसे समझ नहीं पड़ता था कि उसकी समझ को क्या हो गया है। चुपचाप उसने संगीत के बारे में जानकारी प्राप्त करनी शुरू की। सब कुछ जान लेने पर ही वह एम्मा से कुछ कहेगा।

पन्द्रह दिन बाद उसने एम्मा से संगीत का ज़िक्र किया। स्वर, लय और तान पलटों से शुरू करके सभी गानों के नाम उसने गिना डाले। वाद्य-यंत्रों की सूची भी सामने आई। एम्मा की कुछ समझ में नहीं आया। चार्ल्स का उत्साह इससे कम नहीं हुआ। अन्त में झुँझला-

कर एम्मा ने कहा—"मुझे कुछ नहीं चाहिए। संगीत मुझे नहीं सीखना है।"

अवश्य ही कहीं कुछ भूल हो गई है। उसकी उपेक्षा से एम्मा का जी मुरझा गया है। कभी कोई झोंका आने पर लहरा उठता है, फिर मुरझाकर रह जाता है। सोचते-सोचते चार्ल्स एकाएक खिल उठा। खोया सूत्र उसे मिल गया। अपने मन में सब कुछ ठीक करने के बाद उसने एम्मा से कहा—"लियोन की अब तक कोई ख़बर नहीं मिली!"

"ऐसा तो नहीं हो सकता," एम्मा ने कहा, "अवश्य ही उन्होंने कुछ किया होगा।"

"लेकिन एम्मा," चार्ल्स ने कहा—"एक बार जाकर तुम देख क्यों न आओ? तुम्हारा घूमना भी हो जायेगा, काम का भी पता चल जायेगा।"

"अच्छी बात है, कल सुबह चली जाऊँगी," एम्मा ने कहा और चादर ओढ़ सोने का प्रयत्न करने लगी। चार्ल्स के हृदय का बोझ भी जैसे उतर गया था। सहज ही नींद ने उसका निमंत्रण स्वीकार कर लिया।

(२८)

अँधेरे मुँह एम्मा उठ खड़ी हुई। दासी अब तक पड़ी सो रही थी। उसे जाकर एम्मा ने जगाया। चाय तैयार करने के लिए उसने कहा। ख़ुद भी कपड़े पहनकर तैयार हो गई। चार्ल्स गहरी नींद में, न जाने क्या देखकर, मुस्करा रहा था। एम्मा ने इस मुस्कराहट पर तुषारपात करना ठीक नहीं समझा। सब कुछ ठीक करने के बाद दासी को साथ

ले गाड़ियों के अड्डे पर पहुँचकर सबसे पहले चलनेवाली गाड़ी पर वह सवार हो गई।

चार आदमियों के बैठने की गाड़ी में जगह थी। भरते देर न लगी। चाबुक हाथ में लेते ही गाड़ी के पहिए खड़खड़ाते हुए चलने लगे। सड़क के दोनों ओर दूर तक पेड़ों की क़तार चली गई थी। खिड़की पर झुककर एम्मा देखने लगी। इस सड़क को वह भूली नहीं थी। सभी कुछ उसे परिचित मालूम होता था। अब यह आनेवाला है, इसके बाद वह और फिर—पहले ही से वह सब कुछ जान लेती थी। कभी-कभी अनजान बनकर अनायास ही क्रम को उलट-पुलट कर भी देखती थी। आँखें बन्दकर प्रतीक्षा करती, अब यह आनेवाला है। खोलकर देखने पर मालूम होता, यह तो कुछ और है। इसके बाद मालूम करना चाहती, कहाँ उससे भूल हुई। कभी भूल जल्दी पकड़ में आ जाती थी, कभी आँखमिचौनी जैसा खेल भी उसके साथ चलता था।

प्रकाश अभी अच्छी तरह फैल नहीं पाया था। ठीक अन्धकार भी इसे नहीं कहा जा सकता। दोनों का जैसे अभिसार चल रहा था। भूल-भुलैया की सृष्टि इससे और भी आकर्षक हो उठी। चिर-परिचित स्थल भी आकस्मिक रूप में सामने आते थे। सम्पूर्ण दृश्य एक स्थिर और अस्पष्ट चित्रपट की तरह मालूम होता था। निकट पहुँचते-पहुँचते लगता, इस चित्रपट का कोई एक खण्ड सजीव होकर ऊपर आगया है। नगर के निकट पहुँचने पर एक चिमनी का आकार स्पष्ट होता दिखाई पड़ा। धुएँ के बादल उसके मुँह से निकल रहे थे। धीरे-धीरे, एक के बाद एक, मकान भी आने लगे।

मकानों का आकार स्पष्टतर होता जा रहा था। सम्पूर्ण चित्रपट

पर जैसे मकान-ही-मकान रह गये थे। एम्मा का जी भारी हो चला। आँखें बन्दकर जीवन की कल्पना वह करने लगी। ऊँची-ऊँची दीवारें अब उसके सामने नहीं थीं; किसी का दीर्घ निःश्वास वे अब बन गई थीं। दीवारों की ओट में छिपे भयानक जीवन की अनेक कल्पनायें उठीं और चिमनी के धुएँ में अपना आकार खोकर विलीन हो गईं। एम्मा का जी घुटने लगा। खिड़की से बाहर उसने आधा शरीर निकाल लिया था। इसी समय घोड़े पर चाबुक पड़ा। गाड़ी की गति तेज़ हुई। एम्मा के बाल लहराकर अस्तव्यस्त हो हवा में उड़ने लगे।

गाड़ियों का अड्डा आगया था। एम्मा उतर पड़ी। एम्मा ने अपने कपड़ों को ठीक किया, हाथ के दस्ताने बदल डाले, पाँव में जूते भी दूसरे पहने। कन्धे पर पड़े शाल को सँभालते हुए वह आगे बढ़ी। प्रकाश के साथ-साथ उसने नगर में प्रवेश किया। सड़कों की सफ़ाई हो रही थी, दूकानों के ताले खुल रहे थे। रात की ख़ुमारी उतार कर नगर का जीवन सामने आ रहा था। एम्मा का साहस नहीं हुआ कि आँखें खोलकर उसे देखे। कुछ देर नीची दृष्टि किये चलती रही, फिर एक गली में वह घुस गई। जीवन के इस जागरण को आँखों की ओट करके वह चलना चाहती थी। उसे पता भी नहीं था कि बन्द कमरे और बन्द गाड़ी को छोड़कर लियोन भी इस अँधेरी गली की शरण में जीवन को चला रहा है। कुछ दूर चलने पर दोनों की भेंट हो गई। आकस्मिक मिलन ने अभिवादन को आश्चर्यमय बना दिया। दोनों एक-दूसरे की ओर देखने लगे। अभिवादन पूर्ण हो गया।

लियोन के कमरे की अब कायापलट हो गई थी। महोगनी की लकड़ी का बड़ा-सा पलँग था। नौका के आकार का वह बना हुआ

था। परदे भी बदले हुए थे। उनके मख़मली लाल रंग को एम्मा देखती रह गई। लियोन मख़मली परदों के पास खड़ी एम्मा को देख रहा था। न जाने क्या सोचकर वह झुकी ज़ा रही थी। मख़मली परदों में छिपकर वह खो जाना चाहती थी।

कमरे को एम्मा ने सार्थक कर दिया। मुग्धभाव से दोनों, एम्मा और लियोन, कमरे को देखने लगे। दीवारगीरी पर जुड़ी हुई दो सीपियाँ रखी थीं। काफ़ी बड़ी थीं। प्रकाश पाकर अनेक रंगों की आभा उन पर झलक रही थी। एम्मा ने उन्हें उठा लिया। वह कल्पना करने लगी—सीपियों के भीतर छिपे जीवन की। उत्ताल तरङ्गों की मर्मर ध्वनि उसे स्पष्ट सुनाई पड़ रही थी।

जीवन के मर्मर स्वर के इतने निकट एम्मा पहले कभी नहीं पहुँची थी। निकट पहुँचने के बाद इतने घनिष्ठ रूप में उसे अपना भी नहीं सकी थी। कमरा लियोन का था, लेकिन पूरे विश्वास के साथ उसे वह अपना कह सकती थी। जो भी चीज़ वह हाथ में उठाती थी, उसकी अपनी होकर रह जाती थी। लियोन देखता था, देखकर स्वीकार करता था, जो चीज़ें उसके अपने जीवन में पैवन्द से आगे न बढ़ सकीं, एम्मा के हाथों का स्पर्श पाकर वे अलङ्कार बन गई हैं। अपने ही कमरे में बेगाने की तरह वह रहता था। बेगाने की तरह आकर जब कि एम्मा ने उसे अपना बना लिया था। एम्मा के आने से कमरे में जैसे जान पड़ गई थी।

एम्मा का सौन्दर्य निखर आया था। एम्मा का नहीं, यह नारी का सौन्दर्य था—उस नारी का सौन्दर्य था, जो किसी भी घर की रानी हो सकती है। रानी होकर भी जो किसी की प्रेमिका हो सकती है। निखार

था, उसके अपने सौन्दर्य का, अपने से भी अधिक प्रेमी की निखरी हुई दृष्टि का। दृष्टि के इस निखार ने एम्मा को अलौकिक बना दिया था।

एम्मा की इस अलौकिकता के सहारे लियोन अपने को भूल जाता था। मालूम होता, उसका खोया संगीत मूर्तिमान् होकर सामने आगया है। इतने दिनों से जिसकी संगीत की प्रतिध्वनि उसके हृदय में गूँजती आरही थी, यह वही है, वही है, वही है।

एम्मा को देखते-देखते उसके ओंठ फड़फड़ा कर रह जाते। एम्मा के इस रूप को सशब्द स्वीकार करने के लिए उसका रोम-रोम विह्वल हो उठता। उसके हृदय से निकलनेवाले शब्द इस विह्वलता में ओठों पर आकर बह जाते। सारा शरीर जैसे तरल हुआ जाता हो।

कुछ क्षण तक स्थिर खड़े रहने के बाद एम्मा आगे बढ़ती। लियोन के खोये हुए गुलाबी चेहरे पर हलकी-सी चपत लगाकर कहती—"शैतान कहीं का।"

लियोन का सम्पूर्ण शरीर जैसे विलीन हो जाता था। केवल दो आँखें दिखाई पड़ती थीं—फिर से जन्म लेकर जीवन जैसे इन आँखों में खेल रहा हो।

घड़ी की टिक-टिक के सहारे यह अभिसार चलता था। एम्मा घड़ी की ओर देखती रहती, लियोन एम्मा की ओर। घड़ी के केस पर मीनाकारी का बड़ा सुन्दर काम बना हुआ था। छोटे-से बालक की एक मूर्ति भी पास ही रखी हुई थी। तीर-कमान अपने हाथ में लिये मानो दिग्विजय करने के लिए वह जा रहा हो। एकाएक एम्मा कहती—"लियोन, देखा तुमने ?"

एम्मा की आवाज़ सुनकर लियोन चौंक पड़ता—"क्या ?"

मूर्ति की ओर लियोन की दृष्टि को ले जाते हुए एम्मा कहती—"देखते हो उधर। भागते समय की टिक-टिक के साथ तीर-कमान लिये आप खेल कर रहे हैं!"

लियोन खिलखिला कर हँस पड़ता। सारा कमरा जैसे फूलों से भर जाता था। फूल मुरझा चलते थे बिदा के समय। लियोन के मुरझाये मुँह से निकलता—एम्मा!"

"लियोन!" एम्मा के मुँह से निकलकर अस्फुट ध्वनि कमरे में बस जाती। आज का वियोग कल के मिलन का सूत्र पकड़कर फिर अपने को सँभालता। बीच में दोनों के अन्तर था। दूर रहने पर भी यह बना रहता था, पास आने पर भी इसे दूर नहीं किया जा सकता था। यह अन्तर था काम का—चार्ल्स के काम का, उधार और प्रोनोटों के चक्र में उलझकर जो रह गया था। दोनों को विश्वास था, शीघ्र ही वह पूरा हो जायेगा। इसके बाद जब कभी भी दोनों मिलेंगे। वास्तविक मिलन वही होगा। चार्ल्स के पिता से प्राप्त अस्तव्यस्त पूँजी की ज़मीन वास्तविक आधार नहीं है। उसकी छाया के हट जाने पर ही वास्तविक और ठोस ज़मीन तैयार होगी। संसार के सब झगड़े-झंझटों से दूर, चिर यौवन के इस बाधाहीन निरन्तर मिलन से कोई भी उन्हें वञ्चित नहीं रख सकता।

घर लौटने पर एम्मा ने बर्था को हृदय से लगाकर खूब प्यार किया। अब तक बर्था के प्रति तटस्थता का एक भाव एम्मा के हृदय में बराबर बना रहा था। रोने पर बर्था को दूध मिल जाता था, चुप हो जाने पर खेलने के लिए उसे छोड़ दिया जाता था। उसकी अपनी छोटी-सी दुनिया में जब कोई बाधा आती थी, रो-चीख़कर जब वह इस बाधा को

प्रत्यक्ष करती थी, उस समय एम्मा का ध्यान उसकी ओर आकर्षित होता था। बाधाहीन होकर बर्था फिर अपनी दुनिया में घुटनों के बल चलने लगती थी।

तटस्थता का यह रूप अनायास ही इस बार दूर हो गया। एम्मा बर्था के खेल में हाथ बँटाने लगी। नये-नये खेलों का बर्था के जीवन में प्रवेश हुआ। सबसे ऊपर प्रधान रहा तीर-कमानों का खेल। एक दर्ज़न तीर-कमान एम्मा ने उसके लिए बनवा दिये थे। छोटे-छोटे हाथों से बर्था उन्हें सँभालती थी। चार्ल्स भी सामने होता था और एम्मा भी। पास जाकर एम्मा निशाना साधना बताती थी। दूर खड़े होकर फिर तीर छोड़ने के लिए कहती थी। बरथा तीर छोड़ती थी। आगे न बढ़कर तीर-कमान की डोरी से उलझकर रह जाता था। देखकर चार्ल्स सन्तोष का साँस लेता, निशाने को देखकर उत्पन्न हुई घबराहट दूर हो जाती—फिर खिलखिला कर हँस पड़ता। बर्था भी ख़ुशी में नाचकर तीर-कमान फेंक देती थी।

(२९)

टूटी टाँगों को सीधा करने में चार्ल्स इतना अभ्यस्त नहीं हुआ था जितना कि काग़ज़ की नाव बनाने में। अख़बार के रद्दी काग़ज़ों से उसने शुरू किया था। बाद में रंगीन और फूलदार काग़ज़ बाज़ार से वह ले आया। छोटी और बड़ी, कितनी ही तरह की नावें उसने बना डालीं। अपने तीर-कमानों को छोड़कर बर्था काग़ज़ की नावों से खेलने लगी। चार्ल्स कहीं बाहर चला जाता तो बर्था उसकी प्रतीक्षा करती रहती। घर आने के बाद वह नाव बनाना शुरू करता। पानी भरे

टब लाकर नाव को उसमें छोड़ देता। नाव तैरने लगती। बर्था की आँखें खिल उठतीं। ताली बजाकर वह अपनी प्रसन्नता प्रकट करती। फिर भागती हुई जाती एम्मा के पास। अञ्चल पकड़कर एम्मा को भी घसीट लाती। बर्था को लेकर चार्ल्स और एम्मा, दोनों में प्रति-द्वन्द्विता चलती थी। टब में तैरती नाव को छींटे मारकर एम्मा भिगो देती। बर्था भी इसमें योग देती थी। दोनों हाथों से पानी उछालना उसे बड़ा अच्छा लगता था। चार्ल्स ना-ना करता रहता, एम्मा को भी रोकने का प्रयत्न करता और बर्था को भी। पानी फिर भी उछलता रहता! नाव भीगकर गल जाती। तैरने के लिए पानी भी टब में नहीं बच रहता। गली हुई नाव को सूखी धरती पर फेंक चार्ल्स दोनों से कुट्टी कर लेता। बर्था को यह अच्छा नहीं लगता था। कभी वह टब को देखती थी, कभी गली हुई नाव को, इन दोनों से बढ़कर चार्ल्स के मुँह को।

बर्था का हाथ पकड़कर एम्मा अपने पास खींच लेती। गुदगुदाते हुए फिर उससे कहती - "तुम्हारी तीर-कमान कहाँ है, बर्था?"

एम्मा की यह गुदगुदी कभी-कभी बर्था की आँखों में आँसू ला देती थी। चार्ल्स का स्नेह फिर उसे अपनी शरण देता था। कभी-कभी वह खिल भी उठती थी। भागती हुई जाती और तीर-कमान ले आती। निशाना फिर सधता। तीर चार्ल्स के पास तक कभी पहुँच भी जाता, कभी कमान की डोरी से ही उलझकर रह जाता। चार्ल्स कहता—"पहले तीर को पकड़ना तो सीखो, निशाना बाद में साधना!"

भौंहों में बल डाल एम्मा कहती—"चलो बर्था, ये तुम्हें खेलने नहीं देंगे। इनकी नाव भी नहीं चलती, तीर भी छोड़ने नहीं देते!"

बर्था को लेकर जीवन का अभिसार चलने लगा। एम्मा और चार्ल्स, दोनों एक-दूसरे के प्रतिद्वन्द्वी बन गये थे। अनेक रूप धारण करके यह प्रतिद्वन्द्विता सामने आती थी। बर्था किसी दिन उदास दिखाई पड़ती थी। इस उदासी ने चार्ल्स और एम्मा, दोनों में से किसको अधिक चिन्तित कर दिया है, यह जानना मुश्किल हो जाता। चार्ल्स अपनी डाक्टरी की किताबों को खोलकर नुस्ख़े देखने बैठ जाता था। दवाई तैयार करके भी वह लाता। एम्मा दवाई का गिलास चार्ल्स के हाथ से छीन कर फेंक देती। कहती—डाक्टरी क्या पढ़ ली है, चलते हैं बात-बात में दवाइयाँ लेकर। बर्था को दवाइयों की आदत मैं नहीं डालने दूँगी!"

एक दिन बर्था की तबीअत ज़्यादा ख़राब हो गई। एम्मा बर्था और उसके रोग को घेरकर बैठ गई। चार्ल्स बर्था के रोग की परीक्षा करना चाहता था, लेकिन एम्मा ने उसे पास नहीं फटकने दिया। एम्मा कमरे में थी, चार्ल्स दरवाज़े पर खड़ा था। कमरे के अन्दर पाँव रखने का साहस उसे नहीं होता था। कमरे को छोड़कर जाते भी उससे नहीं बनता था। खोये-से अपने अस्तित्व को चौखट की टेक दिये वह खड़ा था, खड़ा ही रहा।

एम्मा को बड़ा बुरा लगा। झुँझलाकर बोली—"यहाँ खड़े-खड़े क्या कर रहे हो? किसी डाक्टर को बुलाने भी क्या मैं ही जाऊँगी?"

बर्था को अच्छा होते देर नहीं लगी। एम्मा ने चार्ल्स से कहा—"तुम्हारे हाथों में बर्था को सौंप देती तो उसके अच्छी होने में ६ महीने लगते!"

चार्ल्स ने कुछ नहीं कहा। रोग के बाद रोग की छाया अधिक पाँव

नहीं पसार सकी। वर्तमान को छोड़कर चार्ल्स ने वर्था के भविष्य के बारे में सोचना शुरू किया। पढ़ाने-लिखाने का दौर भी बीच में ही कहीं छूटकर रह गया था। आगे बढ़कर वर्था के विवाह के बारे में उसने सोचना शुरू किया। पूरी स्कीम उसने तैयार कर ली थी। सोचते-सोचते रात बीत जाती थी। तीसरे पहर की अन्तिम घड़ियों में उसे नींद आती थी। जब उसके सोने का समय होता था, एम्मा अँगड़ाई लेकर उठ बैठती थी। अनायास और अनजाने प्रतिद्वन्द्विता विरोधी दिशा पकड़ती जा रही थी।

कई दिन से चार्ल्स सोच रहा था, वर्था के विवाह के बारे में एम्मा से भी बातें करे। उपयुक्त अवसर की प्रतीक्षा वह कर रहा था। वर्था के विवाह की पूरी स्कीम तैयार करने में उसे इतना समय नहीं लगा था, जितना कि इस उपयुक्त अवसर की खोज करने में। वर्तमान को भविष्य में परिवर्तित करना जितना सहज था, उतना ही कठिन भविष्य को वर्तमान में प्रस्तुत करना था।

ऊँच-नीच और शुभ-अशुभ का सूत्र मिलाने के बाद चार्ल्स ने वर्था के विवाह का ज़िक्र किया। एम्मा को बात बिलकुल पसन्द नहीं आई। चार्ल्स अपनी स्कीम का एक अंश भी पूरी तरह सामने नहीं रख सका। अधूरी बात को अधूरा ही रखते हुए एम्मा ने कहा—"कुछ नहीं, वर्था विवाह नहीं करेगी।"

"विवाह नहीं करेगी?" चार्ल्स का सीधा प्रश्न आश्चर्य में बिखरने लगा। एम्मा ने कहा—"नहीं, वह ऐसा पागलपन नहीं कर सकती।"

बात आई-गई हो गई। न चार्ल्स ने उसे बढ़ाया, न एम्मा ने। वर्था के बड़े होने तक विरोध स्थगित हो गया। एम्मा से अब चार्ल्स

कुछ नहीं कहता था। अपना पक्ष सुरक्षित रखने की ओर ही उसने अधिक ध्यान दिया। सबसे पहली बात थी रुपयों की। वर्षा के विवाह के लिए ज़रूरत होगी। अभी से प्रबन्ध करते रहना चाहिए। एम्मा के नाम लिखी पिता जी की वसीयत को रोज़ अकेले में निकालकर वह देखता था। और भी जहाँ गुञ्जायश निकलने की सम्भावना दिखाई पड़ती, उसका सूत्र पकड़ने का आगे बढ़ने का प्रयत्न वह करता।

एम्मा भी वर्षा के बारे में सोचती थी। वर्षा का भविष्य भी उसके सामने था, वर्तमान भी। आर्थिक प्रश्न भी उसके सामने आता था। चार्ल्स की चिन्ताओं का अन्त वर्षा के विवाह के साथ हो जाता था, लेकिन एम्मा की चिन्ताओं का नहीं। जीवन की सारी समस्याओं के लिए वर्षा को विवाह पर ही निर्भर करना पड़े, यह वह नहीं चाहती थी। ऐसी स्थिति की कल्पना करना भी उसके लिए असम्भव था। विवाह के साथ उसकी समस्याओं का अन्त नहीं, प्रारम्भ होता था। समस्याओं के एक समूह के रूप में ही वह विवाह को जानती-पहचानती थी।

वर्षा के विवाह का प्रश्न एम्मा के सामने नहीं था। इससे स्वतंत्र करके वह वर्षा को देखती थी। अपने पाँव पर खड़े होने के लिए वर्षा को जगह मिले, अपने ही सहारे वर्षा खड़ी हो सके, यही वह चाहती थी।

जितना जो कुछ अपने-आप सोच सकती थी, एम्मा ने सोचा। कसर पूरी करने के लिए प्रोनोटवाले महाशय सामने आगये। किन्तु ऐसे अवसर की जैसे वे खोज ही कर रहे थे। चुटकी बजाकर सभी उलझनों को सुलझाकर रखने में वे कभी पीछे नहीं हटते थे।

चार्ल्स के सामने भी आर्थिक समस्या थी, एम्मा के सामने भी। समस्यायें एक होते हुए भी दिशायें दोनों की भिन्न थीं। इस भिन्नता का कुछ-कुछ आभास दोनों को ही मिल चुका था, लेकिन इतना नहीं कि विरोध हो जाय। इसका एक कारण यह भी था कि विरोधी सम्बन्ध बर्था के भविष्य से जितना अधिक था, उतना वर्तमान से नहीं। वर्तमान के सामने आने पर ही विरोध सिर उठाता था—यहाँ तक कि भविष्य और अतीत को भी अपने साथ घसीट लाता था।

जाड़ों के दिन आ रहे थे। बर्था के पास गरम कपड़े नहीं थे। एम्मा का बटुवा भी ठण्डा हो रहा था। कई दिन तक एम्मा भीतर ही भीतर घुमड़ती रही। किसी चीज़ के लिए भी वह चार्ल्स पर निर्भर नहीं रहना चाहती थी। जब नहीं रहा गया तब बोली—"बर्था के विवाह के लिए पैसा जोड़ने की तुम्हें चिन्ता है और कुछ जैसे करना ही नहीं है?"

"क्यों, क्या हुआ ?" चार्ल्स ने पूछा।

"हुआ कुछ भी नहीं। यही सोचती हूँ कि विवाह की थैली भरने के बाद अगर कुछ भी नहीं बच सकता तो बर्था जियेगी कैसे ?"

चार्ल्स व्यथित हो उठा। बोला—"क्यों, क्या हुआ है बर्था को ? बताती क्यों नहीं ?"

"जाड़ा आ रहा है और गरम कपड़ा उसके पास एक भी नहीं," एम्मा का स्वर किञ्चित् तीखा हो चला, "विवाह की गरमी के सहारे ही शायद जाड़े कट जायँगे।"

कौन-कौन कपड़े बर्था के लिए बनेंगे, एम्मा नाम गिनाने लगी। चार्ल्स सुनता रहा। वह केवल शब्द सुन भर रहा था, उसकी समझ में

कुछ न आता था। एम्मा की सूची ख़त्म हो गई, वह उसी तरह खड़ा रहा। फिर एकाएक कुछ ठहरकर बोला—"मैं अभी आया, एम्मा!"

जितनी तेज़ी से चार्ल्स गया था, उतनी ही तेज़ी से आगया। हाथ में काग़ज़ और पेन्सिल थामे हुए था। एम्मा के सामने बैठकर बोला, "हाँ, अब बताओ, क्या-क्या बनेगा?"

एम्मा झुँझलाकर कमरे से बाहर चली गई। चार्ल्स वहीं बैठा रहा। कुछ सोचकर फिर उठा। दरज़ी को बुलाकर बर्था के लिए कपड़े बनाने को कहा। दरज़ी ने पूछा—"क्या-क्या बनेगा?"

"गरम कपड़े बनते हैं", चार्ल्स ने कहा, "जाड़ों के लिए। सभी बनेंगे। दरज़ी तुम कैसे हो, जो इतना भी नहीं जानते!"

पन्द्रह रोज़ बाद दरज़ी कपड़े बनाकर ले आया। बर्था के हाथ कपड़ों का बण्डल चार्ल्स ने एम्मा के पास भेज दिया। लड़खड़ाती हुई बर्था चली। बोझ अधिक था। वह सँभाल नहीं पा रही थी।

कपड़ों की संख्या से अधिक बिलों की संख्या थी। बर्था के पाँव की तरह चार्ल्स भी उनका बोझ न सँभाल सका। उसकी गरदन लटककर रह गई।

(३०)

घर और जीवन के शून्य को भरने के लिए बर्था का भविष्य एक आवरण बन गया था। चार्ल्स और एम्मा, दोनों ही इस आवरण को अपनाने की ओर आगे बढ़ रहे थे। जीवन का यह अभिसार क़दम से क़दम मिलाकर चल रहा था। दोनों के बीच में एक लम्बी खाई थी। एक खाई के दाहिनी ओर चल रहा था, दूसरा बाईं। नाक की सीध

में, एक दूसरे की ओर देखे बिना, जब तक चलते थे, खाई अलक्षित रहती थी। आमने-सामने आँखें आने पर दिखाई देती थी। एक दूसरे से टकराकर दृष्टि खाई को उभारकर रख देती थी। सुदूर स्थित उज्ज्वल भविष्य भी उसी में जा पड़ता था।

एम्मा ने चार्ल्स की ओर देखना बन्द कर दिया था, चार्ल्स ने एम्मा की ओर। देखते हुए भी दोनों एक-दूसरे को देखने से इनकार कर देते थे। जो कहना चाहिए, उसे वे कह नहीं पाते थे; जो न कहना चाहिए, वही सबसे पहले मुँह से निकलता था। 'हाँ' उनके लिए 'नहीं' हो गई थी, 'नहीं' ने 'हाँ' का रूप धारण कर लिया था। होते-होते ऐसी स्थिति भी आगई, आवरण को अपनाने जाकर वे निरावरण हो उठते, निरावरण होने पर मालूम होता, अब ठीक है। निर्लज्जता ही लज्जा का घूँघट बन गई थी।

इस घूँघट में आकर्षण की कमी नहीं थी। सभी उसके चारों ओर मँडराना चाहते थे—कोई दबेपाँव, कोई खुलकर। एक सीमा तक ही सब बढ़ पाते थे। पास आने पर वे दूर भागते थे, दूर रहने पर पास आना चाहते थे। कुछ ऐसे भी थे, जो दूर रहकर उससे सम्बन्ध स्थापित करते थे। एक बुज़ुर्ग ने एम्मा को किसी होटल से निकलते देख लिया। आँखें बन्दकर वहाँ से लौटे। चार्ल्स के पास आकर कहने लगे—"आपने सुना?"

"क्या?" चार्ल्स ने पूछा।

"कुछ नहीं," अचकचाकर उन्होंने अपने आवरण का घूँघट खींच लिया। बोले, "एक पादरी आजकल यहाँ आये हुए हैं। उपदेश उनके बड़े सुन्दर होते हैं। बड़ी भीड़ होती है। देखकर बड़ा आनन्द हुआ।

गोटे ठप्पे और माँगपट्टी में दिन बितानेवाली युवतियाँ भी उन पर जैसे टूटी पड़ती हैं !"

दूकान-मालिक का जीवन भी अब प्रशस्त हो गया था। चार्ल्स से उपेक्षित डाक्टरी ने जैसे उसी को वर लिया था। जो कोई भी आता, उसी के सामने इस सत्य को स्पष्ट कर रखता। उपेक्षित डाक्टरी की कितनी दयनीय दशा हो गई है, किस प्रकार लोगों का उस पर से विश्वास उठता जा रहा है, व्यथित हृदय से सशब्द वह व्यक्त करता। डाक्टरी का अच्छा-ख़ासा इतिहास उसने तैयार कर लिया था। कब उसने जन्म लिया, किस-किस ने उसे पाला-पोसा, शैशव को पार कर किस प्रकार वह इस अवस्था को प्राप्त हुई, पूरा चित्र खींचकर वह सामने रख देता था। बाद में फिर किस तरह से, किस-किस के संसर्ग से उसमें से अनेक शाखायें फूटीं, सुव्यवस्थित परिवार के रूप में किन-किन अवस्थाओं को पार करके वह आई, डाक्टरी के इतिहास में यह सब भी आ जाता था। बड़े उत्साह और आवेश से इस इतिहास को वह दोहराता था। उत्तरोत्तर उसका स्वर तेज़ हो चलता, दिशा विशेष के आ जाने पर वह झनझना उठता। अयोग्य और बच्चे हाथों ने डाक्टरी की जो छीछा-लेदर की है, बिना समझे-बूझे उसके दामन पर जो हाथ डाला है, यह उससे बरदाश्त नहीं होता था। वह कहता—"कल के छोकरे, चले हैं डाक्टरी करने ! डाक्टरी न हुई, बच्चों का खेल हो गया। पुरखों ने भी जिनके कभी डाक्टरी को न देखा, वे भी आजकल डाक्टर ही पैदा करते हैं !"

दूकान-मालिक के कई बच्चे थे। आये साल नई आमद होती थी। एक बार जोड़वाँ भी हुए। एक का नाम उसने नेपोलियन रक्खा था,

दूसरे का रूसो; तीसरे का नारमन हेयर। लड़कियों में भी विक्टोरिया से नीचे कोई न थी। इतिहास को दोहराते-दोहराते वह देखता, नेपोलियन और रूसो पास में आ खड़े हुए हैं। डाक्टरी की छीछालेदर को एक क्षण के लिए स्थगितकर उनकी ओर वह झुकता—"जब देखो तब सिर पर ही चढ़े रहते हैं, जाओ यहाँ से!"

नेपोलियन और रूसो अपनी मा के पास चले जाते। दोनों को अपने आँचल में छिपाकर मा अपने पति को तीखी नज़रों से देखने लगती। पति से वह नाराज़ थी। नाराज़ी का कारण था डाक्टरी। चौबीसों घण्टे उसी का बखान सुनते-सुनते उसके कान पक गये थे। इतिहास के पाठ में कभी-कभी बाधा बनकर भी वह आ उपस्थित होती थी। उसे लक्ष्यकर दूकान-मालिक कहता—'ऐसी माताओं की वजह से ही डाक्टरी का यह हाल हो गया है। डाक्टरी से बैर करके डाक्टरों को ही जन्म देती हैं।"

पत्नी घर में अपना ही आधिपत्य चाहती थी। सिवाय उसके और कोई घर में हाथ-पाँव फैला सके, वह यह नहीं चाहती थी। डाक्टरी को इस तरह पाँव पसारते देख वह सतर्क हो उठी। दूकान-मालिक सब कुछ सह सकता था, डाक्टरी का अपमान नहीं। डाक्टरी के सहारे स्त्रियों के ओछे हृदय की परीक्षा करनी उसने शुरू की। डाक्टरी के इतिहास में इस प्रसंग ने विशेष स्थान प्राप्त कर लिया।

दूकान-मालिक डाक्टरी को हृदय से अपनाना चाहता था। लियोन इसे अपनाकर भी नहीं अपना सका था। डाक्टरी की छाया लिये एम्मा जब उसके पास जाती थी, वह खोया-सा रह जाता था। एम्मा को डाक्टरी की छाया से अलग करके वह देखना और पाना चाहता था,

लेकिन किसी तरह यह सम्भव नहीं होता था । जब वह एम्मा को पाना चाहता था, डाक्टरी की छाया उसके सामने आती थी । एम्मा को पाने की इच्छा से डाक्टरी की छाया को भी उसने हृदय से लगाया । आँखें बन्दकर वह कल्पना करता—छाया नहीं, यह एम्मा है । आँखें खोलने पर दिखाई पड़ता—एम्मा नहीं, छाया है । झुँझलाकर छाया के साथ एम्मा को भी अलग कर देता । एम्मा के चले जाने पर वह व्यथित हो उठता । उसकी झलक पाने के लिए फिर चल पड़ता !

दूकान-मालिक से एक दिन लियोन की भेंट हो गई । दूकान-मालिक डाक्टरी को अपनाने की ओर बढ़ रहा था, लियोन डाक्टरी की छाया से पीछा छुड़ाने का प्रयत्न कर रहा था । इस विरोध की विरोधी ज़मीन पर ही दोनों चल रहे थे । चलते-चलते थक गये थे । कुछ देर बैठकर घूमकर थकान भी उतारना चाहते थे । दूकान-मालिक ने लियोन को देखकर कहा—"कितने दिनों से सोच रहा था, तुम्हारी ओर चलूँ । बहुत दिन हो गये, इस दूकान से बाहर जाने की कभी फ़ुरसत न मिली । जी ऊब गया है । सोचता हूँ, कुछ दिन तुम्हारे साथ ही बिताऊँ ।"

दूकान-मालिक लियोन को घेरे रहा । एक घड़ी के लिए उसका साथ नहीं छोड़ा । घर ले जाकर अपनी पत्नी के सामने उसे स्थापित किया । ज़रा-ज़रा-सी देर में पत्नी को यह-वह लाने का आदेश देता था । कुछ भी देर हो जाने पर बड़बड़ाने लगता था । अन्त में उसने घोषित किया—"लियोन के साथ मैं बाहर जा रहा हूँ । दो दिन बाद लौटूँगा ।"

अँधेरे-मुँह, पहली गाड़ी से, दूकान-मालिक और लियोन चल दिये । रास्ते-भर अपने बीते जीवन की बातें दूकान-मालिक करता रहा । सर्

झंझटों से वह मुक्त हो गया था। जीवन का वह चित्र सामने आ रहा था, जब वह दूकान के फेर में नहीं पड़ा था, विवाह भी उसका नहीं हुआ था, रूसो और नेपोलियन की भी जहाँ गुञ्जाइश नहीं थी। अपनी दुनिया का वही अकेला राजा था।

बातों में रास्ता सहज ही कट गया। गाड़ी रुकने पर दोनों उतरे। लियोन अपने घर जाना चाहता था। दूकान-मालिक तैयार नहीं हुआ। लियोन की बाँह खींचता हुआ बोला—"आते ही घर की याद आने लगी। ऐसे तो तुम कभी न थे। मेरे साथ जब रहते थे, दूकान से खिसकने के लिए बहाना ढूँढ़ते रहते थे। आज सबसे पहले घर की याद आरही है। यह नहीं होगा।"

लियोन को साथ देना पड़ा। बाज़ार की ओर दोनों चले। होटल के एक बड़े-से साइनबोर्ड को देखकर दूकान-मालिक ने कहा—"यहाँ चलेंगे।"

होटल का नौकर जैसे उन्हीं के आने की प्रतीक्षा कर रहा था। उन्हें कुछ हिचकिचाते देखकर उसने कहा—"आइए।"

अन्दर जाकर दूकान-मालिक ने कहा—"साहब नहाना माँगता है।"

एक बार झुककर होटल का नौकर सीधा हो गया। दूकान-मालिक उसके पीछे-पीछे चला। स्नान करने के बाद लौटकर लियोन से कहने लगा—"जाओ, बहुत अच्छा है। तुम भी स्नान कर आओ।"

तबीअत ठीक नहीं थी, लियोन ने स्नान नहीं किया। एक मेज़ के पास कुरसियों पर दोनों बैठ गये। होटल के नौकर से दूकान-मालिक ने कहा—"बढ़िया शराब लाओ!"

बढ़िया शराब आगई। लियोन और दूकान-मालिक की आयु के

बीच का अन्तर जाता रहा। एक ही साथ जैसे दोनों ने जन्म लिया हो। दूकान-मालिक ने लियोन को अपने जीवन के अनुभव सुनाने शुरू किये। डाक्टरी का पूरा इतिहास चला और डाक्टरी से वैर करके डाक्टरों को जन्म देनेवाली स्त्रियों का ज़िक्र आया। एक-दो नहीं, सभी स्त्रियाँ ऐसी होती हैं। ओछा हृदय उनकी एकमात्र निधि है। अनेक श्रेणी-विभाजन दूकान-मालिक ने ऐसी स्त्रियों के कर रक्खे थे। सभी का उल्लेख वह कर गया।

लियोन चुपचाप सुन रहा था। दूकान-मालिक को एकाएक ध्यान आया, वह कुछ भी नहीं बोल रहा है। भूमिका बाँधने के बाद उसने लियोन से पूछा—"और यह तो बताओ, डाक्टर साहब के मकान के चारों ओर तुम क्यों मँडराया करते हो?"

लियोन कुछ सकपका गया। दूकान-मालिक ने समझा, सङ्कोच कर रहा है। बोला—"मुझसे क्या छिपाते हो? मैं सब जानता हूँ।"

लियोन अब तक चुप था। उसकी समझ में नहीं आ रहा था, वह क्या कहे। किसी तरह दूकान-मालिक का मुँह बन्द करना भी वह चाहता था। इन दोनों में ही वह असफल रहा। दूकान-मालिक ने फिर कहना शुरू किया—"बड़ी चरण्ट है वह, मैं सब जानता हूँ।"

लियोन से अब नहीं रहा गया। बोला—"क्यों नाहक़ बदनाम करते हैं किसी को! छोड़िए यह सब।"

"मैं बदनाम कर रहा हूँ?" दूकान-मालिक ने कहा, "उससे नहीं कहते, जो प्रेम और विवाह का दिन-रात पाठ पढ़ा करती है। पास-पड़ोसियों को भी उसने नहीं छोड़ा!"

लियोन कुछ कहने ही जा रहा था। दूकान-मालिक ने उसे बढ़ने न

दिया। वह कह रहा था—"अच्छी तरह जानता हूँ मैं उसे—एम्मा की दासी को। बड़ी चएट है वह!"

सुनकर लियोन का हृदय कुछ हलका हुआ। अकेले में जाकर सन्तोष की साँस वह लेना चाहता था। लेकिन दूकान-मालिक ने उसका साथ न छोड़ा। लियोन के सङ्कोच को दूर करने के प्रयत्न वह करने लगा। आख़िर हारकर लियोन ने अपने को दूकान-मालिक के हाथों में सौंप दिया।

दूसरे दिन वह दूकान-मालिक को विदा करने चला। कुछ दूर चलकर दूकान-मालिक एकाएक ठिठक गया। बोला—"यहाँ कोई खिलौनों की दूकान भी है?"

लियोन ने दूकान पर पहुँचा दिया। कुछ खिलौने ख़रीदे गये। इसके बाद दूकान-मालिक ने कहा—"नेपोलियन की मा के लिए एक नावरोटी और ख़रीद लें। देखकर ख़ुश हो जायगी।"

बिदा होने के समय दूकान-मालिक ने लियोन को अनेक धन्यवाद दिये। धन्यवादों का मधुर भार लिये लियोन अपने कमरे में आकर पड़ रहा।

(३१)

लियोन और दूकान-मालिक को ही नहीं, डाक्टरी और उसकी छाया ने स्वयं एम्मा को भी उलझा लिया था। अपने जीवन की उसे अब अधिक चिन्ता नहीं रही थी। अपने जीवन को लेकर न कोई आशा ही सामने आती थी, न निराशा ही। चिन्ता थी उसे बर्था की। डाक्टरी की इस छाया से बर्था को वह मुक्त करना चाहती थी। उसके जीवन का

सारा व्यङ्ग वर्था में आकर समा गया था। अपने जीवन से उसने डाक्टरी को भी दूर कर दिया था और चार्ल्स को भी। वर्था के साथ ऐसा नहीं हो सका था। चार्ल्स की पूरी छाप उस पर पड़ी थी। वर्था के सामने आने पर उसका हृदय मरोड़ खाकर रह जाता था।

वह नहीं चाहती थी कि एक क्षण के लिए भी चार्ल्स वर्था की चिन्ता करे। वर्था को घेरकर वह रखती थी। न चार्ल्स पास आ पाता था, न उसकी छाया। शुरू-शुरू में चार्ल्स ने इस वाधा को दूर करना चाहा था, लेकिन एम्मा के विरोध ने उसका मुँह फेर दिया। अपने आप ही अपने में सिमटकर वह रहने लगा।

चार्ल्स को दूर रखने के प्रयत्नों ने एम्मा को वर्था से भी दूर कर दिया था। सारा समय इन्हीं प्रयत्नों में बीतता था, वर्था की ओर देखने का उसे अवकाश नहीं मिलता था। चार्ल्स के अपने-आपमें सिमट जाने के वाद एम्मा वर्था को अपने सामने खड़ी करके देखने लगी। चार्ल्स के प्रत्येक प्रभाव को बर्था के शरीर से नोंचकर फेंक देना वह चाहती थी। ऐसी ही दृष्टि से वह बर्था को देख रही थी। बर्था के लिए यह नया अनुभव था। मा की ऐसी दृष्टि उसने पहले कभी न देखी थी। भय के मारे वह चीख़ उठी।

एम्मा की झुँझलाहट बढ़ती जा रही थी। जितना ही वह बर्था को देखती थी, चार्ल्स की मूर्ति उसके सामने आ खड़ी होती थी। झटका खाकर उसने बर्था को देखना छोड़ दिया। घर में अब वह नहीं टिकती थी। चार्ल्स के प्रभाव से वर्था को वह मुक्त नहीं कर सकी, अपने को कर लिया। घर उसके लिए सराय-मात्र रह गया था। घर में कुछ भी ऐसा नहीं रह गया था, जिसे वह अपना कह सके।

एम्मा का अपना कुछ नहीं रह गया था, लेकिन उसे अपनानेवालों की कमी नहीं थी। सभी उसे अपनाना चाहते थे, पीछे हट जाते थे उस समय, जब वह उन्हें अपनाना चाहती थी। लियोन पर उसे सबसे अधिक भरोसा था। उसके पास जब एम्मा जाती थी, वह पीछे हट जाता था। पास आता एम्मा के दूर हट जाने पर। एम्मा इधर-उधर भटकती रहती थी। वह एम्मा के घर के चारों ओर मँडराया करता था। कितनी ही बार एम्मा को यह देखने का अवसर मिला। एम्मा के पाँव की आहट मिलने पर वह कहीं छिपकर खो जाने का प्रयत्न करने लगता था।

चार्ल्स भी अपने को सँभाल नहीं सका था। अपने में सिमटकर रहने की ज़रूरत भी अब उतनी नहीं रही थी। जिसके लिए सिमटता था, वह घर से बाहर चली गई थी। चौबीसों घण्टे घर में रहने पर भी वह घर के शून्य को नहीं भर सका। ऊबकर वह भी घर से निकलता। बाहर जाने पर हृदय घर की ओर खिंचने लगता। घर में एम्मा भले ही न रहे, लेकिन एक बार घर में प्रवेश करते हुए वह उसे देखना चाहता था।

रात हो गई थी। चार्ल्स एम्मा की प्रतीक्षा कर रहा था। वह नहीं आई। कई बार जी में आया, बाहर जाकर देख आये। जहाँ भी हो, उसे ढूँढ़ लाये। पर गया नहीं। उसे शंका थी, उसके पीछे ही यदि एम्मा आ गई, तो घर को सूना देखकर वह टिकेगी नहीं। वह फिर घर से बाहर चली जायगी। इसी दुविधा में रात बीत चली। न एम्मा ही आती थी, न नींद ही। आख़िर चार्ल्स से न रहा गया। एम्मा को खोजने के लिए वह चला। दूकान-मालिक के यहाँ जाकर उसने खट-

खटाया। एम्मा वहाँ नहीं थी। घरों के बन्द दरवाज़े देखकर उसका हृदय मसोस उठता था। मस्तिष्क में भी एक उथल-पुथल मची हुई थी। परिचित दरवाज़ों को वह देख चुका था। कौन परिचित है, कौन अपरिचित, इसका ध्यान भी उसे अब नहीं रहा था। झल्लाकर एक ने कहा—"हम नहीं जानते कौन एम्मा होती है? नाक में दम कर दिया है इन आवारों ने। न दिन में चैन लेने देते हैं, न रात को सोने देते हैं!"

घरवाले की यह झल्लाहट कितनी ही दूर तक चार्ल्स का पीछा करती रही। उसके मस्तिष्क को इसने कचोट डाला था। घर आकर उसने देखा, बर्था की रोते-रोते घिग्घी बँध गई है। गोदी में उठा लेने पर भी उसे पता नहीं चला, वह किसी की गोदी में आगई है। भयत्रस्त सुबकियों का अन्त होने में नहीं आता था। बर्था को कन्धे पर लगा, टहलते-टहलते, चार्ल्स ने सुबह कर दी।

घर में बर्था अकेली रह गई थी। चार्ल्स उसका साथ अब नहीं छोड़ता था। बग़ीचे में उसे अपने साथ ले जाता था। पेड़ों की ढेर-सी टहनियों और फूल-पत्तियों को तोड़कर वह लाता था। घर आकर बर्था के साथ रोज़ वह बाग़ लगाता था। मिट्टी के एक ढेर को पानी छिड़क कर वह तर करता। टहनियों को उसमें गाड़ देता। धागे से बाँध-बाँधकर फूलों को टहनियों में लटका देता। बर्था देखकर बहुत .खुश होती थी। सोने का समय हो जाने पर भी वह बाग़ के पास से नहीं हटती थी।

चार्ल्स उससे कहता—"चलो बर्था, सोने चलो। कल सुबह उठ कर देखोगी, बाग़ और भी हरा-भरा हो गया है।"

बर्था को विश्वास दिलाने के लिए वह फिर कहता—"हाँ, बर्था ! रात को परियाँ आती हैं। सुबह उठकर देखोगी, बाग़ ख़ूब हरा-भरा हो गया है।"

सुबह होने पर बर्था सबसे पहले बाग़ के पास ही पहुँचती। देखती—टहनियाँ झुक गई हैं, फूल कुम्हला गये हैं। परियों ने बाग़ को हरा-भरा नहीं किया। धोखा देकर वे चली गईं।

बाग़ का खेल फिर नहीं चल सका। चार्ल्स को अपनी भूल मालूम हो गई। ऐसा खेल वह बर्था को देना चाहता था, जिसे चलाये रखने के लिए परियों की ज़रूरत न पड़े। कम-से-कम इतना तो हो कि टहनियों और फूल-पत्तों की तरह एक रात में ही मुरझाकर वह न रह जाय।

कई दिन से इस सम्बन्ध में वह सोच रहा था। एक दिन अपने साथ वह बर्था को बाज़ार ले गया। रास्ते में एक मदारी बन्दर-बन्दरी का तमाशा कर रहा था। बर्था देखकर बहुत ख़ुश हुई। तमाशा ख़त्म होगया था, वह वहाँ से हटना नहीं चाहती थी। कहती थी—"इन्हें साथ ले चलो।"

चार्ल्स परेशान हो उठा। बर्था को सँभालना मुश्किल हो गया था। एक तमाशे के बाद दूसरा तमाशा वहाँ होने जा रहा था। इतने में किसी बालक ने बन्दर को छेड़ दिया। घुड़ककर बन्दर उस बालक की ओर लपका। बर्था देखकर काँप गई। चार्ल्स की समस्या जैसे सुलझ गई। बर्था चुपचाप उसके साथ चल दी।

खिलौनेवाले के यहाँ जाकर चार्ल्स ने गुड्डे-गुड़ियों के साथ अनेक खिलौने ख़रीदे। उन्हें हाथ में लेते समय पहले बर्था कुछ डरी, बाद

में ले लिया। घर आकर चार्ल्स ने बर्था की गृहस्थी सजा दी। गुड्डे-गुड़ियों के ब्याह की तैयारी होने लगी। गुड्डे-गुड़िया को अन्य खिलौनों से घेरकर खड़ा किया गया था। बर्था की कुछ समझ में नहीं आ रहा था। आश्चर्य से वह देख रही थी, अब आगे क्या होनेवाला है ?

इसी समय, एकाएक, एम्मा ने घर में प्रवेश किया। बर्था को अपने से दूर कर देने पर भी एम्मा उसे भूल नहीं सकी थी। अपने से बर्था को दूर करना वह चाहती भी नहीं थी। दूर करना चाहती थी उसे वह चार्ल्स से। घर में आकर उसने देखा—एक ओर मिट्टी का ढेर पड़ा है, सूखी टहनियाँ हैं और मुरझाये हुए फूल उनसे लटक रहे हैं। कच्चे धागे ने अलग होने से उन्हें रोक दिया है। पास ही गुड्डे-गुड़िया का ब्याह रचाया जा रहा है। गुड्डे-गुड़िया से अधिक दिखाई दिये चार्ल्स और बर्था। एम्मा का शरीर काँप उठा, आँखें लाल हो आईं। तीव्र स्वर उसके मुँह से निकला—"बन्द करो यह सब।" क्षीण हो चले स्वर के साथ फिर सुनाई पड़ा—"अपनी ही लड़की के साथ यह......"

एम्मा की जैसे कमर टूट गई। जीवन के जिस भ्रम को हृदय से लगाये उसने सब कुछ सहा था, वह भी बिखरकर रह गया।

(३२)

प्रोनोटवाले महाशय किसी ऐसे ही अवसर की जैसे प्रतीक्षा कर रहे थे। संवेदनशील पितृ-हृदय को लिये घटनास्थल पर वे आ उपस्थित हुए। एम्मा के बिखरे हुए अस्तित्व को बटोरकर जीवन-दान देने के उनके प्रयत्न शुरू हुए। करुण भूमिका के बाद करुण स्वर में वे कह रहे थे—"तुम्हें चिन्ता किस बात की है ? एम्मा ! चार्ल्स से तुम्हें

घबराने की ज़रूरत नहीं। सब कुछ करते हुए भी वह कुछ नहीं कर सकेगा। तुम्हारा ध्यान वह भले ही न रक्खे, लेकिन उसके पिता तुम्हारी ज़मीन मज़बूत कर गये हैं।"

आँखें उठाकर एम्मा उसके मुँह की ओर देखने लगी। स्पष्ट चेहरा सामने होने पर भी अस्पष्ट दिखाई पड़ रहा था। चाहती थी कि कुछ कहे, लेकिन कुछ कहने के लिए उसे स्थान नहीं मिल पा रहा था। कहीं कोई कूल-किनारा उसे दिखाई नहीं पड़ता था। ज़मीन की बातें थीं, ज़मीन नहीं। बातों की ध्वनि ही एम्मा के कानों में गूंजती रही। वह और भी विचलित हो उठी।

एम्मा को चुप देख प्रोनोट-महोदय ने फिर कहना शुरू किया—"तुम्हारी उलझन मैं समझता हूँ। चार्ल्स के पिता जो कुछ छोड़ गये हैं, आज के ज़माने को देखते हुए उसमें कुछ तत्त्व नहीं है। फिर भी बड़े घर की खुरचन ही बहुत होती है। तुम्हारा काम तो चल ही जायगा।"

कमरे में चारों ओर उसने नज़र डाली। मुँह पर जैसे एक उदासी का भाव छा गया। इस उदासी को दूर करने का प्रयत्न करते हुए वह कहने लगा—"देखता हूँ, कुछ भी इस घर में नहीं रहा। सूना-सूना-सा लगता है। पहले जब आया था, कमरे में जान पड़ी हुई थी। ऐसी जगह रहने से जी अपने-आप भारी हो जाता है।"

उदासी का एक कारण एम्मा के सामने आया। अनायास उसकी दृष्टि भी कमरे के चारों कोनों को टटोलकर रह गई। उदासी के कारण का प्रत्यक्ष अनुभव उसने किया। इस अनुभव की ज़मीन सामने होने पर भी वह खड़ी न रह सकी। कूल-किनारा और भी दूर चला गया। जान पड़ता था, वह अब कभी न निकल सकेगी।

प्रोनोट-महोदय ने फिर कहना शुरू किया—"यहाँ आते हुए एक जगह मैंने देखा, किसी का सामान नीलाम हो रहा था। मुझे कोई ज़रूरत नहीं थी, इसलिए रुका नहीं। तुम्हारा कमरा देखकर उसकी याद हो आई।"

कुछ कहने के लिए एम्मा को अवसर मिल गया—कहें, कहने के लिए ज़मीन चाहिए ही, इसका उसे ध्यान नहीं रहा। बोली—"नीलाम का सामान मैं कभी नहीं लेती!"

"मैं कब कहता हूँ।" उसने कहा, "यह तो एक बात की बात थी। नीलाम का सामान तो वह ले जिसके पास कुछ हो नहीं। तुम्हारे पास तो सब कुछ है।"

जेब से नोटों की एक गड्डी निकालते हुए फिर वह बोला—"मेरी इस तुच्छ भेंट को स्वीकार करो।"

तुच्छ भेंट को स्वीकार करने से एम्मा ने इनकार कर दिया। नोटों को उसने वापस न लिया। कहने लगा—"लेते सङ्कोच होता है। घबराने की इसमें कोई बात नहीं। अब रख लो। जब सुविधा हो, लौटा देना।"

नोट छोड़कर वह चला गया। एक बार एम्मा के जी में आया, नोटों को ले जाकर चार्ल्स को दे दे। चार्ल्स का जो अन्न उसने खाया है, उसका कुछ प्रतीकार हो जायगा। उधार का बोझ भी कुछ हलका हो जायगा। उसने सोचा, कि चार्ल्स के सामने चुपचाप नोटों को छोड़कर वह चली आयेगी; कुछ कहे-सुनेगी नहीं। ऐसा ही उसने किया भी। नोटों को देख चार्ल्स अचकचा गया। बोला—"यह क्या?"

"गुड्डे-गुड़िया के ब्याह के लिए ख़र्च चाहिए न?"

जो न कहना चाहिए, वही एम्मा के मुँह से निकला। इसके बाद वह वहाँ खड़ी न रही। विलीन होते हुए उसके आकार का चार्ल्स की आँखें पीछा करती रह गईं।

प्रोनोट-महोदय अपने सम्वेदनशील हृदय को लिए एम्मा के साथ लगे रहते थे। पहलेवाला सङ्कोच अब जाता रहा था। एम्मा उनसे बराबर रुपया पाती रहती थी। नोटों को चार्ल्स के सामने ले जाकर अब वह नहीं फेंकती थी। चार्ल्स का स्थान होटल के कर्मचारियों ने ले लिया था। राह चलते भिखारियों को भी, जो हाथ में आता, दे डालती। इतनी बड़ी भीख उन्हें पहले कभी नहीं मिली थी। आश्चर्य से उनकी आँखें फटी रह गईं। एम्मा ने कहा—"देख क्या रहे हो। जाओ, मौज करो!"

किस वक्त किधर से एम्मा आती-जाती है, यह इन भिखारियों ने जान लिया था। एम्मा अपने क़दमों को भूल सकती थी, लेकिन वे नहीं। उन्हें भीख देकर एम्मा को एक क्षण के लिए पूरा सन्तोष मिलता था। जान पड़ता, डूबता हुआ अस्तित्व कुछ उभर आ रहा है।

चार्ल्स भी अत्यधिक अस्त-व्यस्त हो चला था। वह न अपने को सँभाल पाता था, न बर्था को। बर्था के गुड्डे-गुड़ियों का ब्याह भी अधूरा ही रह गया था। ब्याह की तैयारियों में से न जाने किस चीज़ से झुँझलाकर बर्था ने सारे खिलौने फोड़ डाले थे। खेलना-हँसना बर्था ने अब छोड़ दिया था। जी ऊब जाने पर चार्ल्स को कभी यहाँ ले जाती, कभी वहाँ। उसके साथ घसिटने में चार्ल्स पीछे नहीं रहता था। झुँझलाहट बर्था की फिर भी कम नहीं होती थी।

इस अप्रिय बोझ को सँभालने के लिए चार्ल्स ने अपनी मा को

बुला लिया। मा ने आकर घर को सँभालना शुरू किया। बर्था के लिए चार्ल्स ने मा को बुलाया था। बर्था को छोड़कर मा ने एम्मा की देख-रेख करनी शुरू की। कहाँ-कहाँ वह जाती है, क्या-क्या करती है; सब उसने पता लगा लिया। दोनों हाथों से यंत्रवत् एम्मा को पैसा फेंकते देख मा का हृदय कठोर हो चला। एम्मा को जैसा उसने समझा था, वैसी ही वह निकली। वह तो पहले ही सब जान गई थी। चार्ल्स को बुलाकर उसने पूछा—"वसीयत कहाँ है?"

"मेरे पास है", चार्ल्स ने दबे स्वर में कहा।

"पास होने से कुछ नहीं होता। मैं कहती हूँ, उसे निकालकर लाओ।"

कुछ देर बाद चार्ल्स अपने हाथ में एक काग़ज़ लिए मा के सामने जाकर खड़ा हो गया। मा ने उसके हाथ से काग़ज़ छीन लिया। दूसरे क्षण उसने काग़ज़ को जला डाला। दोनों हाथों से चार्ल्स ने अपनी आँखें बन्द कर लीं।

प्रोनोट-महोदय ने भी अब अपना हाथ खींच लिया था। एक सीमा के आ जाने पर उन्होंने एम्मा को रुपया देने से इन्कार कर दिया। बोला—"अब और अधिक रुपया मैं तुम्हें नहीं दे सकता।"

खोई आँखों से एम्मा उसकी ओर देखने लगी। साहस बटोरकर उसने कहा—"मुझे सख्त ज़रूरत है। आज और दे दीजिए।"

"देख रहा हूँ," उसने कहा, "तुम्हारी ज़रूरतों का कोई अन्त नहीं। उन्हें पूरा करना मेरे बूते से बाहर है।"

आख़िर तय हुआ, चार्ल्स के पिता की वसीयत उनके पास रख दी जाय। तभी वे कुछ दे सकेंगे। सुनकर एम्मा चौंक उठी। वसीयत के प्रति उसका मोह नहीं था। उलझन यह थी कि वसीयत चार्ल्स के पास

थी। इस उलझन को आँखों की ओटकर उसने कहा—"अच्छी बात है, यही सही।"

कोशिश करने पर भी एम्मा चार्ल्स के सामने न जा सकी। चार्ल्स के पास जाने का साहस बटोरकर उसके क़दम आगे बढ़ते। चार्ल्स के कमरे तक पहुँचने से पहले उनकी दिशा बदल जाती। वह घर से बाहर पहुँच जाती। दूर से ही देखकर होटल के कर्मचारी उसे सलाम करते थे। उसके पाँव की आहट पाते ही भिखारियों की दृष्टि उसके सामने घुटने टेककर देखने लगती थी। आख़िर, कई दिन बाद, वह चार्ल्स के सामने पहुँच पाई। मा भी उस समय घर में मौजूद थी।

एम्मा को सामने पाकर चार्ल्स सकपका गया। धरती में वह गड़ा जा रहा था। किसी तरह अपने को समेटकर आख़िर उसने स्वीकार किया—"वसीयत छीनकर मा ने जला डाली है।"

इस स्वीकृति का उपसंहार जुटाने के लिए मा भी आ खड़ी हुई। बोली—"जला न डालती तो क्या करती। वसीयत क्या मिल गई, इसका दिमाग़ ही आस्मान पर चढ़ गया। लगी दोनों हाथों से घर को लुटाने!"

एम्मा खिसककर खिड़की के पास जा खड़ी हुई थी। वह बाहर की ओर देख रही थी। चार्ल्स को मा की बात अच्छी नहीं लगी। एक बार उसने एम्मा की ओर देखा, फिर मा की ओर। असन्तोष घना हो उठा। उसके मुँह से निकला—"बहुत हो चुका, मा। जब भी तुम आती हो, झगड़ा ही करती हो!"

"हाँ, हाँ, मैं ही झगड़ा करती हूँ। तो रहो न घर की इस लक्ष्मी को लेकर। झगड़ा करने के लिए मैं फिर कभी न आऊँगी!"

दूसरे ही दिन मा चली गई।

(३३)

मा भी चली गई और एम्मा भी। चार्ल्स अकेला रह गया। जिस ज़मीन पर वह खड़ा था, मा के चले जाने के बाद जैसे वह भी जाती रही। मा से ही उसका सम्बन्ध-विच्छेद नहीं हुआ, एम्मा से भी होगया—और आगे बढ़कर डाक्टरी ने भी उसका साथ छोड़ दिया। डाक्टरी के साथ-साथ रोगी अपने-आप चले गये। जीवन का अस्वस्थ सौन्दर्य भी अब उसका साथ छोड़कर चला गया था। वह न अब किसी का पुत्र था, न पति, न डाक्टर। जीवन का 'अभाव' जैसे साकार रूप में सामने खड़ा हो गया था।

इस 'अभाव' को छोड़ने के लिए एम्मा को विशेष प्रयास करने की ज़रूरत नहीं पड़ी। 'न कुछ' को कुछ समझने के लिए भ्रम का एक आवरण इतने दिनों से चल रहा था। चार्ल्स की मा ने, स्वयं चार्ल्स के द्वारा ही, उसका अग्नि-संस्कार करा दिया। जीवन के इतिहास का एक खोया पन्ना बनकर एम्मा रह गई।

पन्ना जीवन के इतिहास का ही था, जीवन के 'न कुछ' का नहीं। आँधी के झोंकों में वह इधर-उधर उड़ा, 'न कुछ' के अनेक रूपों से उसका संसर्ग भी स्थापित हुआ। लेकिन आँधी सदा ही नहीं चलती रहती। आँधी के कुछ क्षण शान्त वातावरण को पीछे छोड़ आगे बढ़ जाते थे। कुछ देर के लिए भ्रम हो सकता है, आँधी के साथ जीवन की गति भी चली गई। खोया पन्ना जहाँ-तहाँ न उड़कर एक जगह पड़ा है। एम्मा को भी ऐसा ही जान पड़ता था। फिर ध्यान आता था जीवन के

उस 'न-कुछ' का, आँधी में उड़ने के समय, एम्मा का जिससे संसर्ग स्थापित होता था। भ्रम के प्रति कुछ मोह भी उत्पन्न हो गया था। एकाएक यह स्वीकार करने का साहस नहीं होता था, वह जीवन नहीं, जीवन का 'न-कुछ' वाला रूप है। इस भ्रम को बनाये रखने के प्रयत्न भी वह करती थी। प्रयत्नों के साथ भ्रम और भी खण्डित होकर सामने आता था। जीवन का 'न-कुछ', आँधी में उड़ने का भ्रम, खोये पन्ने के सामने भी टिक नहीं पाता था।

निराशा के क्षण खोये पन्ने के जीवन में भी आते थे। आँधी में उड़ने का भ्रम जब खण्डित होता था, उस समय निराशा अधिक सिर उभारती थी। असन्तोष इस निराशा को कुरेदता था। जैसा कि होता है, निराशा में एम्मा डूब नहीं जाती थी। असन्तोष उसकी चेतना को कुरेद-कुरेदकर जाग्रत रखता था। चेतना को अस्पष्ट भी वह कर देता था। बाहर की आँधी के बाद मानसिक आँधी उसे घेर लेती थी। निराशा की मात्रा अधिक होने पर वह सोचती थी—उसका जीवन अभिशापग्रस्त हो गया है। सोने को छूती है, मिट्टी हो जाता है। उसका स्पर्श पाकर, कोई भी ऐसा नहीं है, जो खड़ा रह सके। सिर पकड़कर वह बैठ रहती। कुछ समझ में नहीं आता था, क्या करे?

बात यहीं तक समाप्त नहीं होती थी। ऐसे क्षण भी उसके जीवन में आये हैं, सब कुछ छोड़कर, जब उसने कुछ भी नहीं करना चाहा है। सम्पूर्ण चेतना को खोकर चिरनिद्रा में विलीन हो जाने के लिए वह व्यथित हो उठी है। जीवन के 'न-कुछ' के साथ, उसने चाहा है कि वह भी 'न-कुछ' बन जाय; धूल में लोटकर वह भी अपने को धूल में मिला दे। लेकिन यह भी सम्भव न हो सका। वह धूल में लोटना

चाहती थी, उसके पाँव की आहट से घबराकर धूल अलग हट जाती थी।

सब कुछ झटककर एम्मा फिर खड़ी हो जाती थी। खोया पन्ना अपने पाँव पर खड़ा होकर चलने लगता था। देखनेवाले हँसते थे, इशारे करते थे, कहनी-अनकहनी बातें उनके मुँह से निकलती थीं। खोये पन्ने की गति में कोई अन्तर इससे नहीं पड़ता था। जो थोड़ा-बहुत अन्तर होता भी था, होटल के कर्मचारियों की अभिनन्दना और भिखारियों की आशाभरी आँखें उसे सँभाल लेती थीं। खोये पन्ने का मार्ग और भी प्रशस्त हो उठता था।

हाथ के तंग हो जाने पर प्रशस्त मार्ग तंग हो चला। होटल के कर्मचारियों की अभिनन्दना खिसकने लगी। एम्मा के सामने आने पर पहलेवाले उत्साह का प्रदर्शन अब नहीं होता था। एम्मा देखती थी, उत्साह का स्थान उपेक्षा लेती जा रही है। भिखारियों की आँखें, ख़ाली हाथ लौट जाने पर भी, उपेक्षा से नहीं भर गई थीं; कृतज्ञता का भाव उनमें था। होटल की उपेक्षा को भिखारियों की कृतज्ञ आँखों ने सँभाल लिया। लेकिन एम्मा इस टेक का सहारा नहीं ले सकी। उन्हें छोड़ पहुँची वह प्रकृति की गोद में—उसने फूलों से खेलना शुरू किया, छिपते सूर्य की लाली को दोनों बाहें पसारकर अपने हृदय में भरने का प्रयत्न वह करने लगी।

एकाएक संगीत-प्रेमी लियोन का चित्र उसकी आँखों के सामने खड़ा हो गया। कलियों के गुच्छे उसने अपने बालों में खोंस लिये, आञ्चल में फूलों का एक ढेर छिपाये लियोन की ओर वह चल पड़ी।

आहट पाने पर लियोन ने घूमकर देखा। सामने एम्मा खड़ी

थी। मुँह पर विचित्र सौन्दर्य खेल रहा था। मुग्धभाव से एम्मा को वह देखता रहा।

एम्मा आगे बढ़ी। लियोन के पास जाकर बैठ गई। लियोन ने आँखें बन्द कर लीं। उसे विश्वास नहीं होता था कि एम्मा ही पास बैठी है।

लियोन के बिखरे और एक-दूसरे से उलझे बालों को अपनी उँग-लियों से दो भागों में विभक्त करते हुए एम्मा ने कहा—"तुम मुझसे नाराज़ हो गये हो लियोन ?"

लियोन ने चौंककर आँखें खोलीं। एम्मा के मुँह की ओर खोया-सा देखता रहा। उससे कुछ कहते नहीं बना। एम्मा ने फिर पूछा—"तुम्हें मेरा आना बुरा तो नहीं मालूम हुआ ?"

"नहीं एम्मा"—कहते हुए भी कुछ न कहकर जैसे लियोन चुप हो गया।

"इधर आओ"—कहते हुए एम्मा लियोन के और पास खिसक गई। सिर के बाल, बीचोबीच से, दो भागों में विभक्त हो गये थे। साथ लाये फूलों से एम्मा ने लियोन का शृङ्गार करना शुरू किया। लियोन को बड़ा अटपटा मालूम हुआ। उठकर किसी तरह भाग जाना चाहता था; पर यह सम्भव नहीं हो सका। अपने आप में ही वह दबा जा रहा था।

कुछ देर बाद अपने दोनों हाथों में लियोन का मुँह लेकर एम्मा ने कहा—"कितने अच्छे हो तुम !"

एम्मा के हाथों को झटककर एकदम बुरा बन जाने के लिए लियोन विचलित हो उठा। अपने हाथों को उठाकर एम्मा के हाथों को

उसने पकड़ भी लिया; पर झटक न सका। अचकचाकर रह गया। फिर एकाएक उठते हुए बोला —"मुझे काम पर जाना है एम्मा!"

फूलों को झटककर फेंकना उतना कठिन नहीं जान पड़ा। फूलों को उसने अपने से अलग ही नहीं कर दिया, उन्हें पाँव से रौंदता हुआ कमरे से बाहर वह चला गया। एम्मा बैठी देखती रही।

चार्ल्स ने अपनी मा को स्वय अपने हाथों से पत्र लिखकर बुलाया था। लियोन की मा को किसी और ने पत्र लिख दिया था। लड़के की आवारगी का हाल पाकर मा की आँखें लाल हो उठीं। आशङ्का ने भावी सर्वनाश का चित्र मा की आँखों के सामने खड़ा कर दिया। वह काँप उठी। पत्र लिखकर लियोन को अपने पास बुला लिया। एक घड़ी के लिए भी अपने घर से बाहर लियोन को वह निकलने नहीं देती थी। छुट्टी मिली, बहुत-बहुत क़सम खाने पर कि एम्मा ही नहीं, संसार की किसी भी लड़की के फेर में वह नहीं पड़ेगा।

लियोन ने कोशिश की, पत्र लिखनेवाले का कुछ पता मिल जाय। लेकिन सफल न हो सका। एम्मा का जब कभी ध्यान आता, वह काँप कर रह जाता। लाल आँखें लिये मा सामने आ खड़ी होती थी। इन लाल आँखों में फिर भी कुछ ममता थी; लेकिन पत्र लिखनेवाले की कल्पना इस ममता को देखने न देती थी। एक दुःस्वप्न था जो लियोन के मस्तिष्क पर सवार रहने लगा। अन्त में झुँझलाकर उसने एम्मा को भी अलग कर दिया और जीवन के संगीत को भी। वह चलता था पाँव की ठोकरों से मार्ग को प्रशस्त करता हुआ, सामने न देखकर अपने क़दमों की ओर देखता हुआ और प्रत्येक कङ्कड़ को अपनी ठोकर से दूर करता हुआ। पाँव में कई बार चोट भी आई; लेकिन वह कराहा नहीं।

चोट से वह और भी उत्साहित हो उठता। सप्रमाण वह मा को, मा से अधिक पत्र के लिखनेवाले को जैसे दिखाना चाहता था, फूल पर नहीं, वह ज़मीन पर चला है—युवतियों से नहीं; जीवन की ठोकरों से उसने अभिसार किया है!

(३४)

कई दिन हो गये, चार्ल्स घर से बाहर नहीं निकला। एम्मा के साथ उसकी मा ने जो कुछ किया था, उसके लिए वह अपने को ही ज़िम्मेदार समझता था। रह-रहकर वह अपने को कचोटता था। उसे हो क्या गया था जो मा के सामने वह कुछ भी भला-बुरा न सोच सका। एम्मा को कुचलने में उसने मा का साथ क्यों और कैसे दिया? एम्मा के नहीं, उसने अपने ही पाँव पर कुल्हाड़ी मारी है। दोष एम्मा का नहीं, उसका अपना ही है। उसे इसका प्रायश्चित्त करना होगा।

चार्ल्स ने प्रायश्चित्त करना शुरू किया—घर की चहारदीवारी में अपने को बन्द करके। खिड़की खोलकर भी वह बाहर की ओर नहीं देखता था। एक जगह बैठ जाने पर उसे वहाँ से हिलते-डुलते डर मालूम होता था। एम्मा के पाँव की आहट पर उसके कान लगे रहते थे। पाँव की आहट सुनाई पड़ने पर वह अपने कानों पर हाथ धर लेता था। आहट और भी स्पष्ट हो उठती। एम्मा के पाँव उसके हृदय को कोंचते हुए जैसे अपने कमरे में चले जाते थे। इसके बाद चार्ल्स प्रतीक्षा करने लगता, एम्मा उसे बुलाने आयेगी। हाथ पकड़कर अपने कमरे में उसे ले जायगी।

लेकिन एम्मा जाती नहीं थी। चार्ल्स का हृदय मसोस उठता।

सम्भव-असम्भव, अनेक प्रकार की कल्पनाएँ वह करने लगता। घर में अपने को बन्दकर जाग्रत स्वप्न देखने का प्रयत्न वह करता था। कभी-कभी इसमें उसे सफलता भी मिल जाती थी। वह देखता था, एम्मा का कमरा प्रकाश से जगमगा उठा है। अपने हृदय में समाकर एम्मा उसे ले गई है। फूलों का शृङ्गार उसने किया है। वह स्वयं भी एम्मा के शृङ्गार का जैसे एक फूल बन गया है।

फिर एकाएक आशङ्कित हो उठता। मधुर स्वप्न दुःस्वप्न में बदल जाता। मा ने आकर एम्मा का शृङ्गार नोच डाला है। बिखरे फूलों को अपने पाँव से मा रौंद रही है। कमरे का प्रकाश अन्धकार बन गया है। एम्मा इस अन्धकार में खोकर रह गई है। उसका कुछ भी पता नहीं चलता।

कभी-कभी वह देखता—एम्मा का कमरा पहाड़ियों से घिरा हुआ तंग मार्ग बन गया है। दूर तक ऊँची पहाड़ियाँ चली गई हैं। न मार्ग का अन्त दिखाई पड़ता है, न पहाड़ियों का। अँधेरा-ही-अँधेरा दिखाई पड़ता है। हाथ पकड़कर नहीं, घसीटकर एम्मा उसे लिये जा रही है। घिसटना न चाहकर भी वह घिसट रहा है। उसके अङ्ग क्षत-विक्षत हो गये हैं।

एकाएक वह कराह उठता। दुःस्वप्न का भयभीत चित्र उसके मस्तिष्क पर अपनी छाप छोड़कर चला जाता। आँखों को भरपूर खोलकर मधुर स्वप्न देखने का फिर प्रयत्न करता। सफल न होने पर उस दुःस्वप्न की स्मृति को ही फिर से मूर्त्त करना चाहता था—एम्मा उसे घसीटे लिये जा रही है। अच्छे दिनों में नहीं, बुरे दिनों में एम्मा ने उसे अपने साथ लिया है। मार्ग ही ऐसा है जिस पर चला नहीं जा

सकता—क़दम-क़दम पर ठोकरें खाकर गिर पड़ना होता है। चार्ल्स कल्पना करता—वह ही नहीं, एम्मा भी ठोकर खाकर गिर पड़ी है। फिर भी दोनों चले जा रहे हैं—चले जा रहे हैं।

आँखें खोलकर सोने का चार्ल्स को अभ्यास हो गया था। आँखें बंद करके सोने का उसे साहस भी नहीं होता था। अन्धकार से उसे भय मालूम होता था। इस भय को दूर करने के लिए आशङ्कित हृदय से वह अपनी आँखें बंद करके देखता था। फिर तुरन्त ही काँपकर आँखें खोल देता। उसे जान पड़ता था—जैसे वह किसी अतल गहराई में डूबा जा रहा है।

एम्मा को अपने से तटस्थ करके देखने का भी उसने प्रयत्न किया। वह सोचता था—एम्मा किसी एक की होकर नहीं रह सकती। आधिपत्य को अस्वीकार करने के लिए ही उसने जन्म लिया है। वह सबकी है। सबकी होते हुए भी किसी की नहीं है। दूर रहकर ही उसे अपनाया जा सकता है।

लियोन और बुलनर का भी उसे कभी-कभी ध्यान आता था। एम्मा जितनी उसकी है, उतनी ही उनकी भी है। जब-जब उसने एम्मा को अपना बनाना चाहा है, वह उनकी होती गई है। लेकिन नहीं, एम्मा उनकी भी नहीं है। वह किसी की नहीं है। यह झूठ है जो सब ऐसा कहते हैं। एम्मा ने ईर्ष्या से उन्हें पागल कर दिया है। व्यर्थ ही एम्मा को बदनाम करते हैं। उसे लेकर इधर-उधर की बातें करते हैं। एम्मा ऐसी कभी नहीं हो सकती!

ऐसा भी हुआ है कि चार्ल्स ने एम्मा का ध्यान करना चाहा है और लियोन सामने आ खड़ा हुआ। लियोन पर उसे रश्क भी हुआ है।

लियोन बनने के लिए अनायास ही उसका हृदय उठ-उठकर बैठ गया है। आईने के सामने खड़े होकर लियोन से उसने अपनी तुलना की है। अपने चेहरे को उसके जैसा बनाने का प्रयत्न भी उसने किया है। दीवारों से घिरे अपने कमरे में लियोन से अभिन्नता स्थापितकर उसने टहलना शुरू किया है। वह चाहता रहा है, इसी समय एम्मा के पाँव की आहट सुनाई पड़े। अदृश्य रहकर झरोखे से एक बार आकर वह उसे देखे। लेकिन न एम्मा आई है, न वह लियोन बन सका है।

एम्मा ने भी लियोन के पास जाना छोड़ दिया था। झुँझलाहट और ठोकरों का खेल ही उसके सामने आता था। लेकिन लियोन को वह भूल नहीं सकी थी। दूर रहने पर लियोन और भी आकर्षक हो उठा था। वेदना की ज़मीन पर यह आकर्षण खड़ा हुआ था। एम्मा कल्पना करती थी, लियोन की ठोकरें इस कल्पना को छिन्न-भिन्न कर देती थीं। व्यथित हृदय से एम्मा चाहती थी, लियोन की प्रत्येक ठोकर फूल बनकर सामने आये। ठोकरों से नहीं, फूलों से उसका सम्बन्ध हो—वह स्वयं भी एक फूल बन जाय।

एम्मा लियोन से फिर नहीं मिली। मिलने से पहले उसकी ठोकरों को फूल में परिवर्तित वह देखना चाहती थी। जब कभी मिलने की इच्छा होती, वह आशङ्कित हो उठती। ठोकरों से दूर रहकर वह कल्पना करती थी खिले हुए फूलों की। फूलों का आकर्षण ही उसके सामने आता था; ठोकरें नहीं। लियोन का कल्पना-चित्र सम्पूर्ण आकर्षण की जैसे साकार प्रतिमा हो गया था।

उत्साहित होकर इस प्रतिमा से अदृश्य रहकर, सम्बन्ध स्थापित करने की ओर वह मानो बढ़ी। लियोन को उसने पत्र लिखने शुरू

किये। रात-रात भर जागकर वह पत्र लिखती थी, लिख-लिखकर फाड़ डालती थी। कई दिन के अथक परिश्रम से छः पत्र वह तैयार कर सकी। छहों को, अलग-अलग लिफ़ाफ़े में बंदकर, उसने छोड़ दिया।

पत्रों को लिखने के बाद एम्मा ने घर से बाहर जाना छोड़ दिया। चार्ल्स की तरह वह भी अपने कमरे में बंद रहने लगी। बाहर निकलते उसे डर लगता था। डर से अधिक सङ्कोच होता था। वह चाहती थी, लियोन से उसका सामना होने की अब कोई सम्भावना न रहे। कभी-कभी वह यह भी चाहती थी कि लियोन को उसके पत्र न मिलें। किसी तरह, कहीं मार्ग में ही खोकर रह जायँ।

यह सब होते हुए भी पत्रों के उत्तर की प्रतीक्षा में कोई अतर नहीं पड़ा। लियोन के पाँव की ठोकर ने डाकिये की पगध्वनि का स्थान ले लिया था। सोना चाहने पर भी रात को उसे नींद नहीं आती थी। लियोन के बारे में न सोचकर इधर-उधर की बातें वह सोचती थी। सोचते-सोचते उसका मस्तिष्क उलझ जाता। कुछ भी स्पष्ट नहीं रह पाता था। लियोन की ठोकरों में डाकिये की पगध्वनि खो जाती थी। वह चाहने लगती थी, इस घर को छोड़कर वह कहीं चली जाय—दूर, बहुत दूर। तेज़ गति से उसके क़दम उठने लगते थे। हृदय में एक क्षीण आशा का संचार भी होता था। फिर दूसरे ही क्षण आँखों में अन्धकार छा जाता। उसे लगता—उसका दम घुटा जा रहा है। बदन के कपड़े हृदय का बोझ मालूम होने लगते थे। उतारकर उन्हें फेंकने लगती। बटन खोलने की सुध उसे नहीं रहती थी। कुछ असुविधा होने पर और भी झुँझला उठती। कुछ देर के बाद उसे कुछ सुध आती। एक बार अपने निरा-वरण शरीर को देखती, फिर तार-तार हुए कपड़ों को। दोनों हाथों

से अपनी नग्नता को ढँकती हुई धरती में समाने के लिए फिर वह ढह जाती।

आँखों में लाली लिये एम्मा सुबह उठती थी। सारे बदन में दर्द होने लगता था; लेकिन इतना नहीं जो कुछ न करने दे। आँखों की लाली उगते सूर्य का साथ देती थी, बदन का दर्द भी नवजागरण के मार्ग में बाधा नहीं बनता था। मस्तिष्क की झनझनाहट भी नीचे उतर आती थी। पगध्वनि के साथ उसका स्वर भी मिलाया जा सकता था।

पगध्वनि की प्रतीक्षा एक दिन सार्थक हुई। दूर से ही एम्मा को ख़ाकी कपड़ों की कुछ झलक दिखाई पड़ी। एम्मा ने आँखें बंद कर लीं। स्वीकृति की प्रतिमूर्त्ति बनकर जहाँ वह थी, वहीं स्थिर हो रही।

पगध्वनि ने पास आकर एम्मा को ही याद किया। एम्मा ने जाकर देखा—लियोन का उत्तर नहीं, प्रोनोट-महोदय का सम्मन आया है!

(३५)

एम्मा का हृदय जितना ही अधिक विचलित था, उतनी ही दृढ़ता से उसके क़दम पड़ रहे थे। किसी निश्चित योजना के अनुसार जैसे उसके क़दम उठ रहे थे। मार्ग में कहीं भी वह भटकी नहीं, सीधी प्रोनोट-महोदय के कमरे में पहुँच गई। दृढ़ क़दमों पर वह स्थिर खड़ी थी। प्रोनोट-महोदय के कमरे में जैसे किसी ने प्रस्तर की मूर्त्ति स्थापित कर दी हो।

प्रोनोट-महोदय ने एम्मा की ओर ध्यान नहीं दिया। कमरे में वे थे और तेरह बरस की एक लड़की। कमर में उसकी कूबड़ था। मालूम होता था कि उसका भयत्रस्त यौवन, सामने की ओर न उभड़कर,

उलटी दिशा में जा रहा है। उसी के सहारे प्रोनोट-महोदय लेन-देन का काम करते थे। उनके सेफ़ की कुञ्जी भी उसी के पास थी। कमरे को देखते हुए सेफ़ का आकार-प्रकार बहुत बड़ा था। चाँदी के कड़े भी उसमें समाये थे और सोने की ज़ंजीरें भी। पाँव के गहने भी उसी में थे और गले का हार भी। बुरे दिनों में देहातियों के खोटे गहनों को अपने में समाकर खरे रुपये भी यही सेफ़ उगलती थी।

चाँदी से अधिक गिलट के बने आभूषणों को सेफ़ में रखने के लिए प्रोनोट-महोदय लड़की को दे देते। कुञ्जी को सँभालकर लड़की सेफ़ के पास पहुँचती। कुञ्जी को घुमाने में अपना सारा शरीर उसे घुमा देना पड़ता था। खोल लेने पर फटी आँखों से सेफ़ की थाह लेने के लिए ही जैसे वह खड़ी रह जाती थी।

खरे रुपयों की झङ्कार के साथ लड़की की ओर संकेत करते हुए प्रोनोट-महोदय कहते—"प्लेग के दिनों में बेचारी को अनाथ छोड़, इसके सब घरवाले चले गये। कोई ऐसा न था जो इसे अपनी गोदी में उठाये। तब यह इतनी बड़ी नहीं थी। बड़ी होने का इसे अवसर ही नहीं मिला। मुसीबतों ने चारों ओर से इसे घेर लिया था। यह तो कहो कि संयोग से उस वक्त मैं पहुँच गया। नहीं तो कौन जानता है, इस फूल-सी बच्ची को कहाँ-कहाँ की ठोकरें खानी पड़तीं!"

सेफ़ का आकार-प्रकार इतना बड़ा था कि बस्ती के सारे गहने आजाने पर भी वह सूनी ही दिखाई पड़ती। जो थोड़े-बहुत गहने थे भी, वे उसमें रक्खे बड़े अटपटे मालूम होते थे। उन्हें देखकर कभी-कभी लड़की के जी में होता था, उठाकर पहन ले। पर उन्हें छूने का साहस नहीं होता था। प्रोनोट-महोदय का भी डर था, सेफ़ के सूनेपन से भी वह घबरा

उठती थी। सेफ़ को खोलने का आदेश मिलने के सास-साथ एक कँप-कँपी-सी उसके बदन में फैल जाती थी। कभी-कभी प्रोनोट-महोदय के आदेश को सुनकर भी जैसे वह नहीं सुनती थी। अपनी आवाज़ को उत्तरोत्तर तेज़ करते हुए अपने आदेश को कई बार उन्हें दोहराना पड़ता था। चौंककर फिर वह कुञ्जी सँभालती, सेफ़ को खोलने के लिए चल देती।

एम्मा कमरे में खड़ी थी। कभी वह इस लड़की को देखती थी, कभी सेफ़ को, कभी प्रोनोट-महोदय को। दृष्टि ही उसकी घूम रही थी, बदन स्थिर था। प्रोनोट-महोदय लड़की को आदेश दे रहे थे—"रजिस्टर नम्बर तीन निकालकर लाओ। जाओ, जल्दी करो!"

आदेश के साथ-साथ प्रोनोट-महोदय की दृष्टि भी घूम गई। देखा, एम्मा खड़ी है। बोले—"ओह, आप हैं! आइए, बैठिए!"

कुछ देर ठहरकर फिर उसने कहा—"कहिए, क्या काम है?"

एम्मा ने एक पीला-सा काग़ज़ निकालकर सामने रख दिया। प्रोनोट-महोदय ने उसे अपने हाथ में उठाया नहीं। उसकी ओर देखे बिना ही कहने लगे—"क्या करूँ मैं इसका? चश्मा इस समय मेरे पास नहीं है। आप ही पढ़कर बता दीजिए!"

एम्मा को बड़ा बुरा लगा। झुँझलाहट ने उसके स्वर को तीखा कर दिया था। बोली—"मुझे ही बताना होता तो मैं आपके पास क्यों आती? मैं जानना चाहती हूँ, आप क्यों मुझे परेशान करने पर तुले हैं?"

"कभी मैंने आपको परेशान नहीं किया"—प्रोनोट-महोदय ने कहा—"जब भी आपने चाहा है, मैंने आपको मदद की है। यह देखिए......।"

यह कहकर प्रोनोट-महोदय इधर-उधर देखने लगे। फिर लड़की की ओर देखकर कहा—"रजिस्टर नम्बर तीन कहाँ है ?"

लड़की सेफ़ खोल चुकी थी। गहनों के साथ-साथ रजिस्टर भी उसी में बन्द रहते थे। एक दो, तीन—लड़की ने गिना और एक भारी-सा रजिस्टर प्रोनोट-महोदय के सामने लाकर रख दिया।

रजिस्टर के पन्ने उन्होंने पलटने शुरू किये। उसके भारी-रूप को देखकर एम्मा चौंक उठी। लेकिन तीन चौथाई से अधिक पन्ने उसके कोरे थे। गिने-चुने नाम रजिस्टर में दर्ज थे। प्रत्येक नाम के बाद क़रीब सौ पन्ने कोरे छोड़े गये थे। हिसाब की कमी हो सकती थी, जगह की नहीं। थोड़ी देर बाद एम्मावाला पन्ना निकालकर पढ़ने लगे—"तीन अगस्त को सौ, सत्रह जून को पचास, तेइस मार्च को छियालीस......।"

सूची अधूरी छोड़कर एम्मा के मुँह की ओर वह देखने लगे। फिर बोले—"बताइए, कब मैंने आपको परेशान किया है ? जो भी आपने चाहा है, मैंने दिया है।"

"मैं कब कहती हूँ कि आपने नहीं दिया। लेकिन......।"

बीच में ही एम्मा की बात काटकर वह बोले—"आपकी 'लेकिन' को मैं नहीं जानता। सच्चे हृदय से मैंने आपको मदद दी है। आप नहीं जानतीं, आजकल का ज़माना कितना बुरा है। कोई किसी के पास नहीं फटकता !"

"तो इस निमंत्रण के लिए मुझे आपका कृतज्ञ होना चाहिए, यही कहना चाहते हैं न आप ?" सम्मन के काग़ज़ को प्रोनोट-महोदय की आँखों के सामने करते हुए एम्मा ने कहा।

"यह मैं कुछ नहीं जानता"—प्रोनोट-महोदय बोले—"यह वकीलों की बात है। मैं वकील नहीं हूँ।"

"वकील नहीं हैं!"—एम्मा के ओठों में बल पड़ा—"लेकिन वकीलों को इस भारी-भरकम सेफ़ में जगह देनेवाले तो हैं!"

"और नहीं तो क्या मैं अपने को इस सेफ़ में बन्द करूँगा?"—प्रोनोट-महोदय का स्वर ऊँचा चढ़ चला। उठकर कमरे में वह टहलने लगे। देखा, लड़की सेफ़ के पास खड़ी है। उसे लक्ष्यकर कहने लगे—"खड़ी क्या देख रही है? बन्द कर इसे। इतनी बार कहा, सेफ़ को कभी खुला न छोड़ा कर। लेकिन इसके दिमाग़ में कोई बात जमती ही नहीं!"

फिर एम्मा की ओर मुँह कर बोला—"जाइए आप, किसी वकील के पास जाइए! मैं कुछ नहीं जानता!"

"आपका वकील आपके पास ही रहे"—एम्मा ने कहा—"मैं कभी किसी वकील के पास नहीं जाऊँगी।"

कुछ देर ठहरकर एम्मा ने फिर कहा—"यही आपका अन्तिम निश्चय है? समझते हैं, रुपया वसूल करने का एक यही तरीक़ा रह गया है?"

"कह दिया मैंने, वकील के पास आप जाइए! वह आपको अच्छी सलाह देगा।"

"लेकिन रुपया आपको वसूल करना है—मुझसे ही वसूल करना है।"

"हाँ, हाँ, रुपया वसूल करना है। एक-एक पाई वसूल करना है—एक...एक...।"

प्रोनोट-महोदय की बँधी हुई मुट्ठी का साथ छोड़कर एक अँगुली

हवा में उठ गई थी। अकेली उँगली को उठा हुआ छोड़कर एम्मा कमरे से बाहर चली आई। बाहर आने पर एम्मा के हाथ की पाँचों उँगलियाँ उठ गईं। एक, दो, तीन, चार—मन-ही-मन एम्मा ने कुछ हिसाब लगाने का प्रयत्न किया। लेकिन हिसाब लग नहीं सका। गिनती-गिनना भी जैसे वह भूल गई थी। चार के बाद अँगूठा जैसे शून्य में खो जाता था। हिर-फिर कर अनामिका के सहारे गिनती को आगे बढ़ाया जा सकता है, चार के बाद इसका भी उसे ध्यान नहीं रहा। गिनती आकर अटकती थी नम्बर तीन पर, भारी-भरकम रजिस्टर सामने आ खड़ा होता था। चार तक पहुँचते-पहुँचते कुछ भी बाक़ी नहीं रहता था। हिसाब की उलझन में अपने को उलझाये एम्मा चली जा रही थी।

(३६)

लियोन, बुलनर, चार्ल्स—रजिस्टर नम्बर तीन के साथ एम्मा के जीवन की यह त्रयी भी सामने आगई। तीनों को एक क्रम देकर समझने का प्रयत्न वह करने लगी। चार्ल्स को पहले रखती थी, लियोन को मध्य में और बुलनर को बाद में। लेकिन बात कुछ बनती नहीं थी। इस क्रम को दूसरी तरह से पलटकर देखना उसने शुरू किया। उलझन में फिर भी कोई कमी नहीं आई। होते-होते उसे कुछ भी ध्यान नहीं रहा—क्रम व्यतिक्रम बनकर सामने आने लगा। द्रुतगति से, बिना किसी क्रम के, तीनों सामने आते थे। एम्मा न उन्हें कोई क्रम दे पा रही थी, न उनके उलझे हुए अस्पष्ट आकार को ही स्पष्ट कर पा रही थी।

कुछ भी एम्मा की समझ में नहीं आ रहा था। लियोन, बुलनर और चार्ल्स—ये तीनों ही नहीं, चारों ओर के मकान भी एक-दूसरे से उलझकर अस्पष्ट हो चले थे। स्पष्ट करना चाहने पर भी किसी चीज़ को स्पष्ट करके वह नहीं देख पा रही थी। बस्ती में नहीं, जैसे एक भूल-भुलैया में वह चल रही थी। प्रत्येक मोड़ पर लगता, बाहर निकलने का दरवाज़ा आगया है। आगे बढ़ने पर मालूम होता, दरवाज़ा नहीं, एक और अन्धी गली उसके सामने मुँह बाये खड़ी है।

भय से काँपकर एम्मा ने आँखें बन्द कर लीं। सूर्य भी अपनी लाली को समेटकर बादलों में छिप चला था। एक मलिन छाया ने सम्पूर्ण बस्ती को अपने मलिन आवरण में ले लिया था। एम्मा को अपनी आँखों के सामने एक चक्र-सा घूमता जान पड़ा। लियोन, चार्ल्स और बुलनर इस चक्र में एकाकार हो गये थे। धीरे-धीरे चक्र बराबर दूर होता हुआ विलीन हो गया। उसकी गूज से एम्मा का मस्तिष्क अब भी झनझना रहा था।

चक्र सामने की धरती को जैसे चीरता चला गया था। अगला क़दम एम्मा का उठा ही रह गया। कभी न समाप्त होनेवाली खाई बनकर उसका वर्तमान सामने आगया था। अतीत पीछे से धक्के दे रहा था; सारा साहस बटोरकर एम्मा ने आँखें खोलकर भविष्य की ओर देखा—दूकान से कहीं अधिक बड़ा साइनबोर्ड एम्मा को दिखाई पड़ा। दृढ़ क़दमों से अपने हृदय को सँभाले एम्मा ने दूकान में प्रवेश किया।

दूकान-मालिक इस समय कहीं गये हुए थे। उनका नौकर मौजूद था। एम्मा को दूकान में आते देखकर वह मन-ही-मन प्रसन्न हुआ। प्रसन्नता का कारण भी था। एम्मा की दासी से उसे 'विवाह और प्रेम'

नामक पुस्तक प्राप्त हुई थी। दूकान-मालिक की नज़र पड़ने के बाद पुस्तक उसके हाथों में न रह सकी। दूकान-मालिक के पास से पुस्तक फिर चार्ल्स के हाथों में पहुँच गई थी। एम्मा से मिलकर वह फिर उस पुस्तक को पाना चाहता था। उसे विश्वास था, एम्मा इनकार नहीं करेगी।

एम्मा के सामने आने पर उससे कुछ कहते नहीं बना। एकटक एम्मा के मुँह की ओर वह देखता रहा। एम्मा अलमारी में लगी शीशियों को देख रही थी। एक शीशी के लेबल पर उसकी आँखें टिक गईं—कार्बोलिक एसिड। नौकर से फिर उसने कहा—"इस शीशी को निकाल दो।"

नौकर कुछ सकपकाया। बोला—"दूकान-मालिक नहीं हैं। उनके आने पर मैं ख़ुद आपके यहाँ इसे पहुँचा दूँगा।"

"नहीं, किसी से कुछ कहने की ज़रूरत नहीं", एम्मा ने कहा, "लाओ, वह शीशी मुझे दो। किसी से कुछ नहीं कहना होगा।"

'विवाह और प्रेम' नामक पुस्तक उसकी आँखों में घूम रही थी। अब उसे पाने में कठिनाई नहीं होगी। शीशी उठाकर उसने एम्मा को दे दी।

एम्मा घर लौट आई। चार्ल्स घर में ही था। एम्मा के चेहरे पर ऐसा भाव उसने पहले कभी नहीं देखा था। एकाएक काँप उठा, पर कुछ पूछने का साहस नहीं हुआ। एम्मा अपने कमरे में चली गई।

कुछ देर तक चार्ल्स एक जगह खड़ा सोचता रहा। उससे रहा नहीं गया। एम्मा के कमरे में पहुँचा। देखा, दरवाज़े की ओर पीठ किये एम्मा मेज़ के सामने बैठी है। दबे पाँव उसने कमरे में प्रवेश किया।

एम्मा से उसके पाँव की दबी आहट छिपी न रही। घूमकर उसने देखा, चार्ल्स खड़ा है। अत्यधिक मृदु-कण्ठ से वह बोली—"चार्ल्स, इस समय तुम जाओ। फिर जब भी तुम आओगे, कभी मना नहीं करूँगी।"

चार्ल्स से विरोध करते नहीं बना। वह चला गया। एम्मा की वाणी के माधुर्य ने उसके हृदय की आशंका को दूर तो नहीं कर दिया था, लेकिन ऐसा भी नहीं था कि वह एक खटकनेवाला काँटा बनकर ही रह गई हो। आशङ्का के इस रूप को उससे दूर करते भी नहीं बनता था, खुले हृदय से उसे अपनाते भी हिचक होती थी। इस दुविधा को दूर करने के लिए एम्मा के आदेश की ही वह प्रतीक्षा करने लगा। अपने पर विश्वास करना उसने छोड़ दिया था—करता भी था तो अविश्वास का सूत्र पकड़कर। सही काम करने के लिए अनायास ही ग़लत पाँव उठाता था। एम्मा के सामने आने पर तो इसकी सम्भावना भी दुविधा में खोकर रह जाती थी।

आधी रात के क़रीब एम्मा के कमरे से कराहने की आवाज़ सुनकर वह चौंक उठा। ग़लत क़दमों को सही बनाता वह एम्मा के कमरे में पहुँचा। देखा—एम्मा डाक्टरी के हाथों से बाहर चली गई है। एक बार एम्मा ने घूमकर चार्ल्स की ओर देखा था—जैसे स्वप्न देख रही हो। फिर उसने मुँह फेर लिया। उसकी गरदन नीचे को झुक आई। आँखें खुली हुई थीं, ठोड़ी हृदय को स्पर्श करने का प्रयत्न कर रही थी।

चार्ल्स को एकाएक विश्वास नहीं हुआ। अविश्वास का सूत्र पकड़कर एम्मा के मृत शरीर में जीवन के लक्षण ढूँढ़ने लगा। कहीं कुछ नहीं था। एक चीख़ मारकर वह रह गया।

दूसरे दिन एम्मा के शव को अन्तिम क्रियाकर्म के लिए लेकर

चले। सारी बस्ती जैसे उदासी में खो गई थी। सभी कुछ जैसे स्तब्ध हो गया था। शव की नीरव यात्रा शुरू हुई। उसकी चिरनिद्रा भङ्ग न हो जाय, प्रत्येक ध्वनि को जैसे इस आशङ्का ने घेर लिया था। पाँव धरती पर आगे बढ़ने के लिए नहीं, मानो पगध्वनि को दाबने के लिए ही पड़ रहे थे। लकड़ी की टाँग ही केवल एक ऐसी थी जिसकी खटखट इस निस्तब्धता को भङ्ग कर रही थी। चार्ल्स के जीवन की चिरसंगिनी की तरह इस यात्रा पर भी वह उसका साथ दे रही थी।

(३७)

चार्ल्स के साथ-साथ एम्मा की मृत्यु ने एक व्यक्ति पर और गहरा आघात किया था। वह था दूकान-मालिक का नौकर। विवाह और प्रेम की मधुर कल्पना पर एम्मा की मृत्यु भीषण अट्टहास कर उठी थी। वह स्तब्ध रह गया। एम्मा की नहीं, यह जैसे उसी के जीवन की मौत थी। एम्मा की मृत्यु का सारा बोझ जैसे उसी पर आ पड़ा था।

दिन भर वह घर से बाहर नहीं निकला। किसी के सामने जाने का उसे साहस नहीं होता था। एक कोने में मुँह छिपाये पड़ा रहा। दिन का उजाला उच्चतम शिखर पर पहुँचकर ढल चला। रात हो आई। बस्ती में सन्नाटा छा गया। केवल दो व्यक्ति थे जो इस समय भी जाग रहे थे। एक चार्ल्स, दूसरा दूकान-मालिक का नौकर। चार्ल्स अपने कमरे में टहल रहा था, दूकान-मालिक का नौकर एम्मा की समाधि पर सिर रक्खे सुसक-सुसककर रो रहा था।

एम्मा की प्रत्येक वस्तु चार्ल्स के लिए अमर हो गई थी। उसकी स्मृति को दोनों हाथों से पकड़कर रखना चाहता था। जीवन के बीते

क्षण सजीव होकर सामने आने लगे। उसके पुराने नौकर को छुड़ाकर नई दासी को एम्मा ने रक्खा था। उसे पढ़ाने-लिखाने और घर का काम सिखाने में एम्मा इतना अधिक व्यस्त हो चली थी कि चार्ल्स का भी उसे ध्यान नहीं रहा। दासी के सामने आने पर चार्ल्स का जी भारी हो उठा। उसे साहस नहीं होता था कि किसी काम के लिए उससे कहे। चार्ल्स के सूने घर का वह एक अलङ्कार बन गई थी।

एम्मा के कपड़ों को देखकर दासी के जी में एक हूक-सी उठती थी। अकेले में उन्हें पहनकर आईने के सामने खड़ी हो जाती थी। कान चार्ल्स के पाँव की आहट पर लगे रहते थे। हृदय में एक खटका था जो उसे निरावरण कर देता था। कपड़े उसके नहीं, एम्मा के हैं। उन्हें वह नहीं पा सकती।

कभी-कभी, जैसे अस्तव्यस्त-सी होकर, एम्मा के कपड़े पहने चार्ल्स की आँखों के सामने वह घूम जाती थी। कुछ भी ऐसा नहीं है जिसे वह चार्ल्स से छिपाकर कर रही है, यही जैसे वह प्रत्यक्ष करना चाहती थी। चार्ल्स कुछ भी नहीं कहता था, दासी के हृदय की खटक जाती रही। एम्मा के कपड़ों का प्रयोग करते उसे अब हिचक नहीं होती थी।

एम्मा के कपड़ों को पाकर भी वह जीवन नहीं पा सकी थी। दूकान-मालिक के नौकर के पास वह जाती थी, कोशिश करने पर भी उसकी उदासी दूर नहीं हो पाती थी। दासी के नये आकर्षण की ओर आँखें उठाकर देखते ही वह काँप उठता था। उपेक्षा से मुँह फेरकर वह उसे अपने से दूर कर देता था।

चार्ल्स दासी को देखता था। एम्मा की झलक का उसे भ्रम होता था। यह भ्रम ही उसके सूने घर का जीवन था। एक दिन सुबह उठकर

उसने देखा—एम्मा के कपड़ों के साथ दासी कहीं भाग गई है। पहले उसे विश्वास नहीं हुआ। विश्वास हो जाने पर भी वह प्रतीक्षा करता रहा, लेकिन दासी लौटकर नहीं आई। एम्मा की स्मृति को भी जैसे वह अपने साथ ही लेती गई।

एम्मा की स्मृति को बनाये रखने का जितना ही अधिक चार्ल्स प्रयत्न करता, उतना ही अधिक वह उससे दूर होती जा रही थी। रोज़ ही वह एम्मा के स्वप्न देखता था। स्वप्न आते थे और चले जाते थे। एक ही तरह का प्रारम्भ, एक ही तरह का अन्त। एम्मा उसे दिखाई पड़ती थी, उसके पास वह जाता भी था, लेकिन उसका स्पर्श पाते ही वह विलीन हो जाती थी। जीवित प्रतिमा की तरह वह दिखाई पड़ी है, अपने हृदय में समाने के लिए वह आगे बढ़ा है, लेकिन उसके निकट पहुँचते ही मिट्टी के ढेर की तरह बिखरकर वह रह गई है।

चार्ल्स का जीवन अस्तव्यस्त हो चला था। बन्द कमरे में कई-कई दिन तक वह पड़ा रहता था। शुरू-शुरू में कुछ व्यक्ति उसके भारी जी को सँभालने के लिए आते थे। कुछ कौतुकवश आकर ही बन्द कमरे के झरोखों में से देख जाते थे कि क्या कर रहा है। कुछ को इतना कष्ट करने की भी ज़रूरत मालूम नहीं होती थी। दूर रहकर ही वे जान गये थे, अपने दुख को भुलाने के लिए चार्ल्स ने अफ़ीम खाना शुरू कर दिया है।

चार्ल्स ने अपने को सबसे दूर कर दिया था—एम्मा के निकट पहुँचने के लिए। आधी रात के समय कभी-कभी घर से बाहर निकलता था। एम्मा की समाधि की स्मृति को हृदय में फिर से जीवितकर लौट आता था। यह स्मृति ही उसके जीवन का आधार थी। इसी के सहारे सूने घर का अभिसार चल रहा था।

सूने घर का अभिसार उच्चतम शिखर पर पहुँचा एक दिन। रात के जागरण ने चार्ल्स के मस्तिष्क को झनझना दिया था। उसकी कुछ भी समझ में नहीं आ रहा था कि वह क्या करे। अन्त में हारकर वह बैठ गया। किसी आकस्मिक घटना की प्रतीक्षा में जैसे वह अपने को बिछा देना चाहता था। उसे आशा भी हो चली थी कि कुछ न कुछ होगा ज़रूर। अनायास उसके कान किसी की अप्रत्याशित आहट की ओर लग गये थे।

एकाएक उसे कुछ आवाज़ सुनाई पड़ी। आवाज़ को स्पष्ट करने का प्रयत्न उसने किया। आवाज़ स्पष्ट होकर सामने आई थी। मालूम हुआ, उसे कोई पुकार रहा है। चार्ल्स नीचे पहुँचा। देखा, पोस्टमैन खड़ा है।

चार्ल्स के हाथ में एक साथ ६ लिफ़ाफ़े उसने दिये। एम्मा के हाथ का पता उन पर लिखा हुआ था। लियोन के पास पत्र न पहुँच सके। 'डेड लेटर आफ़िस' से होकर वापस आ गये।

पत्रों को खोलकर देखने का साहस चार्ल्स को नहीं हुआ। स्वयं अपने को देखने का साहस भी उसे अब नहीं होता था। ऐसी जगह वह जाना चाहता था, जहाँ अपने को भी न देख सके। एम्मा के सूने घर में वह नहीं टिक सका। कब, किस वक्त वह एकाएक विलीन हो गया, यह किसी को पता नहीं चला।

एम्मा के घर की ओर अब कोई देखता भी नहीं था। बस्ती में रहते हुए भी वह जैसे बस्ती से बाहर हो गया था। सबसे अलग, सबसे दूर, वह अकेला खड़ा था। अपने से दूर रखने के लिए ही बस्ती ने जैसे उसे अपने बीच जगह दी थी। वह बस्ती के शून्य को व्यक्त करता था, बस्ती उसके शून्य को।

इसी प्रतिद्वन्द्विता में जीवन चल रहा था। एक दिन, एकाएक, इस सूने घर से किसी युवक को निकलते देख सब आश्चर्य में पड़ गये। कौतुक हुआ, कुछ ने सतर्कता का दामन पकड़ा, कुछ संवेदनशील हृदय का सूत्र पकड़कर सूने घर से युवक की रक्षा करने के लिए भी आगे बढ़े। कुछ इसी दुविधा में उलझकर रह गये, यह जीवन का प्रतीक है अथवा शून्य का ?

सूने घर ने फिर से बस्ती में प्रवेश किया।

(३८)

सूने घर में आने से पहले युवक बस्ती में रहता था। चार्ल्स की तरह वह भी अपने पिता का अकेला पुत्र था, मा भी उसी के सहारे अपनी आशाओं को टिकाये थी। मा-बाप को ही नहीं, स्वयं उसे भी अपने से बहुत-सी आशायें थीं। इन आशाओं को पूरा करने के लिए धूल में लोट-पोटकर वह बड़ा हुआ, पढ़-लिखकर उसने बस्ती में प्रवेश किया।

अनेक आशाओं में एक उसके जीवन की साध बन गई थी। अधिक नहीं, अपने जीवन में एक उपन्यास वह लिखना चाहता था। इसके पीछे उसने अपने मा-बाप को छोड़ दिया, विवाह की स्टेज आने पर प्रेमिका से विदा ली, किसी दफ़्तर में बैठकर क्लर्की करना भी उसने पसन्द नहीं किया। इन सब झंझटों में न फँसकर तटस्थ दृष्टि से उसने जीवन का अध्ययन करना शुरू किया।

मित्र हों चाहे अमित्र, निरीक्षक की दृष्टि से वह सबको देखता था। जहाँ भी जाता चुपचाप बैठा देखा करता। मित्रों की बातें सुनते-सुनते

मित्रों के बच्चों को वह देखने लगता। मित्रों की बहुत-सी कही-अनकही बातें उनके बच्चों के खेल में व्यक्त होकर सामने आतीं। प्रत्येक बात को मस्तिष्क में नोटकर अपने एकमात्र उपन्यास की सामग्री का सङ्कलन वह कर रहा था। इसी रूप में अपने जीवन की एकमात्र आशा को रचनात्मक रूप देने का उसका प्रयत्न चल रहा था।

काम जितना सहज मालूम होता है, वास्तव में उतना सहज था नहीं। सभी उससे सशङ्क और सतर्क रहने लगे। निरावरण करने के लिए ही जैसे वह सबके पास जाता था। ज़रा चूके नहीं कि उसने अपना काम किया। सभी उसे अपने से दूर रखना चाहने लगे। कुछ मित्रों ने उससे बोलना छोड़ दिया, कुछ उसे देखकर उपेक्षा से मुँह फेर लेते थे। प्रत्यक्ष विरोध करनेवालों की भी कमी नहीं थी। उसके रचनात्मक प्रयत्न इस विरोध की भाषा में विनाशात्मक बन गये थे। विनाशात्मक वह हो भी गया। एकमात्र उपन्यास की सामग्री का सङ्कलन स्थगितकर आलोचक वह बन गया। आलोचक के रूप में उसने अच्छी ख्याति भी प्राप्त की। अनेक आशङ्काओं और सतर्कताओं से घिरा आलोचक मित्र का जीवन उसने बिताना शुरू किया।

आलोचक मित्र के रूप में भी उसने उतना ही नाम पैदा कर लिया था, जितना कि एकमात्र उपन्यास के लिखने पर हो पाता। लेकिन इससे उसके जी को सन्तोष नहीं होता था। उसके आलोचक-रूप की ख्याति के साथ-साथ जैसे उसके जीवन का व्यंग्य ही बृहत् आकार धारण करता जा रहा था।

उसके जीवन के इस बृहत् व्यंग्य से ही सब परिचित थे। इसी रूप में वे उसे जानते-पहचानते थे। कोशिश करने पर भी वह उन्हें विश्वास

नहीं दिला सका था कि यह उसका अपना रूप नहीं है। ऐसा करने पर भी उसे विरोध का ही सामना करना पड़ा। इसके अतिरिक्त उसका और कोई रूप हो सकता है, यह सोचना भी जैसे उनके लिए असम्भव हो उठा था।

जीवन के इस व्यंग्य से भरी बस्ती को छोड़कर उसने सूने घर की शरण ली। यहाँ आकर आशङ्काओं ने जैसे साथ छोड़ दिया था। घर के किराये आदि के बारे में उसने बात-चीत की थी। विरोध का ज़रा भी सामना नहीं करना पड़ा। सूने घर में बसने की ज़मीन तैयार करने के लिए उसे आलोचना-प्रत्यालोचना का सहारा भी नहीं लेना पड़ा। कहा गया—जो जी में आये दे देना। कुछ भी न दिया जाय तो भी बात बिगड़ेगी नहीं।

सूने घर में उसने डेरा जमा दिया। इस घर से अपने पहले जीवन की तुलना वह करने लगा। आलोचक रूप की कटुता इस सूने घर में खो गई। अपने को कुछ हलका पाकर उसे कौतुक भी हुआ। घर से बाहर निकलकर वह खड़ा हो गया। यहाँ एक दूसरा ही कौतुक दिखाई पड़ा। आश्चर्य से सब उसे देख रहे थे। दो-चार ने आशङ्कित दृष्टि से भी उसे देखा। वह कुछ अचकचाया, फिर दूसरी कौतुकपूर्ण दृष्टियों का सहारा पाकर उसने अपने को सँभाल लिया। कौतुक की ही मात्रा अधिक थी, आशङ्का उसके सामने ठहर न सकी।

दो दिन बाद एक व्यक्ति साहस करके उसके पास आया। पूछने लगा—"तुम्हें इस घर में डर तो नहीं लगता?"

"डर कैसा—नहीं, मुझे तो कोई डर नहीं लगता," उसने कहा।

सुनकर आगन्तुक की आँखों में आश्चर्य घनीभूत हो उठा। उसने

फिर पूछा—"रात को कोई आवाज़ नहीं आती—किसी के कराहने की? किसी की छाया को भी तुमने घूमते नहीं देखा?"

युवक ने इन सबसे अपनी अजानकारी व्यक्त की। धीरे-धीरे उसके कानों में डाक्टर और उसकी पत्नी के इतिहास की फुटकर बातें पड़ने लगीं। वह उत्साहित हो उठा। उसके एकमात्र उपन्यास की सामग्री जैसे सामने आरही थी।

दूकान-मालिक से युवक का परिचय बढ़ा। डाक्टर और उसकी पत्नी का ज़िक्र आया। अनेक बातें उसे मालूम हुईं। दूकान-मालिक के पास डाक्टरी का पूरा इतिहास तैयार था। वह सब सुना गया।

सुनने के बाद युवक ने कहा—"निरीक्षण-शक्ति आपकी बहुत अच्छी है। कहने का ढंग भी आपका अपना ही है। इसे लिख डालें तो बड़ी अच्छी पुस्तक तैयार हो।"

"लिखना जानता तो मैं इस देहाती बस्ती में आकर बैठता!" दूकान-मालिक ने कहा—"मुझसे कुछ नहीं हो सकेगा।"

"आप कहें तो मैं लिख डालूँ?" युवक ने पूछा।

"हाँ, हाँ, लिख डालो," दूकान-मालिक ने उत्साहित होकर कहा। फिर कुछ क्षण ठहरकर वह बोला, "क्या लिखोगे?"

"एक उपन्यास," युवक ने कहा।

"नहीं, उपन्यास नहीं", दूकान-मालिक ने कहा—"इतिहास लिखो—डाक्टरी का इतिहास।"

युवक ने बहुत तरह से समझाया, लेकिन दूकान-मालिक उपन्यास के महत्त्व को हृदयङ्गम नहीं कर सका। हिर-फिरकर इतिहास की ही बात वह करता था। आख़िर यही तय पाया। सूने घर में बैठकर

डाक्टरी का इतिहास तैयार होने लगा। दूकान-मालिक बराबर साथ दे रहा था।

(३९)

डाक्टरी का इतिहास उपन्यास से भी आगे बढ़ चला। पाठकों ने उपन्यास के रूप में उसे लिया। डाक्टरी का आवरण ओढ़कर जैसे अभिसारिका सामने आ गई थी। अभिसारिका को अपनाते कुछ हिचक भी होती थी, डाक्टरी को अपनाने में वैसी कोई बाधा नहीं थी। निस्सङ्कोच प्रत्येक घर में डाक्टरी ने प्रवेश किया। अभिसारिका को देखकर घर के बुज़ुर्ग नाक-भौं सिकोड़ते थे। डाक्टरी को देखकर ख़ुश होते थे। लड़का इतिहास का अध्ययन कर रहा है!

अभिसारिका के प्रेमियों की संख्या रजिस्टर नम्बर तीन से आगे नहीं बढ़ पाई थी, अन्त में जीवन की यह त्रयी भी न जाने कहाँ विलीन हो गई थी, लेकिन डाक्टरी को अपने समर्थक पाठकों की कमी नहीं रही। देखते-देखते उनकी संख्या लाखों तक पहुँच गई। अभिसारिका के जीवन के रिक्त भाग को डाक्टरी ने पूरा कर दिया।

एक ओर डाक्टरी का प्रचार बढ़ रहा था, दूसरी ओर पर्दे के पीछे असन्तोष भी जमा होता जा रहा था। डाक्टरों के हृदय को इस पुस्तक ने मथ डाला था। उन्हें लगा, जैसे उनकी डाक्टरी को निरावरण करके पेश किया गया है। जिधर भी वे मुँह उठाकर चलते, डाक्टरी का इतिहास दिखाई पड़ता। डाक्टरों को चिढ़ाने के लिए ही कुछ मनचले पाठक रोगी बन चलते थे। सीरियस केस के उज्ज्वल भविष्य की आशा से उत्साहित डाक्टर महोदय रोगी के यहाँ पहुँचते। रोगशय्या पर रोग

और रोगी से ऊपर 'डाक्टरी का इतिहास' दिखाई पड़ता। फ़ीस और सीरियस केस के उज्ज्वल भविष्य की आशा के स्थान पर झुँझलाहट के साथ अभिसार करते लौट आते!

जगह-जगह डाक्टरों की गुप्त-अगुप्त सभायें होने लगीं। डाक्टरी के इतिहास के प्रति निन्दाओं के प्रस्ताव पास हुए। बड़े-बड़े डाक्टरों का एक डेप्युटेशन सरकार से मिलने चला। बहुत कोशिशों के बाद उसे सफलता भी मिल गई। पुस्तक ज़ब्त कर ली गई।

पाठकों की संख्या डाक्टरों से कहीं अधिक थी। जगह-जगह पाठकों की भी खुली सभायें होने लगीं। डाक्टरी का पक्ष लेकर डाक्टरों का बहिष्कार किया गया। दवाइयाँ खाने के स्थान पर रोगी डाक्टरी का इतिहास पढ़-पढ़कर रोग को दूर करने लगे। मार गहरी थी। डाक्टरों को मालूम हुआ, डाक्टरी के इतिहास में डाक्टरी एकदम नंगी नहीं है—कम-से-कम इतिहास का आवरण तो वह अपनाये है। उसका विरोध करने के बाद तो डाक्टर और डाक्टरी, दोनों, सचमुच में नंगे हुए जा रहे हैं।

पाठकों की जीत हुई। इतिहास पर से एक दिन चुपचाप ज़ब्ती हटा ली गई। साथ में हलकी-सी चेतावनी भी थी—एक के बाद दूसरा इतिहास न लिखा जाय।

बात इतने से ही समाप्त नहीं हो गई। पाठकों को अपनी जीत भूलते देर नहीं लगी, लेकिन डाक्टर अपनी हार को नहीं भूल सके थे। पाठकों को इतिहास में उलझाकर वे अपना ताना-बाना बुनते रहे। खोज करते-करते उन्होंने पता लगा लिया, सूने घर में बैठकर पुस्तक लिखी गई है। एक देहाती डाक्टर ने इसकी सामग्री प्रस्तुत की है,

किसी उत्साही युवक ने उसे लेकर इतिहास बना डाला है। पूरा विवरण मालूम होते ही डाक्टरों का एक डेप्युटेशन दूकान-मालिक के पास भी पहुँच गया—भविष्य के अवाञ्छनीय आक्रमणों से डाक्टरी की रक्षा करने के लिए। लेकिन दूकान-मालिक टस-से-मस नहीं हुआ। उसने बात करने से ही इनकार कर दिया।

इसके बाद दूसरा तरीक़ा अपनाया गया। व्यावसायिक प्रतिद्वन्द्विता में मात देने के लिए एक-एक करके तीन डाक्टर भेजे गये। लेकिन दूकान-मालिक के लम्बे-चौड़े साइनबोर्ड के सामने कोई जम न सका। चार्ल्स के बाद दूकान-मालिक ने ही जैसे डाक्टरी पर अपना आधिपत्य जमा लिया था। जमकर वह अपनी दूकान पर बैठ गया था—कोई उसे अपने स्थान से डिगाने में सफल न हो सका!

———